राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 पंजाब सरकार ने पांच पूर्व मंत्रियों को जारी किया नोटिस

डोनाल्ड ट्रंप से मिले यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की, रूस के साथ युद्ध रोकने..... 12

वर्ष : 15 | अंक : 167 | नई दिल्ली, रविवार, 29 सितम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन से कटकर तीन महिलाओं की दर्दनाक मौत

दरभंगा, बिहार के दरभंगा में ककरघट्टी शिशो के बीच बन रहे बाईपास रेलवे स्टेशन के रेल लाइन के पास तीन महिलाएं ट्रेन की चपेट में आ गईं। ट्रेन की चपेट में आने से गोपालपुर में इन तीन महिलाओं की ट्रेन से कटकर दर्दनाक मौत हो गई। तीनो महिलाएं एक ही परिवार की हैं. दरभंगा में ये नया बाईपास बनाया गया है। रेलवे स्टेशन में तीनों महिलाएं इसी बाईपास के पास शौच करने के लिए गई हुई थीं। इस दौरान स्पीडी ट्रायल कर लौट रहे ट्रेन की चपेट में तीनों महिलाएं आ गईं, जिससे तीनों की मौत की हो गई। घटना की सूचना मिलते ही राजकीय रेल पुलिस, आरपीएफ सहित कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। मृतक की पहचान बबीता देवी, ममता देवी और देवकी देवी के रूप में हुई है। तीनों महिलाएं आपस में दियादनी थीं। बता दें कि दरभंगा के ककरघट्टी शिशो के बीच नई रेल लाइन बिछी है और ये हादसा वहीं हुआ। इस दर्दनाक घटना को लेकर स्थानीय लोग काफी आक्रोशित हैं। लोगों का कहना है कि अगर घर में शौचालय होता तो ये तीनों महिला शौच के लिए घर से नहीं निकलतीं और आज इनकी मौत नहीं होती। गरीब परिवार के लोगों के यहां अभी भी शौचालय की व्यवस्था नहीं है, ऐसे में कौन इनकी मौत के लिए जिम्मेदार होगा ?

भारत के बिना बांग्लादेश की स्थिति नहीं सुधर सकती: त्रिपुरा के मुख्यमंत्री साहा

अगरतला, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने कहा है कि भारत के बिना बांग्लादेश की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। साहा ने शुक्रवार को विश्व पर्यटन दिवस पर एक सरकारी समारोह में कहा कि बांग्लादेश के लोगों को उनकी आजादी में भारत के योगदान को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा, बांग्लादेश के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। भारत के बिना बांग्लादेश की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। उन्हें समझना चाहिए कि हमारी सेना ने किस तरह के बलिदान दिए हैं और हमारे लोगों ने बांग्लादेश की आजादी के लिए कितनी मदद की है। इसे नहीं भूला जाना चाहिए। साहा ने कहा, मैं उनसे बार-बार कहूंगा कि याद रखिए, त्रिपुरा के लोगों ने आपकी आजादी में किस तरह मदद की थी। हमने हर संभव मदद की बांग्लादेश में जिस तरह के हालात हैं, वैसी स्थिति ज्यादा समय तक चल नहीं सकती।

राष्ट्रपति ने युवा कानूनी पेशेवरों से परिवर्तनकावाहकबननेकाआग्रहकिया

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि एक गरीब व्यक्ति को न्याय तक उतनी ही पहुंच नहीं मिलती जितनी एक अमीर व्यक्ति को मिलती है। इस अनुचित स्थिति को बदलना होगा। उन्होंने युवा कानूनी पेशेवरों से परिवर्तन का वाहक बनने का आग्रह किया। राष्ट्रपति शनिवार को हैदराबाद में नालसार विधि विश्वविद्यालय के 21वें दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि संविधान में हमारे स्वतंत्रता संग्राम के आदर्श जैसे न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व समाहित हैं। प्रस्तावना और मौलिक अधिकारों में निहित समानता का आदर्श न्याय प्रदान करने से संबंधित राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों में भी अभिव्यक्त होता है। निर्देशक सिद्धांतों में समान न्याय और निःशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। यह राज्य को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार बनाता है कि आर्थिक या अन्य अक्षमताओं के कारण किसी भी नागरिक को न्याय प्राप्त करने के अवसरों से वंचित न किया जाए। राष्ट्रपति ने छात्रों से कहा कि अधिवक्ताओं के रूप में उनका कर्तव्य होगा कि वे अपने मुवक्किलों के हितों का ख्याल रखने के अलावा न्याय देने में न्यायालय की सहायता करें। उन्होंने कहा कि कानूनी पेशेवर के रूप में वे जो भी भूमिका चुनें, उन्हें हमेशा ईमानदारी और साहस के मूल्यों पर टिके रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि सत्ता के सामने सच बोलना उन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाता है। राष्ट्रपति को यह जानकर खुशी हुई कि नालसर ने कई क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाई है। उन्होंने दिव्यांगता, न्याय तक पहुंच, जेल और किशोर न्याय तथा कानूनी सहायता से संबंधित मुद्दों की देखभाल करने में नालसर के प्रयासों की सराहना की। उन्हें यह जानकर भी खुशी हुई कि नालसर ने एक पशु कानून केंद्र की स्थापना की है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को उम्मीद है कि पशु-पक्षी, पेड़ और जल-निकायों की रक्षा मानवता की भलाई के लिए आवश्यक है और नालसर का पशु कानून केंद्र उस दिशा में एक अच्छा कदम है। राष्ट्रपति ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा को बढ़ावा देने में समाज का हर वर्ग हितधारक है। उन्होंने एनएएलएसएआर से, इसके पूर्व छात्रों सहित सभी हितधारकों का समर्थन प्राप्त करने और महिला अधिवक्ताओं और कानून की छात्राओं का एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क स्थापित करने में मदद करने का आग्रह किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह नेटवर्क महिलाओं के खिलाफ अत्याचारों को रोकने और अत्याचारों के ऐसे मामलों से निपटने के लिए ठोस प्रयास करने के लिए जनादेश के साथ काम करेगा।

प्रधानमंत्री ने जम्मू में चुनावी रैली को किया संबोधित, विपक्ष पर साधा निशाना

यह नया भारत है, दुश्मन को घर में घुसकर मारता है : मोदी

जम्मू, एजेंसी

जम्मू। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को जम्मू में एमए स्टेडियम में चुनावी रैली को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि ये चुनाव जम्मू-कश्मीर का भविष्य चुनने के लिए है। पीएम मोदी ने चुनावी रैली को संबोधित करते हुए शुरूआत में कहा कि आज शहीद वीर सरदार भगत सिंह की जन्म जयंती भी है। देश के करोड़ों युवाओं की प्रेरणा, भगत सिंह को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि आज की कांग्रेस पूरी तरह अर्बन नक्सलियों के कब्जे में है। जब विदेशों से घुसपैठिए यहां आते हैं, तो कांग्रेस को अच्छा लगता है। उनमें इनको अपना वोट बैंक नजर आता है। मगर अपने ही लोगों की पीड़ा पर ये उनका मजाक उड़ाते हैं। दशकों से कांग्रेस, एनसी और पीडीपी पार्टियों ने अपने नेताओं और परिवारों के हितों को प्राथमिकता दी है, जबकि जम्मू-कश्मीर के लोगों को बहुत कष्ट सहना पड़ा है। कांग्रेस पार्टी अपनी दोषपूर्ण नीतियों, उदासीनता और उपेक्षा के माध्यम से हमारी पीढ़ियों के पतन और शोषण के लिए महत्वपूर्ण रूप से जिम्मेदार है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए भाजपा की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ, हम अपने लोगों के साथ हुए अन्याय को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। पीएम मोदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस-नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी, ये संविधान के दुश्मन हैं। इन्होंने संविधान की स्पिरिट का गला घोंटा है। यहीं जम्मू में कई-कई पीढ़ियों से यहां रह रहे अनेक परिवारों को वोट देने तक का हक नहीं था। उन्हें कांग्रेस, एनसी और पीडीपी ने इस हक से वंचित किया था। आज जम्मू-कश्मीर में आ रहे बदलाव से कांग्रेस-एनसी और पीडीपी वाले भड़के हुए हैं। इन्हें आपका विकास पसंद नहीं है। ये लोग कह रहे हैं कि उनकी सरकार बनी, तो फिर वो पुराना सिस्टम लाएंगे। ये फिर वो भेदभाव वाला निजाम लाएंगे, जिसका सबसे बड़ा शिकार हमारा जम्मू रहा है। पीएम मोदी ने आगे कहा कि आज 28 सितंबर है। वर्ष 2016 में आज की रात सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी। भारत ने दुनिया को बता दिया था कि ये नया भारत है, ये घर में घुसकर मारता है। आतंक के आकाओं को पता है कि अगर कुछ भी हिमाकत की, तो मोदी पाताल में भी उन्हें खोज निकालेगा। कांग्रेस ने कभी भी हमारे बहादुर सैनिकों के बलिदान का सम्मान नहीं किया।

जम्मू-कश्मीर में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनेगी : मोदी

जम्मू, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में ऐतिहासिक चुनाव हो रहे हैं, क्योंकि पहली बार केंद्र शासित प्रदेश में पूर्ण बहुमत वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार बनेगी। श्री मोदी ने यह भी कहा कि सितंबर 2016 में हुई सर्जिकल स्ट्राइक ने भारत के दुश्मनों को हिलाकर रख दिया है और अब कोई भी देश के खिलाफ साजिश रचने की हिम्मत नहीं करेगा, क्योंकि ह्यआतंकवाद के आकाओं को पता है कि मोदी उन्हें कहीं भी छुपकर ढूंढ निकालेंगे। प्रधानमंत्री ने जम्मू में विशाल चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि यह उनकी आखिरी चुनावी रैली है, क्योंकि एक अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर में चुनाव खत्म हो जाएंगे। उन्होंने कहा, आज 28 सितंबर है, पाकिस्तान के खिलाफ ऐतिहासिक सर्जिकल स्ट्राइक की सालगिरह। इसी दिन हमने दुश्मनों को उनके घरों में घुसकर मारा और दुनिया को दिखाया कि यह नया भारत है, जिसे अब और हल्के में नहीं लिया जा सकता।ह्व उन्होंने कहा कि 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक ने आतंकवाद के आकाओं को सबसे बड़ा सबक सिखाया है क्योंकि अब कोई भी भारत की संप्रभुता को छूने की हिम्मत नहीं कर सकता। प्रधानमंत्री ने कहा, वर्ष 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक ने आतंकवाद के समर्थकों को सबक सिखाया है कि भारत की संप्रभुता को छूने की हिम्मत कोई नहीं करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर कोई भारत के खिलाफ कोई हरकत करता है, तो मोदी सरकार उन्हें कहीं भी छुप जाने की जगह नहीं देगी और उन्हें सबक सिखाएगी। इस बयान में प्रधानमंत्री ने यह भी याद दिलाया कि वर्ष 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक ने दुनिया को दिखाया है कि भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा करने में सक्षम है और अपने दुश्मनों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर सकता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इतनी गिर गई है कि उसने सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगा। उन्होंने पूछा, क्या वे वोट के लायक हैं? उन्होंने कहा कि आज स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह की जयंती भी है। उन्होंने कहा, आज मैं इस शहीद नायक को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री मोदी ने कहा कि पिछले कुछ हफ्तों के दौरान उन्होंने चुनावी रैलियों को संबोधित करने के लिए जम्मू-कश्मीर के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की। उन्होंने कहा, मैं जहां भी गया, मैंने लोगों में भाजपा के प्रति बहुत उत्साह देखा। जम्मू-कश्मीर के लोग कांग्रेस, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) और नेशनल कांफ्रेंस (नेकां) से थक चुके हैं। श्री मोदी ने कहा कि लोग नहीं चाहते कि पुराने बुरे दिन लौटें, जब भ्रष्टाचार अपने चरम पर था, पिछले दरवाजे से नियुक्तियां की जा रही थीं। उन्होंने कहा, जम्मू-कश्मीर के लोग नहीं चाहते कि आतंकवाद, अलगाववाद और खून-खराबा वापस आए। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब जम्मू-कश्मीर के लोग शांति चाहते हैं। उन्होंने कहा, वे भाजपा के शासन के माध्यम से बेहतर भविष्य चाहते हैं। पिछले दो चरणों में लोगों का मूड बताता है कि उन्होंने भाजपा के पक्ष में मतदान किया है। श्री मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनेगी। उन्होंने कहा, यह ऐतिहासिक फैसला होगा। यह चुनाव ऐतिहासिक फैसला देगा। पहली बार जम्मू के लोगों को अपनी पसंद की सरकार मिलेगी। श्री मोदी ने कहा, यह मंदिरों का शहर है, आपको यह आखिरी मौका नहीं गंवाना चाहिए। भाजपा सरकार आपकी चिंताओं को दूर करेगी। उन्होंने कहा कि जम्मू में असमानता और अन्याय था जिसे केवल श्री मोदी ही दूर कर सकते हैं। कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधते हुए श्री मोदी ने कहा कि जम्मू का बड़ा हिस्सा केवल इस पार्टी की गलतियों के कारण ही कट गया। उन्होंने कहा, एक समय था जब यहां गोलियां और गोले आम बात थी। हमने गोली का जवाब तोप के गोले से दिया और इससे संदेश गया। कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए श्री मोदी ने कहा कि इस पार्टी ने शहीद सैनिकों का अपमान किया और कभी भी वन रैंक वन पेंशन की अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा,देश की बागडोर संभालने के तुरंत बाद मैंने सैनिकों और उनके परिवारों के लिए वन रैंक वन पेंशन की घोषणा की। उन्होंने कहा कि हाल ही में सैनिकों के परिवारों को और अधिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए इस योजना को बढ़ाया गया है। आज की कांग्रेस शहरी नक्सलियों के नियंत्रण में है। प्रधानमंत्री ने कहा, जब विदेशी घुसपैठिए भारत आते हैं, तो कांग्रेस को अच्छा लगता है।

अरविंद केजरीवाल के लिए तलाश किया जा रहा नया घर, जल्द छोड़ देंगे सीएम आवास

नई दिल्ली, एजेंसी

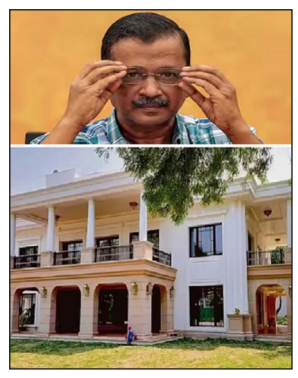

आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के लिए नये घर की तलाश जोर-शोर से हो रही है। माना जा रहा है कि श्राद्ध खत्म होते ही और नवरात्रि के शुरूआत में वह सीएम आवास खाली करके अपने दूसरे घर में शिफ्ट हो जाएंगे। आतिशी के दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने के बाद से घर की तलाश की कवायद और भी ज्यादा तेज हो गई है। अरविंद केजरीवाल के लिए उनकी विधानसभा नई दिल्ली के अंतर्गत ही नया आवास तलाश किया जा रहा है। अरविंद केजरीवाल से पार्टी के कई विधायक, पार्षद, कार्यकर्ता और आम नागरिक अपनी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उन्हें घर की पेशकश कर रहे हैं। कोर्ट के आदेश के बाद जेल से बाहर आए अरविंद केजरीवाल ने 17 सितंबर को दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। तभी से यह चर्चा शुरू हो गई थी कि जल्द ही अरविंद केजरीवाल अपना सरकारी आवास छोड़ देंगे। फिलहाल, वह कब तक अपना सरकारी आवास खाली करेंगे इसकी कोई तारीख सामने नहीं आई है। लेकिन कयास लगाए जा रहे हैं कि वह नवरात्र में ही दूसरे घर में शिफ्ट हो जाएंगे। गौरतलब है कि साल 2013 में सीएम बनने के बाद वे तिलक लेन स्थित घर में रहे। फरवरी 2015 के विधानसभा चुनाव में जीत के बाद वे सिविल लाइंस इलाके में 6 फ्लैग स्टाफ रोड स्थित आवास में रहे। अरविंद केजरीवाल के आवास के लिए केंद्र सरकार से मांग की गई थी। हालांकि, अभी तक यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि केंद्र की तरफ से उन्हें कोई घर मिलेगा या नहीं। फिर भी उनके घर की तलाश तेजी से की जा रही है। यह भी कयास लगाया जा रहा है कि वह जल्द ही लुटियन जोन के किसी इलाके में शिफ्ट हो सकते हैं।

भाजपा के झारखंड चुनाव घोषणापत्र के मुख्य बिंदु तीन अक्टूबर से जारी किए जाएंगे: हिमंत

रांची, एजेंसी

असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) झारखंड में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अपने घोषणापत्र के मुख्य बिंदुओं को तीन अक्टूबर से जारी करना शुरू करेगी। झारखंड की 81 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव इस वर्ष के अंत में होने हैं और तारीखों की घोषणा अगले महीने किए जाने की संभावना है। शर्मा ने पार्टी की चुनाव संबंधी तैयारियों की समीक्षा करने के बाद शुक्रवार को संवाददाताओं से कहा, हम अपने घोषणापत्र के मुख्य बिंदुओं को तीन अक्टूबर से जारी करना शुरू करेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो अक्टूबर को हजारीबाग में भाजपा की परिवर्तन यात्रा की समापन रैली को संबोधित करेंगे।केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा शुरू की गई भाजपा की ह्यपरिवर्तन यात्राह्ल का लक्ष्य दो अक्टूबर तक राज्य के 24 जिलों के 81 विधानसभा क्षेत्रों में 5,400 किलोमीटर की दूरी तय करना है।

जम्मू-कश्मीर: कुलगाम में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में तीन जवान और एक पुलिसकर्मी घायल

नई दिल्ली, एजेंसी

श्रीनगर, 28 सितंबर (वेब वार्ता)। कुलगाम जिले में शनिवार को सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में तीन जवान और जम्मू-कश्मीर पुलिस का एक अधिकारी घायल हो गया। अधिकारियों ने बताया कि जिले के आदिगाम गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी। इसके बाद सेना, पुलिस और सीआरपीएफ समेत सुरक्षाबलों ने इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। अधिकारियों के अनुसार, सुरक्षाबलों ने आतंकियों को घेर लिया। जब आतंकियों ने खुद को घिरा देखा तो उन्होंने सुरक्षाबलों पर फायरिंग शुरू कर दी। गोली लगने से सेना के तीन जवान और जम्मू-कश्मीर पुलिस का एक अधिकारी घायल हो गया। सुरक्षाबलों ने यह सुनिश्चित करने के लिए सभी भागने के रास्ते बंद कर दिए हैं कि छिपे हुए आतंकवादी भागने में असमर्थ हों। मुठभेड़ स्थल पर पहले ही अतिरिक्त बल पहुंच चुके हैं। घायल सुरक्षाकर्मियों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है। माना जा रहा है कि ये आतंकवादी कट्टर विदेशी भाड़े के आतंकवादी हैं। इन आतंकवादियों ने पिछले तीन-चार महीनों के दौरान जम्मू डिवीजन के डोडा, कठुआ, राजौरी, पुंछ और रियासी जिलों में सेना, स्थानीय पुलिस और नागरिकों पर हमला कर उन्हें मार गिराया है। पहाड़ी इलाकों में सेना और अन्य लोगों पर घात लगाकर हमला करने के बाद आतंकवादी इन पहाड़ी जिलों के घने जंगलों और वन क्षेत्रों में भाग जाते हैं। आतंकवादियों के हमलों को नाकाम करने के लिए, जम्मू डिवीजन के ऊंचे पर्वतीय इलाकों और घने जंगलों में 4,000 से अधिक पैरा कमांडो और पर्वतीय युद्ध में प्रशिक्षित जवानों को तैनात किया गया था। सुरक्षाबलों की इस रणनीति के बाद, इन जिलों में आतंकवादी हमलों में भारी कमी आई है।

हरियाणा को भाजपा ने बर्बाद कर दिया : राहुल

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)पर शनिवार को जमकर हमला करते हुए कहा कि उसने पिछले एक दशक के दौरान हरियाणा की समृद्धि को ध्वस्त करके उसे बर्बाद कर दिया है। श्री गांधी ने ह्यएक्सह्ल पर कहा, ₹भाजपा ने एक दशक में हरियाणा से उसकी समृद्धि, उसके सपने और शक्ति छीन ली। अग्निवीर से देशभक्त युवाओं की आकांक्षाएं छीन ली, बेरोजगारी से परिवारों की हंसी छीन ली और महंगाई से महिलाओं की आत्मनिर्भरता। काले कानून लाकर किसानों का हक तक छीन लेने का प्रयास किया तो नोटबंदी और गलत जीएसटी से लाखों छोटे व्यापारियों का मुनाफा छीन लिया। उन्होंने कहा, ₹अपने 'मित्रों' को फायदा पहुंचाने के लिए हरियाणा का आत्मसम्मान तक छीन लिया। कांग्रेस की आने वाली सरकार 'दर्द के दशक' का अंत करेगी-हर हरियाणा वासी की उम्मीदों, आकांक्षाओं और ख्वाबों को पूरा करना हमारा संकल्प है। श्री गांधी ने कांग्रेस सरकार आने पर जो गारंटी देने का वादा किया है। उन्होंने कहा कहा, ₹दो लाख पक्की नौकरियां, नशा मुक्त हरियाणा, 25 लाख तक का मुफ्त इलाज, महिलाओं को 2,000 रुपए हर माह, गैस सिलेंडर 500 में,गरीबों को 100 गज का प्लॉट, 3.5 लाख की लागत से दो कमरों का मकान, बुजुर्ग, विधवा एवं दिव्यांग पेंशन 6,000 रुपये, पुरानी पेंशन की बहाली, 300 यूनिट मुफ्त बिजली,किसानों को एमएसपी की गारंटी, तत्काल फसल मुआवजा, जाति जनगणना, क्रीमी लेयर की सीमा 10 लाख रुपये करने के साथ ही बचत से लेकर सेहत, अधिकारों की रक्षा से सामाजिक सुरक्षा, रोजगार की बहार, हंसता खेलता हर परिवार-ये है कांग्रेस की गारंटी।

शुभारंभ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने की सदस्यता अभियान की समीक्षा.....

खेल को बढ़ावा देने के लिए बजट में की गई तीन गुना बढ़ोतरी : नड्डा

पटना, एजेंसी

पटना। एक दिन के बिहार दौरे पर शनिवार को राजधानी पटना पहुंचे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने यहां पार्टी के प्रदेश कार्यालय में सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित पैरालंपिक खिलाड़ी सम्मान और सदस्यता अभियान समारोह के तहत पैरालंपिक खिलाड़ियों को सम्मानित किया। इस मौके पर 20 चर्चित खिलाड़ियों ने भाजपा की सदस्यता भी ग्रहण की। समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री नड्डा ने कहा कि एक समय था जब ओलंपिक को प्राथमिकता नहीं दी जाती थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए योजना बनाकर इसे आगे बढ़ाया। ओलंपिक ही नहीं पैरालंपिक को भी मुख्यधारा में लाने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में जाने से पहले और बाद में प्रधानमंत्री खुद खिलाड़ियों से मुलाकात करते हैं और उनके विचार जानते हैं तथा उन्हें प्रोत्साहित करने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि खेल को आगे बढ़ाने के लिए खेल के बजट में तीन गुना बढ़ोतरी की गई तथा खिलाड़ियों की हर तरीके से मदद करने और प्रशिक्षण देने का काम किया गया। किसी ने यह नहीं सोचा होगा कि गांव तक खेलों की व्यवस्था की जाएगी, लेकिन खेलो इंडिया के तहत कई खेलों को आगे बढ़ाने का काम किया गया। पैरालंपिक खिलाड़ियों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा,आप आगे बढ़ो, रुकने की कोई जरूरत नहीं है। हम सभी आपके साथ खड़े हैं और मजबूती से खड़े हैं। इस सम्मान समारोह में पेरिस पैरालंपिक मेडल प्राप्त खिलाड़ी शैलेश कुमार और शरद कुमार, तथा अंतर्राष्ट्रीय मेडल प्राप्त खिलाड़ी गजेंद्र कुमार, अमिसा प्रकाश, सिंटू कुमार, मोहम्मद शमीम, मानसी, ऑब्जर्वर शिवाजी कुमार सहित 108 खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। इससे पहले आज सुबह पटना हवाई अड्डे पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा सहित पार्टी के कई नेताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का भव्य स्वागत किया। भाजपा ने पूरे शहर को पार्टी के झंडों, होर्डिंग एवं बैनर से पाट दिया है। जे पी नड्डा हवाई अड्डा से सीधे सचिवालय स्थित सप्तमूर्ति पहुंचे। वहां उन्होंने अमर शहीदों के स्मारक पर माल्यार्पण किया और उन्हें नमन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद वह सीधे भाजपा कार्यालय पहुंचे जहां उन्होंने भाजपा द्वारा पूरे देश में जारी सदस्यता अभियान के तहत बिहार प्रदेश में हुई प्रगति की समीक्षा की।

मणिपुर में हथियार और गोला-बारूद का बड़ा जखीरा बरामद

इम्फाल, एजेंसी। मणिपुर के तीन जिलों में सुरक्षाबलों ने हथियार और गोला-बारूद का बड़ा जखीरा बरामद किया है। पुलिस की ओर से शनिवार को जारी किए गए बयान में यह जानकारी दी गई। बयान में बताया गया कि मणिपुर पुलिस और असम राइफल्स की एक संयुक्त टीम ने कांगपोकपी जिले के लोइचिंग क्षेत्र से दो .303 राइफल, एक 9 एमएम पिस्तौल, मैगजीन, कारतूस, चार हथगोले, दो डेटोनेटर और एक देसी मोर्टार और एक इम्प्रोवाइज्ड मोर्टार जब्त किया है। मणिपुर पुलिस, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के संयुक्त दल ने चुराचांदपुर जिले के गोथोल गांव में एक अन्य तलाश अभियान के दौरान दो इम्प्रोवाइज्ड मोर्टार जब्त किए हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से पंपी के नाम से जाना जाता है। राज्य पुलिस और असम राइफल्स ने थौबल जिले के फैनोम पर्वतीय क्षेत्र से चार एचई-36 हथगोले, दो पंपी, तीन डेटोनेटर तथा एक-एक स्टन ग्रेनेड, स्टिंगर ग्रेनेड और आंसू गैस के गोले बरामद किए हैं। सुरक्षाबलों द्वारा इन इलाकों में शुक्रवार को चलाए गए तलाश अभियान के दौरान ये हथियार बरामद किए गए हैं। हालांकि, इस संबंध में अभी तक किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया है। मणिपुर में पिछले साल मई से मेइती और कुकी समुदाय के लोगों के बीच हिंसा में 200 से अधिक लोग मारे गए हैं और हजारों लोग बेघर हो गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

गोल्डन कार्ड बनाए जाने का किया स्वागत

ऋषिकेश, एजेंसी। उत्तराखंड माध्यमिक शिक्षक संघ ने अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए गोल्डन कार्ड बनाए जाने की व्यवस्था करने का स्वागत किया है। कहा कि सरकार ने शिक्षकों और कर्मचारियों को बड़ी राहत दी है। बृहस्पतिवार को आयोजित संघ की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र कुमार मिश्रा और प्रदेश महामंत्री जगमोहन सिंह रावत ने कहा कि अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक और कर्मचारी लंबे समय से इसकी मांग कर रहे थे। सरकार ने शिक्षकों को और कर्मचारियों को गोल्डन कार्ड की सुविधा से आच्छादित कर एक बड़ी सौगात देने का काम किया है। संघ के जिलाध्यक्ष महावीर सिंह मेहता ने कहा कि गोल्डन कार्ड योजना कर्मचारियों के लिए हितकारी योजना है। जिसका सर्वत्र स्वागत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इससे शिक्षकों को लाभ मिलेगा। माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश प्रवक्ता अश्वनी गुप्ता, जिला मंत्री अवधेश सेमवाल, मनमोहन मठपाल, रमेश बुटोला,आलोक जोशी, ओमप्रकाश काला आदि ने स्वागत किया है।

शासन को भेजा जाएगा साइकिल ट्रैक का प्रस्ताव: नगर आयुक्त

ऋषिकेश, एजेंसी। नगर निगम की ओर से स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत पर्यावरण और स्वास्थ्य संरक्षण के लिए साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली में पहाड़ी पेडलर्स देहरादून, ऋषिकेश साइकिल क्लब ब्लू राइडर्स के 20 से अधिक राइडर्स ने प्रतिभाग किया। बृहस्पतिवार को रैली का शुभारंभ पद्मश्री कल्याण सिंह रावत मैती ने किया। रैली इंद्रमणि बडोनी चौक से शुरू होकर श्यामपुर फाटक से बाजार होते हुए इंद्रमणि बडोनी चौक पर समाप्त हुई। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस पर आयोजित साइकिल रैली का उद्देश्य परिवहन के साधनों में साइकिल का अधिक उपयोग करते हुए पर्यावरण संरक्षण व स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना था। नगर आयुक्त शैलेंद्र सिंह नेगी ने कहा कि नगर निगम की ओर से साइकिल को बढ़ावा देने के लिए साइकिल ट्रैक का प्रस्ताव शासन को भेजा जाएगा। इसके साथ ही वॉल पेंटिंग व होर्डिंग के माध्यम से साइकिल के अधिक इस्तेमाल और साइकिलिस्ट के सम्मान के लिए प्रचार-प्रसार किया जाएगा। विद्यालयों में साइकिल के प्रयोग के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएगी। इस मौके पर सहायक नगर आयुक्त रमेश रावत, गुरविंदर सिंह, पहाड़ी पेडलर्स से गजेंद्र रमोला, अमित नौटियाल, ऋषिकेश साइकिल क्लब से ज्योति शर्मा, साहिल आदि मौजूद रहे।

उपनिरीक्षकों की शारीरिक भर्ती परीक्षा संपन्न

ऋषिकेश, एजेंसी। एसडीआरएफ मुख्यालय जौलीग्रांट में उपनिरीक्षकों के लिए दो सितंबर से शुरू की गई शारीरिक भर्ती परीक्षा बृहस्पतिवार को संपन्न हो गई। भर्ती परीक्षा में करीब 2862 परीक्षार्थी सफल हुए हैं। अब सफल परीक्षार्थी आयोग द्वारा तय तिथि और संबंधित केंद्रों पर लिखित परीक्षा में भाग लेंगे।जौलीग्रांट में दो से 26 सितंबर तक आयोजित उपनिरीक्षकों की शारीरिक भर्ती परीक्षा में रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, चमोली, पौड़ी, टिहरी और हरिद्वार जिले के परीक्षार्थी शामिल हुए थे। लगभग एक महीने तक चली शारीरिक भर्ती परीक्षा में छह जिलों के करीब 5646 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। जिसमें से 2862 परीक्षार्थी सफल और 2784 बाहर हो गए। वहीं शारीरिक परीक्षा के दौरान कुल 12 परीक्षार्थी चोटिल भी हुए। जौलीग्रांट में पहली बार उपनिरीक्षकों की सफल शारीरिक भर्ती परीक्षा आयोजित की गई है। इससे पहले जौलीग्रांट में पुलिस कांस्टेबलों को करीब नौ माह की ट्रेनिंग भी दी जा चुकी है। सेनानायक एसडीआरएफ अर्पण यदुवंशी ने कहा कि एसडीआरएफ जौलीग्रांट मुख्यालय रेस्क्यू के साथ ही पुलिस ट्रेनिंग और शारीरिक भर्ती परीक्षा के लिए भी मुख्य केंद्र बन गया है। जहां परीक्षार्थियों ने शांत और बेहतर वातावरण में परीक्षा दी है। अंतिम दिन कुल 85 परीक्षार्थी परीक्षा देने पहुंचे। जिसमें से कुल 26 परीक्षार्थी शारीरिक परीक्षा में सफल रहे।

ओवरहेड टैंक के लिए खोदा गया गड्ढा

बरसात का पानी भरने से लोगों की उड़ी नींद, डर से रातभर जागते रहे लोग

हल्द्वानी, एजेंसी। कृष्णा विहार में ओवरहेड टैंक बनाने के लिए खोदा गया गड्ढा दहशत का सबब बन गया। बारिश से गड्ढे में जलभराव होने से आसपास के करीब छह मकानों समेत ओवरहेड टैंक और पंपहाउस भी खतरे की जद में आ गया है। अनहोनी के डर से लोग घरों से बाहर निकल आए।

हल्द्वानी के छड़ायल स्थित कृष्णा विहार में ओवरहेड टैंक बनाने के लिए खोदा गया गड्ढा बृहस्पतिवार रात दहशत का सबब बन गया। रात हुई बारिश से गड्ढे में जलभराव होने से आसपास के करीब छह मकानों समेत ओवरहेड टैंक और पंपहाउस भी खतरे की जद में आ गया है। अनहोनी के डर से लोग घरों से बाहर निकल आए और रातभर खतरे की स्थिति का जायजा लेते रहे। शुक्रवार को मौके पर पहुंचे विभागीय अधिकारियों का स्थानीय लोगों ने घेराव किया और निर्माण कार्यों में लापरवाही बरतने पर आंदोलन की चेतावनी दी।

उत्तराखंड शहरी क्षेत्र विकास एजेंसी (यूयूएसडीए) की ओर से कृष्णा विहार में ओवरहेड टैंक के निर्माण के लिए करीब 900 वर्ग फीट के दायरे में बड़ा गड्ढा खोदा गया है। बृहस्पतिवार रात साढ़े 12 बजे से बारिश शुरु होने पर गड्ढे में जलभराव होने लगा। स्थानीय लोगों ने फोन से संपर्क कर एक दूसरे को खतरे से आगाह किया। भू-धंसाव के कारण रात तीन बजे बिजली का पोल भी गिर गया और संपर्क मार्ग भी क्षतिग्रस्त हो गया है।

प्रभावित लता मनराल ने बताया कि बारिश होने के कारण रात 12 बजे से मिट्टी गिरने लगी थी। इससे मेरे मकान को खतरा हो गया है। रात दो बजे से छाता ओढ़कर बाहर खड़े हुए हैं। स्थानीय मीना बनकोटी ने बताया कि खतरे के डर से सारी रात सो नहीं पाए। आस-पास के मकानों को खतरा हो गया है। बिजली का पोल गिरने पर सभी लोग घरों से बाहर निकल आए। स्थानीय हरीश चंद्र जोशी ने बताया कि गड्ढे के कारण ओवरहेड टैंक को खतरा हो गया है। टैंक के नीचे से मिट्टी लगातार गिर रही है। इससे जनहानि की आशंका है। टैंक की सुरक्षा प्राथमिक स्तर पर की जाए। मिट्टी गिर रही है और मकान की नींव दिखने लगी है।

आपदा के दौरान सुरक्षा उपायों व प्रभावी तकनीकों की दी जानकारी

पौड़ी, एजेंसी। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) व आपदा प्रबंधन पौड़ी की संयुक्त तत्वाधान में जिला कार्यालय सभागार में चल रहे रासायनिक, जैविक, रेडियोलॉजिकल और परमाणु आपदा के विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन हो गया है। इस दौरान एनडीआरएफ के प्रशिक्षकों ने जनपद के जिलास्तरीय अधिकारियों को उनके दायित्वों को लेकर किए जाने वाले कार्यों की जानकारी दी।

असिसटेंट कमांडेंट कर्मवीर सिंह भंडारी ने आपदाओं के दौरान आवश्यक सुरक्षा उपायों और प्रभावी बचाव तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने आपदा के बाद तत्कालिक स्ट्रेचर बनाना, लिफ्टिंग और मूविंग के तरीके, अग्निशामक यंत्र का उपयोग, सीबीआरएन उपकरणों जैसे रेस्पिरेटर, मास्क, लीक टेस्टर, ग्लबस, बूट्स के उपयोगों, केमिकल डिजास्टर के अंतर्गत हैजार्डस केमिकल, प्वाइजनस केमिकल लीथल डोज, केमिकल्स के स्थानांतरण के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सीबीआरएन उपकरणों जैसे रेस्पिरेटर, मास्क, लीक टेस्टर, ग्लबस, बूट्स के उपयोगों के बारे में बताया। आपदा प्रबंधन प्रणाली, प्राथमिक चिकित्सा और राहत एवं बचाव कार्यों को लेकर की जाने वाली व्यवस्थाओं और उन्होंने ऐसी आपदाओं में सेफ्टी ऑफिसर की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी बताया।

इस दौरान एनडीआरएफ की टीम द्वारा आपदा के समय रिस्पांस टाइम को कम से कम करने, आपदा घटित होने पर आवश्यक राहत एवं बचाव उपकरणों के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर त्वरित राहत बचाव के गुर सिखाए गए।

इस मौके पर एएसपी अनूप काला, पीडी डीआरडीए विवेक कुमार उपाध्याय, जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी करण सिंह रावत, जिला उद्यान अधिकारी राजेश तिवारी, तहसीलदार दीवान सिंह राणा, जिला पूर्ति अधिकारी अरुण वर्मा और खेल अधिकारी संदीप डुकलान आदि मौजूद रहे।

नैनीताल में फिर झमाझम बरसे मेघ, झील से निकासी शुरू; आधे घंटे की बारिश में नाले उफनाए

नैनीताल, एजेंसी। मानसून सरोवर नगरी में दोपहर में बीती रात के साथ ही दिन में झमाझम पानी बरसा। नाले उफान पर आ गए और स्कूली बच्चों की फजीहत खूब हुई। नगर में सुबह हल्के बादल आसमान में छाए हुए थे। दोपहर होते ही रिमझिम बारिश शुरू हो गयी और देखते ही देखते मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। तेज बरसा का क्रम करीब आधा घंटा रहा। स्कूली बच्चों की बारिश में खूब फजीहत हुई। लगातार बारिश से झील में इस मौसम में तीसरी बार निकासी शुरू हो गयी। मौसम विभाग ने यलो अलर्ट जारी किया था, जो सही साबित हुआ। केंद्र के अनुसार नगर का तापमान में गिरावट आ आई है, जो अधिकतम तापमान 23 व न्यूनतम 14 डिग्री सेल्सियस रहा। आद्रता अधिकतम 100 व न्यूनतम 75 प्रतिशत दर्ज की गई । बारिश आठ मिमी दर्ज की गई। अल्मोड़ा-नैनीताल मोटर मार्ग बीते दिनों से क्रारब के पास पहाड़ी से हो रहे भूस्खलन के कारण लगातार बंद हो रहा था। बीते बुधवार को मार्ग सुचारू कर दिया गया था। गुरुवार की तड़के फिर पहाड़ी से बड़े-बड़े बोल्डर व मिट्टी गिरने लगी। धीरे-धीरे पूरा मोटर मार्ग मलबे से पट गया। जिससे वाहनों का आवागमन ठप हो गया। सड़क के दोनों छोरों पर गाड़ियों की लंबी लाइन लग गई। आपदा प्रबंधन विभाग ने सूचना मिलते ही मौके पर दो लोडर मशीनें भेजी। जिन्होंने मार्ग को सुचारू किया।

शिक्षक और कर्मचारी सड़क पर उतरे, पुरानी पेंशन बहाली की मांग के लिए निकाली रैली; चेतावनी दी

हल्द्वानी , एजेंसी। पुरानी पेंशन बहाली के लिए शिक्षक और कर्मचारियों ने सड़क पर उतकर एनपीएस, यूपीएस गो बैक और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने शीघ्र मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी।

पुरानी पेंशन बहाली के लिए शिक्षक और कर्मचारियों ने सड़क पर उतकर एनपीएस, यूपीएस गो बैक और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने शीघ्र मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी।

बृहस्पतिवार को पुरानी पेंशन बहाली मंच से जुड़े शिक्षक और कर्मचारी बुद्ध पार्क में एकत्र हुए। संगठन की अध्यक्ष मीनाक्षी कीर्ति और जिला मंत्री मदन बर्तवाल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पुरानी पेंशन योजना कर्मचारियों का हक है। उन्होंने कर्मचारियों को एनपीएस और यूपीएस की कमियों के बारे में बताया। इसके बाद एसडीएम कार्यालय तक रैली निकाली। माध्यम से सीएम को ज्ञापन भेजा। रैली में विवेक पांडे, गोकुल मर्तोलिया, गिरीश जोशी, हरकेश भारती, मनोज पंत, कुबेर मेवाड़ी, नंदन गोस्वामी, रश्मि पांडे, नमिता पाठक, डिकर सिंह पडियार, जानकी अधिकारी, हिमांशु पांडे सहित कई कर्मचारी और शिक्षक मौजूद रहे।

डॉक्टर के यहां गया था परिवार, चोरों ने उड़ाए लाखों के जेवर-नकदी

हरिद्वार, एजेंसी। डॉक्टर के यहां परिवार के जाने का फायदा उठाकर शुक्रवार देर शाम चोरों ने घर में घुसकर लाखों के जेवर और नकदी चोरी कर ली। परिवार को लौटने पर चोरी का पता चला। पुलिस ने घर के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगालते हुए आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि बहादराबाद क्षेत्र के रोहलकी निवासी मुनेश चौहान शटरिंग का काम करते हैं। शुक्रवार देर शाम वह परिवार के साथ डॉक्टर के यहां गए थे। कुछ घंटे बाद लौटकर आए तो घर के अंदर सामान बिखरा पड़ा देखा। अलमारी के लॉकर से लाखों के जेवर और नकदी गायब मिली। जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जानकारी जुटाई। छानबीन में सामने आया कि मेन गेट पर ताला लगा होने से चोर दीवार फांदकर घर के आंगन में दाखिल हुए। लॉकर की चाबी कमरे में ही थी। चोरों ने लॉकर खोलकर सामान चोरी कर लिया। आशंका है कि चोर आसपास के ही हैं, जिन्होंने उनको घर से निकलते देखा होगा। बाजार चौकी प्रभारी यशवीर सिंह नेगी ने बताया कि जांच की जा रही है, जल्द आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

प्रतिबंधित नशीली दवाइयों के साथ 2 अभियुक्त गिरफ्तार, एनडीपीएस के तहत मुकदमा पंजीकृत

उधम सिंह नगर, एजेंसी। उत्तराखंड के जनपद उधम सिंह नगर के सितारगंज पुलिस और एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स की संयुक्त टीम को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। दरअसल, संयुक्त टीम ने सिसैया में स्थित एक दो मंजिला मकान के कमरे से छापेमारी के दौरान प्रतिबंधित नशीली दवाइयों सहित दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। साथ ही अपराधियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

प्राप्त सूचना के मुताबिक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद उधम सिंह नगर द्वारा नशे के विरुद्ध अभियान चलाया गया है। वहीं इस अभियान के अंतर्गत पुलिस और एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स की संयुक्त टीम ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम सिसैया में छापेमारी की। इसमें छापेमारी के दौरान टीम को भारी मात्रा में प्रतिबंधित नशीली दवाइयों का जखीरा मिला। इसी के साथ ही टीम ने प्रतिबंधित नशीली दवाइयों व इंजेक्शनों को जब्त करते हुए साथ ही दोनों अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। बता दें कि प्रतिबंधित नशीली दवाइयों की बड़ी खेप में पुलिस ने 153176 कैप्सूल, 5949 इंजेक्शन व 57050 नशीले टैबलेट बरामद किए है। वहीं दोनों अभियुक्तों के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा पंजीकृत करते हुए माननीय न्यायालय में पेश कर दिया है।

पर्यटक व स्थानीय लोगों के लिए खुला गंगा संग्रहालय

ऋषिकेश, एजेंसी। त्रिवेणीघाट में नमामि गंगे योजना के तहत बना गंगा संग्रहालय का द्वार करीब तीन वर्ष बाद पर्यटक और स्थानीय लोगों के लिए खोल दिया गया है।

संग्रहालय में गोमुख से लेकर गंगा सागर तक गंगा के इतिहास को दर्शाया गया है। इसके अलावा संग्रहालय में पंचबदरी, पंच केदार, पंच प्रयाग, चारधाम, एसटीपी प्लांट, राजाजी टाइगर रिजर्व समेत विभिन्न जानकारी उपलब्ध कराई गई है।

वर्ष 2020-21 में नमामि गंगे योजना से करीब एक करोड़ रुपये की लागत से त्रिवेणीघाट पर गंगा संग्रहालय का निर्माण किया गया था। संग्रहालय का निर्माण होने के बाद पर्यटक और स्थानीय लोगों के लिए इसके द्वार बंद हो गए थे। वर्ष 2022 में गंगा का जलस्तर बढ़ने से संग्रहालय जलमग्न हो गया था, जिससे यहां रेत बजरी आदि मलबा घुस गया था। फिर विभाग की ओर से इसकी सफाई और इसका जीर्णोद्धार किया गया।

अतिक्रमण के खिलाफ चला अभियान, रेहड़ियां हटवाईं

रूड़की, एजेंसी। भगवानपुर में बृहस्पतिवार को प्रशासन की ओर से अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान टीम ने सड़कों के किनारे लगी रेहड़ियों और फड़ को हटवाया। अतिक्रमण करने वालों को चेतावनी दी गई है कि दोबारा अतिक्रमण किया गया तो सख्त कार्रवाई की जाएगी और सामान जब्त किया जाएगा।

अतिक्रमण की वजह से भगवानपुर की नई मार्केट, मुख्य बाजार, चुड़ियाला चौक व मनोकामना मंदिर पर जाम लगा रहता है। फल-सब्जी व अन्य सामान की रेहड़ी और फड़ लगी रहने से यहां दिन के समय जाम लगा रहता है। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अतिक्रमण को लेकर हो रही परेशानी की शिकायत लगातार एसडीएम जितेंद्र कुमार को मिल रही थी। इसके चलते बृहस्पतिवार को एसडीएम जितेंद्र कुमार ने क्षेत्र में बृहस्पतिवार को अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया।

अभियान के दौरान सड़कों के किनारे अवैध रूप से रेहड़ी और फड़ लगाने वाले लोगों को वहां से हटाया।

हवालबाग ब्लॉक के चार गांवों में 15 दिन से नहीं आया पानी, आठ हजार से अधिक लोग प्रभावित

अल्मोड़ा, एजेंसी। हवालबाग विकासखंड के चार गांवों में पिछले 15 दिन से पानी नहीं आया है। क्षेत्र के देवली, फड़का, सिमकुड़ी और धारम गांवों में 8000 से अधिक लोग पेयजल के लिए जूझ रहे हैं।

अल्मोड़ा जिले के हवालबाग विकासखंड के चार गांवों में पिछले 15 दिन से पानी नहीं आया है। क्षेत्र के देवली, फड़का, सिमकुड़ी और धारम गांवों में 8000 से अधिक लोग पेयजल के लिए जूझ रहे हैं। खेतीबाड़ी के सीजन में माल गांव देवली, फड़का, सिमकुड़ी, धारम गांवों में पानी की आपूर्ति ठप हो गई है। इससे एक तरफ खेती का कार्य और पानी की किल्लत से जूझना पड़ रहा है। हाल ये कि पानी की किल्लत के चलते लोग पानी स्टोर भी नहीं कर पा रहे हैं। पूर्व में जो पानी स्टोर किया था वह खत्म हो चुका है। हर दिन ग्रामीणों को प्राकृतिक स्रोतों से जल ढोना पड़ रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि बीते दिनों हुई भारी बारिश के कारण जगह-जगह पाइप लाइनें क्षतिग्रस्त होने से पानी की आपूर्ति ठप है। ग्रामीणों को काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें रात भी नौलों में गुजारनी पड़ रही है। यहां लगी भारी भीड़ के कारण पानी नंबर से भरना पड़ रहा है।

आप सरकार दिल्ली में निवेशकों को देगी सिंगल विंडो की सुविधा, सिंगल विंडो सिस्टम का बीटा वर्जन 30 सितंबर को होगा लॉन्च- भारद्वाज

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली सरकार ने व्यवसायों के संचालन को सुव्यवस्थित और उनको गति देने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। दिल्ली सरकार ने निवेशकों का विश्वास बढ़ाने और लालफीताशाही को खत्म करने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम (एसडब्ल्यूएस) की शुरूआत की है। यह ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आवेदनों की मंजूरी को सरल बनाने, बोझ को कम करने और क्षेत्र विशिष्ट सुधारों को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है। दिल्ली के उद्योग मंत्री सौरभ भारद्वाज के अनुसार, 12 विभागों की 59 सेवाओं को शामिल करते हुए सिंगल विंडो सिस्टम का उद्देश्य नियमों को और अधिक प्रभावी बनाना और प्रोजेक्ट को समय सीमा में तेजी से पूरा करना और निवेशकों के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करना है। दिल्ली के उद्योग मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि व्यापारिक नियम प्रक्रियाओं को सरल बनाना और ई-सेवा प्रदान करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी को लागू करना पिछले दशक में व्यापार सुधारों का मुख्य आधार रहा है। ऑनलाइन माध्यमों के जरिए देश में एक अधिक खुला और पारदर्शी व्यापारिक वातावरण बनाया गया है।

उद्योग मंत्री ने आगे कहा कि किसी भी नए व्यवसाय को शुरू करने के लिए एक निवेशक को कई सरकारी एजेंसियों से विभिन्न स्तरों पर कई लाइसेंस और मंजूरी प्राप्त करनी होती है। इन सेवाओं की जानकारी विभिन्न अधिनियमों, नियमों और विनियमों में बंटी हुई होती है और कई जगहों पर फैली होती है। सिंगल विंडो सिस्टम की शुरूआत के साथ, नियमों में काफी सुधार हुआ है और अनुमोदन प्रक्रिया अधिक सुगम हो गई है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि सिंगल विंडो सिस्टम वास्तव में एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जहां निवेशक राज्य के सभी संबंधित विभागों से सीधे संवाद कर सकते हैं। यह निवेशकों के लिए सिंगल इंटरफेस के रूप में काम करता है, जिसके जरिए वह राज्य द्वारा समय-समय पर निर्धारित सभी कानूनी मंजूरियों के लिए आवेदन कर सकते हैं। सिंगल विंडो सिस्टम के कार्यान्वयन से व्यवसाय लगाने के लिए जरूरी सूचनाएं और लेनदेन संबंधी सेवाएं प्राप्त करने में निवेशकों को आसान हो जाता है।

उद्योग मंत्री ने बताया कि दिल्ली सरकार का सिंगल विंडो सिस्टम (एसडब्ल्यूएस) दिल्ली का एक प्रमुख प्रोजेक्ट है, जिसे दिल्ली सरकार के उद्योग विभाग द्वारा एनआईसी दिल्ली की सहायता से लागू किया जा रहा है। इसका उद्देश्य सेवा प्रदान करने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना और निवेशकों का समय, प्रयास और खर्च को कम करना है। यह पोर्टल विभिन्न अप्रूवल में तेजी लाने और व्यवसाय के लिए निवेशक-अनुकूल माहौल बनाने के लक्ष्य को साकार करने में मदद करेगा। मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली का सिंगल विंडो सिस्टम निवेशकों के मार्गदर्शन के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो उन्हें अपने व्यवसाय की आवश्यकताओं के अनुसार अनुमतियों की पहचान करने और उनके लिए आवेदन करने में मदद करता है। यह प्लेटफॉर्म निवेशकों को विभिन्न प्री-ऑपरेशन अनुमतियों के लिए आवेदन करने, अनुपालन के बोझ को कम करने, क्षेत्र-विशिष्ट सुधारों और योजनाओं को बढ़ावा देने, परियोजनाओं की प्रतीक्षा अवधि को घटाने और दिल्ली में व्यवसाय शुरू करने और संचालित करने में आसानी को बढ़ावा देता है। उद्योग मंत्री ने बताया कि अब तक सिंगल विंडो सिस्टम प्लेटफॉर्म पर 12 संबंधित विभागों से 59 सेवाएं जोड़ी जा चुकी हैं। इसमें विशेष रूप से, दिल्ली सरकार के 7 संबंधित विभागों से 37 सेवाएं शामिल की गई हैं, जिनमें श्रम विभाग, नगर निगम विभाग, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति, माप एवं तौल, दिल्ली जल बोर्ड, (पावर डिस्कॉम्स) टाटा पावर, बीएसईएस, बीआरपीएल और उद्योग विभाग शामिल हैं। ये सभी सेवाएं विकास योजना के पहले चरण में सिंगल विंडो सिस्टम पर शामिल की गई हैं।

नशे की खोली थी फैक्ट्री 4.20 करोड़ का माल रिकवर

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

हिसार में नशीली दवा की फैक्ट्री खोल दिल्ली-एनसीआर में सप्लाई करने वाले गिरोह का क्राइम ब्रांच ने भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने इसे 18 किग्रा ह्यअल्प्राजोलमह्ल पाउडर रिकवर किया है, जिसकी कीमत इंटरनैशनल मार्केट 4 करोड़ 20 लाख आंकी गई है। इसके अलावा एक करोड़ 17 लाख 60 हजार 350 रुपये कैश और एक स्कूटर भी बरामद किया है। पुलिस ने फैक्ट्री के मालिक और इंडियन अचीवर्स अवॉर्ड से सम्मानित डॉ. नवीन अग्रवाल समेत छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

डीसीपी (क्राइम) अमित गोयल ने बताया कि क्राइम ब्रांच के हेड कॉन्स्टेबल दीपक पारेवा को नॉर्थ ईस्ट दिल्ली में ड्रग की सप्लाई का पता चला। एसीपी अनिल शर्मा और अरविंद कुमार की देखरेख में बनी इंस्पेक्टर प्रवीन राठी की टीम ने 23 मार्च 2024 को बृजपुरी से सभापुर निवासी राजेंद्र प्रसाद मिश्रा उर्फ आरपी को अरेस्ट किया था। इससे 18 किग्रा अल्प्राजोलम पाउडर और स्कूटर बरामद हुआ। पूछताछ में आरोपी राजेंद्र प्रसाद मिश्रा ने बताया कि वह ड्रग कार्टेल के लिए करियर का काम करता है और अल्प्राजोलम की सप्लाई करता है। इस पाउडर को वह बृजपुरी के राम आशीष मौर्य से लेकर आया था, जिसे करावल नगर के आनंद कुमार उर्फ सोनू को डिलिवर करना था। पुलिस ने रेड की तो मौर्य और सोनू फरार हो गए। पुलिस ने इनके घरों से एक करोड़ 17 लाख से ज्यादा कैश बरामद किया। पुलिस ने लंबे ऑपरेशन के बाद मौर्य, सोनू और दीपक कुमार को अरेस्ट कर लिया। आरोपी बागपत निवासी दीपक कुमार ने खुलासा किया कि ड्रग हरियाणा के हिसार स्थित बायोकेस फूड्स एंड एक्सट्रैक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री में बनाई जाती है। इसके मालिक डॉ. नवीन अग्रवाल है, जिसे बाद में अरेस्ट कर लिया। फरेंसिक साइंस लैब (एफएसएल) की जांच के दौरान फैक्ट्री में अल्प्राजोलम के कण मिले।

अध्यापक पर छात्रा ने लगाया छेड़छाड़ का आरोप, हंगामा

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा। नगर के एक प्रशिद्ध इंटर कॉलेज के शिक्षक पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर के एक इंटर कॉलेज के मैथ के शिक्षक 12 कक्षा के छात्र,छात्राओं को अपने घर कॉलेज की छुट्टी के बाद टयूशन पढ़ाते हैं वहां छात्रा रोज ट्युशन पढ़ने जाती है परन्तु कल ट्यूशन पढ़ने गई छात्रा ने शिक्षक के द्वारा छेड़छाड़ करने की बात अपने घर वालो को बताई। जिस पर के छात्रा के परिजनों ने कॉलेज में हंगामा किया । मौके पर अखिल भारतीय विधार्थी परिषद के कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

छात्रा का आरोप है कि ट्यूशन के बाद सभी छात्र चले इडके बाद शिक्षक ने छेड़खानी। छात्रा ने ये आप बीती अपने परिजनों को बताई जिसपर परिजनों और गांववासी इकट्ठा होकर शनिवार को कॉलेज पहुंचे और वहाँ स्टाफ और प्रधानाचार्या इसी शिकायत करते हुए हंगामा किया। पुलिस को जैसे ही इसकी सूचना मिली तत्काल थानाअध्यक्ष मय फोर्स कॉलेज पहुंचे पर और मामले को शांत कराया और शिक्षक को अपने साथ थाने ले आए इसके बाद छात्रा और परिजन तथा गांव वासी भी थाने पहुंचकर कानूनी कार्यवाही की मांग करने लगे वही दूसरी ओर शिक्षक ने कहा कि मैं भगवान की कसम खाता हूं कि मेरे ऊपर छात्रा के द्वारा लगाए गए आरोप गलत हैं छात्रा मेरी बेटी जैसी है अगर मैंने छात्रा के साथ कुछ भी गलत कृत्य किया हो तो समझना अपनी बेटी के साथ ये कृत्य किया है । थानाध्यक्ष अवनीत मान ने कहा छात्रा के परिजनों की ओर से प्रार्थना पर मुकदमा पंजीकृत कर गहनता से जांच की जाएगी और सबूत के आधार पर दूध का दूध और पानी का जाएगा किसी के साथ अन्याय नहीं होगा।

श्री वेंकटेश्वरा मे अमर शहीद भगत सिंह की जयन्ती पर संगोष्ठी

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा।श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान में देश की आजादी के सबसे महान सपूत अमर शहीद भगत सिंह की जयंती पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमे उपस्थित वक्ताओं ने शहीद भगत सिंह के बलिदान को याद करते हुए उनको श्रद्धासुमन अर्पित कर देश सेवा की शपथ ली। श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान के अब्दुल कलाम सभागार में शहीद भगत सिंह की जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष श्री सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, कुलपति प्रो. (डा.) कृष्ण कान्त दवे, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डे आदि ने अमर शहीद भगत सिंह के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया।अपने सम्बोधन में संस्थापक अध्यक्ष सुधीर गिरि ने अमर शहीद भगत सिंह के बलिदान को याद करते हुए कहा कि हर देशवासी के नसीब में भगत सिंह की तरह अपने आप को देश के लिए बलिदान करने का सौभाग्य नही होता, लेकिन यदि हम सभी अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में शानदार काम करते हुए भारत को दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश बनाने में अपना-अपना योगदान दे तो ये भी आजादी के अमर शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने सरदार भगत सिंह के बचपन में उनका माँ भारती के प्रति अगाध प्रेम एवं देश की आजादी के लिए जूनून का जिक्र करते हुए कहा कि भगत सिंह की माँ ने उनसे कहा कि बेटा तुम अब शादी कर लो देश सेवा तो शादी के बाद भी कर लेना तो भगत सिंह ने हँस कर अपनी माँ से कहा कि वतन के वास्ते उसके, इरादे देख फौलादी

कहा बेबे ने मेरे लाल, अब तो कर ले तू शादी। सुनी बेबे की ये बात, वीर हँसकर के यू बोला दुल्हन तो लाऊंगा पर, नाम उसका होगा आजादीह्व सुनाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया। शहीद भगत सिंह के जन्मदिवस पर आयोजित संगोष्ठी को कुलपति प्रो. (डा.) कृष्ण कान्त दवे, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डे ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर निदेशक एकेडेमिक डा. राजेश सिंह, डा. दिव्या गिरधर, डा. वी.एन. झा, डा. दिनेश गौतम, डा. योगेश्वर सिंह, डा. राजवर्धन, डा. ज्योति सिंह, तरुण काम्बोज, विशाल शर्मा, मारुफ चौधरी, अरुण गोस्वामी, डा. अश्विन सक्सेना, डा. प्रताप सिंह, समस्त शिक्षकों के साथ मीडिया प्रभारी विश्वास राणा, राम गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहे।

पालिका टीम ने बंद कराया अवैध साप्ताहिक बाजार,कंट्रोल रूम पर प्राप्त हुई थी शिकायत

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। नगर पालिका परिषद की टीम के द्वारा मौहल्ला चाहगौरी, सराय कोहना से लेकर नल क्षेत्र मे अवैध रूप से लगने वाले साप्ताहिक हफ्ता बाजार पर कार्यवाही करते हुए सरकारी मार्गो पर अवैध रूप से अतिक्रमण करके लगाए गए फड, पैठ, ठेले आदि को हटवाया गया। इस सम्बन्ध मे अधिक जानकारी देते हुए नगर पालिका परिषद अमरोहा के अधिशासी अधिकारी डॉ0 बृजेश कुमार द्वारा बताया गया की पूर्व मे इन मोहल्लो क्षेत्रों मे मंगल बाजार लगाया जाता था। क्षेत्रीय नागरिकों की मांग पर व प्रत्येक मंगलवार इन क्षेत्रों मे यातायात व्यवस्था प्रभावित होने। अपात स्थिति मे इन क्षेत्रों से वाहनों को न ले जाने के दृष्टिगत मंगल बाजार को नगर के दानिश मंदान क्षेत्र अंतर्गत कांकर सराय रोड पर व्यवस्थित कर दिया गया था। तभी से प्रत्येक मंगल वार को इस क्षेत्र मे मंगल बाजार लगता है। कुछ समय पूर्व सूचना प्राप्त हुई की नगर के जिस क्षेत्र (मौहल्ला चाहगोरी, सराय कोहना, नल) व आस पास के क्षेत्र मे अवैध रूप से साप्ताहिक हफ्ता बाजार का संचालन शुरू हो गया है। पालिका द्वारा करवाई गयीं जांच मे प्रत्येक शनिवार को हफ्ता बाजार नाम से साप्ताहिक बाजार की गतिविधियां होती हुई पायी गयीं, जिस पर कार्यवाही करते हुए पालिका अधिशासी अधिकारी द्वारा पालिका टीम सहित मौके से उक्त बाजार हटवा दिया गया, इसके बाद प्रत्येक शनिवार को इस क्षेत्र मे लाउड स्पीकर द्वारा उद्घोषण करवाया जाता है की अवैध बाजार को न लगाया जाये। शनिवार को उपजिलाधिकारी कण्ट्रोल रूम पर शिकायत प्राप्त हुई की हफ्ता बाजार का संचालन मौहल्ला चाहगोरी, सराय कोहना, नल आदि मे किया जा रहा है, अधिशासी अधिकारी के निर्देश पर पालिका टीम द्वारा पुलिस बल सहित मौके पर पहुँच कर अवैध हफ्ता बाजार को बंद करवाया गया। अधिशासी अधिकारी द्वारा पालिका कर निर्धारण अधिकारी को आदेशित किया गया है अवैध रूप से लगने वाले हफ्ता बाजार मे जिन भवन स्वामियों द्वारा अपने प्लाट, गोदाम, मैरिज हॉल, दुकान, मकान मे इस प्रत्येक शनिवार को हफ्ता बाजार की गतिविधिया संचालित की जा रही हैं, ऐसे भवनो पर कामर्शियल टैक्स लगाए जाने की कार्यवाही की जाये, एवं जिन लोगो द्वारा सरकारी मार्ग, नाले, नाली को फड, ठेला,पैठ स्टाल लगाकर अतिक्रमित किया जा रहा है उनका सामान जब्त करते हुए नियमानुसार जुमार्ना एवं विधिक कार्यवाही की जाये।

आखिरी बार मिठाई लेकर जाता दिखा 4 बेटियों को जहर देकर मारने वाला पिता

प्रात : किरण संवाददाता

दक्षिणी दिल्ली के वसंत कुंज इलाके में एक ही परिवार के पांच सदस्य अपने घर में मृत पाए गए। बताया जा रहा है कि आरोपी पिता ने पहले अपनी चारों बेटियों को जहर देकर मार डाला, फिर खुद भी सल्फास की गोली खाकर खुदकुशी कर ली। वहीं पुलिस ने एक सीसीटीवी फुटेज जारी किया है, जिसमें आरोपी पिता मिठाई लेकर घर जाते दिख रहा है। यह घटना वसंत कुंज के रंगपुरी गांव में घटी है। मामला शुक्रवार को तब सामने प्रकाश में आया, जब पड़ोसियों ने पुलिस को सूचित किया कि एक फ्लैट से दुर्गंध आ रही थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने फ्लैट का दरवाजा तोड़ा तो उसके पैर के नीचे की जमीन खिसक गई। घर के अंदर पांच लोगों की लाश पड़ी हुई थी और उसमें से दुर्गंध आ रही थी। सामने आए सीसीटीवी फुटेज में एक शख्स को मिठाई का पैकेट लेकर घर के अंदर जाते हुए देखा जा रहा है। इसके बाद के सीसीटीवी फुटेज में वह बाहर निकलते नहीं देखा गया। बताया जा रहा है कि शख्स को आखिरी बार 24 सितंबर को देखा गया था। माना जा रहा है कि पहले उसने बेटियों को जहर देकर मारा, फिर खुद सुसाइड कर लिया। घटना सामने आने के बाद फॉरेंसिक टीम ने घटना का मुआयना किया और साक्ष्य इकट्ठा किए। शवों पर कोई चोट के निशान नहीं पाए गए, हालांकि घर के अंदर सल्फास के तीन पैकेट, पांच गिलास और एक चम्मच में संदिग्ध तरल पदार्थ मिला। अधिकारियों ने कहा कि शवों का पोस्टमार्टम और सभी पहलुओं से आगे की जांच जारी है।

चोरी के सामान के साथ सेंधमार धरा

नई दिल्ली। सी.आर. पार्क थाना पुलिस ने चोरी की एक घटना को सुलझाते हुए 27 सितंबर को दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों विश्वजीत दास और धर्मवीर के पास से एक लैपटॉप, एक मोबाइल और आर्टिफिशियल ज्वैलरी बरामद हुई है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि 26 सितंबर को एक शख्स ने पुलिस चौकी सी.आर. पार्क में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ अपने घर में चोरी की शिकायत दी। पीड़ित ने बताया कि उसके घर से बदमाशों ने लैपटॉप, मोबाइल फोन और आभूषण चोरी कर लिए। पुलिस टीम ने ट्रेप लगाकर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

चार वर्षीय मासूम को परिजन से मिलाया

नई दिल्ली। शाहदरा जिला पुलिस की मानव तस्करी विरोधी टीम ने 25 सितंबर को अपने घर से लापता हुए एक चार वर्षीय मासूम को 27 सितंबर की शाम उसके परिजनों से मिला दिया। सीमापुरी थाना पुलिस को दंपती ने अपने चार वर्षीय बेटे के लापता होने की सूचना दी थी। परिजनों ने बताया कि वह घर के बाहर खेल रहा था। इसी दौरान वहां से लापता हो गया। 27 सितंबर को हेडकांस्टेबल निर्देश को सूचना मिली कि बच्चे को शालीमार गार्डन इलाके में देखा गया था। पुलिस टीम ने शालीमार गार्डन थाना पुलिस से जानकारी जुटाई तो पता चला कि बच्चे को घरोंडा चाइल्ड होम में भेजा गया है। इसके बाद बच्चे को परिजनों को सौंप दिया।

कार शोरूम में ताबड़तोड़ फायरिंग, पुलिस हर एंगल से कर रही जांच

दिल्ली के एक कार शोरूम में शनिवार को गोलीबारी की घटना सामने आई है। यह घटना नांगलोई के सुल्तानपुर इलाके में सुबह साढ़े नौ बजे हुई जहां कुछ अज्ञात हमलावरों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। गनीमत है कि इसमें किसी हताहत होने की खबर सामने नहीं आई है। इस फायरिंग में मिठाई की दुकान और होटल को निशाना बनाया गया।

पुलिस हर एंगल से कर रही जांच

इस घटना को लेकर पुलिस अधिकारी ने बताया कि शनिवार सुबह करीब 9:30 बजे दो लोग मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए, जिनका चेहरा ढका हुआ था और उन्होंने रोशन हलवाई की दुकान पर तीन-चार गोलियां चलाईं। अधिकारी ने बताया कि घटना में कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन दुकान में कुछ कांच टूट गए। पुलिस को संदेह है कि गोलीबारी का संबंध कुछ गैंगस्टरों के रंगदारी मांगने से है। पुलिस ने बताया कि मिठाई की दुकान पर गोलीबारी के बाद एक पर्चा मिला है, जिसपर गैंगस्टर-दीपक बॉक्सर भाई, अंकेश लकड़ा भाई और विशाल भाई के नाम लिखे हैं। पुलिस ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज एकत्र कर ली गई है और जांच जारी है।

पांच करोड़ रुपये की मांग

इससे पहले, शुक्रवार को देर रात करीब 2:30 बजे दो लोग मोटरसाइकिल पर आए और दक्षिणी दिल्ली में स्थित इम्प्रेस होटल के मैन गेट पर पांच से छह गोलियां चलाईं। पुलिस ने बताया कि घटना में कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन कुछ शीशे टूट गए। घटना के वक्त होटल में कर्मचारी और कुछ मेहमान मौजूद थे। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। शुक्रवार रात पश्चिमी दिल्ली के नारायणा इलाके में पुरानी लग्जरी कार के शोरूम पर तीन लोगों ने गोलीबारी की। इस मामले में भी कोई हताहत नहीं हुआ। सूत्रों ने कहा कि यह हिमांशु भाऊ गिरोह द्वारा जबरन वसूली का प्रयास था। उन्होंने बताया कि गैंगस्टर ने कार शोरूम के मालिक से रंगदारी के तौर पर पांच करोड़ रुपये की मांग की है। पुलिस के अनुसार, हमलावरों ने शोरूम के अंदर और बाहर दो दर्जन से अधिक गोलियां चलाईं।

सेक्स रैकेट का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। न्यू गोविंदपुरा इलाके में एक 60 वर्षीय महिला सेक्स रैकेट चला रही थी। जगतपुरी थाना पुलिस ने 27 सितंबर को छापा मारकर मौके से दो लोगों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पांच महिलाओं को हिरासत में लिया है। पुलिस उपायुक्त सुरेन्द्र चौधरी ने बताया कि एसआई अशोक, हेडकांस्टेबल अजीत और कांस्टेबल रेखा को सेक्स रैकेट के बारे में सूचना मिली। पुलिस ने सूचना को पुख्ता करने के लिए हेडकांस्टेबल वीरेन्द्र को फर्जी ग्राहक बनाकर भेजा और उसके इशारा मिलने पर टीम ने मौके पर छापा मारा। पुलिस ने 60 वर्षीय कुलवंत कौर और 43 वर्षीय हर्ष दुआ उर्फ लकी को गिरफ्तार किया।

10 दिन में एक पासपोर्ट पर दो यात्री विदेश से लौटे, एजेंट गिरफ्तार

नई दिल्ली। एक पासपोर्ट पर दो यात्रियों को जॉर्डन से वापस बुलाने वाले दो एजेंट को एयरपोर्ट पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपियों की पहचान मो. नासिर और जावेद अहमद के रूप में हुई है। दोनों यात्री को भी गिरफ्तार किया गया है। डीसीपी उषा रंगनानी के अनुसार, 24 सितंबर को बिजनौर निवासी मोहम्मद अब्बास जॉर्डन से आईजीआई एयरपोर्ट लौटा। इमिग्रेशन जांच में पता चला कि उसके पासपोर्ट पर 14 सितंबर को भी एक शख्स लौटा है, लेकिन इसके बाद इस पासपोर्ट पर कोई विदेश नहीं गया। इस बाबत मामला दर्ज कर आरोपी यात्री को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसने पुलिस को बताया कि नासिर और जावेद नामक एजेंट ने उसे दो लाख रुपये में जॉर्डन भेजने का वादा किया था। उसे जॉर्डन एयरपोर्ट पर अपना पासपोर्ट देने के लिए कहा गया था, ताकि उसके पासपोर्ट पर कोई दूसरा शख्स वापस आ सके। 13 सितंबर को वह जॉर्डन गया था। उसे बताया गया था कि वहां उसकी नौकरी लगवाई जाएगी और पासपोर्ट भी भेज दिया जाएगा। कुछ दिनों बाद एजेंट ने बताया कि जॉर्डन में अभी नौकरी मिलने में दिक्कत है, इसलिए वह वापस आ गया। जानकारी पर एसएचओ सुशील गोयल की टीम ने छापा मारकर मो. नासिर को दिल्ली से गिरफ्तार किया। उसने पुलिस को बताया कि मोहम्मद अब्बास के पासपोर्ट पर फोटो बदलकर उसने दूसरे यात्री को दिल्ली बुलाया था। नासिर की निशानदेही पर जावेद अहमद को भी गिरफ्तार किया गया। उसने पुलिस को बताया कि इस कबूतरबाजी के लिए उसे एक लाख रुपये नासिर से मिले थे।

गुंजन ब्यूटी पार्लर की ओर से मेंहदी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

स्योहारा। नगर के गुरुद्वारा स्थित गुंजन ब्यूटी पार्लर की ओर से आज एक मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 40 लड़कियों ने भाग लेकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। जिसमे से पहला स्थान जेबा दिलशाद,दूसरा स्थान फौजिया व आरती शर्मा और तीसरा स्थान अरिबा ने प्राप्त किया। जिनको समाज सेवी डा.मनोज वर्मा,डा एच. एस. कालरा, असजद चौधरी ने ट्राफी और सार्टिफेक्ट देकर सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रतियोगिता का जजमेंट,बुशरा चौधरी,शीतल वर्मा और नादरा कमर ने किया तो साथ ही कार्यक्रम आयोजक धर्मवीर सिंह और रेखा दक्ष ने सभी का आभार व्यक्त करतें हुए आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करते रहने की बात कही।

एमसीडी आयुक्त दो दिन में सड़कों की मरम्मत और निमार्ण कार्य की स्टेटस रिपोर्ट सौपें- डॉ. शैली ओबेरॉय

मुझे पता चला है कि दिल्ली की कई कॉलोनियों में एमसीडी की अधिकतर सड़कें जर्जर हालत में हैं- डॉ. शैली ओबेरॉय

- चालू वित्तीय वर्ष में मेयर के विवेकाधीन निधि से कई सड़क परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, सभी के कार्यान्वयन पर परियोजना-वार स्थिति रिपोर्ट भी साझा करें- डॉ. शैली ओबेरॉय

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली की महापौर डॉ. शेली ओबेरॉय ने सड़कों की सही देखभाल न होने पर कड़ी नाराजगी जताई है। उन्होंने एमसीडी कमिश्नर को सड़कों के रखरखाव और निर्माण कार्य से जुड़ी परियोजनाओं की जानकारी दो दिन के अंदर साझा करने का सख्त निर्देश दिया है। मेयर ने सड़कों की खराब हालत पर गहरी चिंता जताते हुए कहा है कि अगर इसमें और देरी हुई, तो दिल्ली में वायु प्रदूषण की समस्या बढ़ सकती है। महापौर डॉ. शेली ओबेरॉय ने वित्त वर्ष 2024-25 में सड़क परियोजनाओं के लिए आवंटित किए गए बजट, कुल खर्च और शेष धनराशि की एक विस्तृत रिपोर्ट भी मांगी है।

इस संबंध में महापौर डॉ. शेली ओबेरॉय ने एमसीडी कमिश्नर को पत्र लिखा है। उन्होंने पत्र में कहा है कि मुझे जानकारी मिली है कि दिल्ली की अधिकांश कॉलोनियों में एमसीडी की सड़कें बहुत खराब हालत में हैं। इससे न केवल दिल्ली के निवासियों को आने-जाने में दिक्कत हो रही है, बल्कि गड्ढों के कारण सड़क हादसों का खतरा भी बढ़ गया है। इसके अलावा, टूटी सड़कों के कारण सड़क पर धूल भी बढ़ रही है, जो दिल्ली में वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण है।

राष्ट्रीय राजधानी में एमसीडी की सड़कों के रखरखाव और निर्माण के नियमित काम भी समय पर नहीं किए जा रहे हैं। यह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इन कार्यों को करने में किसी भी तरह की देरी से दिल्ली में प्रदूषण के स्तर पर पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय ने कहा है कि एमसीडी ने सड़कों के रखरखाव के लिए 1,000 करोड़ रुपए और मेयर के विवेकाधीन कोष के तहत 500 करोड़ रुपए का बजट आवंटित कर रखा है, जिसे चालू वित्त वर्ष 2024-25 में एमसीडी सड़कों के सुधार के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

मेयर डॉ. शैली ओबेरॉय ने एमसीडी कमिश्नर को निर्देश दिया है कि वह दो दिन के अंदर यानि सोमवार, 30 सितंबर को शाम 5 बजे तक, एमसीडी की सड़कों के रखरखाव और निर्माण की स्थिति की जानकारी दें। विशेष रूप से- वित्त वर्ष 2024-25 में सड़क परियोजनाओं के लिए किस-किस बजट हेड के तहत धन आवंटित किया गया है और अब तक कितना खर्च हुआ है?

- यदि एमसीडी सड़कों के रखरखाव या निर्माण कार्य के लिए किसी भी बजट हेड से पैसा खर्च नहीं किया गया है, तो इसका कारण बताएं।

चालू वित्त वर्ष में मैंने मेयर विवेकाधीन निधि से कई सड़क परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इनमें से प्रत्येक सड़क परियोजना के कार्यान्वयन की स्थिति को परियोजना-वार साझा करें।

युवाओं को रोजगार से जोड़कर देश का विकास और शांति स्थापित की जा सकती है : डॉक्टर जॉय एन टिर्की

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली (संवाददाता) शमां एजुकेशनल एंड पॉलिटेक्निक सोसायटी ने हमदर्द फाऊंडेशन के सहयोग और दिल्ली पुलिस के साथ भागीदारी करके समाज में कम पढ़े लिखे, बेहुनर, बेरोजगार , भटके हुए नौजवानों को जल्द रोजगार से जोड़ने के लिए शॉर्ट टर्म मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर शुरू किया जिसका उद्घाटन करते हुए उत्तर पूर्वी जिले के पुलिस उपायुक्त डॉक्टर जॉय टिर्की ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में बेरोजगार

युवाओं के लिए शमां एजुकेशनल एंड पॉलिटेक्निक सोसायटी ने जो शॉर्ट टर्म मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर शुरू किया है यह युवाओं के लिए एक वरदान साबित होगा क्योंकि देश और समाज में अगर विकास और शांति स्थापित करना है तो युवाओं को रोजगार से जोड़ना होगा, मैं अपनी ओर से संस्था के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं व हर संभव सहायता देने का विश्वास दिलाता हूं।

संस्था के महासचिव डॉक्टर फहीम बेग ने जानकारी देते हुए बताया की शमां एजुकेशनल एंड पॉलिटेक्निक सोसाइटी पिछले 27 वर्षों से इसी प्रकार के छोटे-छोटे प्रयास करके लोगों के जीवन को आसान बनाने के कार्य कर रहा हैं

संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिर्जा शाहिद चंगेजी

ने आए हुए सभी अतिथियों एवं छात्रों का धन्यवाद किया

और कहा की हमारी संस्था इसी प्रकार से समाज के दबे कुचले वर्गों को ऊपर उठकर देश में अमन - शांति ,विकास और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए कार्य करते रहेंगे।

हेल्पिंग हैंड ट्रस्ट के चेयरमैन सतीश गर्ग ने कहा इस महान कार्य के लिए हम अपनी ओर से यथा संभव योगदान और सहायता देने का भरोसा देते हैं हमारा उद्देश्य समाज का विकास हैं

उपाध्यक्ष सैयद शाहिद रात ने कहा कि किसी की सबसे बड़ी सहायता यह हो सकती है कि उसको रोजगार से जोड़ा जाए ताकि वह अपने परिवार का पालन पोषण कर सके कार्यक्रम में अध्यक्ष मिर्जा शाहिद चंगेजी, डॉक्टर फहीम बेग ,सय्यद शाहिद राहत , सतीश गर्ग,सलीम मलिक, जावेद मिर्जा ,मोहम्मद अनीस, मुकेश कुमार टांक, साधु राम वशिष्ठ, मोहममद अदनान,अनीस कस्सर, वसीम सैफी , डाक्टर खुर्शीद आलम, हाजी रईस, मुनीर अहमद,हाजी शमीम,जगमोहन शर्मा, आर बी यादव, शमसुद्दीन, आसिफ इदरिसी,कौनैन अशरफ, आर्यन टांक, जीशान,गुलशन नाज राज कुमार,युसूफ बेग आदि ने अपना सहयोग दिया।

देश संविधान से,कानून से चलता है गुंडागर्दी से नहीं; इसलिए भाजपा लोकतंत्र की हत्या करना बंद करे:आतिशी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भाजपा द्वारा कल लोकतंत्र की हत्या करते हुए नियमों को ताक पर रखकर एमसीडी स्थायी समिति के छठें सदस्य के अवैध और असंवैधानिक चुनाव करवाया गया। इस विषय में प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिये साझा करते हुए आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता व दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि, भाजपा द्वारा एमसीडी की स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य का जो चुनाव करवाया गया, वो गैर-कानूनी, गैर-संवैधानिक और गैर-लोकतांत्रिक है।

उन्होंने कहा कि, कल एमसीडी स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य का चुनाव दिल्ली म्यूनिसिपल एक्ट 1957 का उल्लंघन है। सीएम ने कहा कि, नियमों के तहत स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य के चुनाव की तारीख स्थान मेयर ही तय कर सकती है और वही पीठासीन अधिकारी होंगी। लेकिन लोकतंत्र,संविधान और कानून की धज्जियां उड़ाते हुए एलजी साहब के निर्देश पर एमसीडी कमिश्नर से एक आईएएस अधिकारी को पीठासीन अधिकारी बनाकर चुनाव करवाया।

सीएम आतिशी ने कहा कि, ये देश ये देश संविधान से,कानून से चलता है गुंडागर्दी से नहीं, इसलिए भाजपा लोकतंत्र की हत्या करना बंद करे और भाजपा चोर दरवाजे से सरकार बनाने की कोशिश न करें, हिम्मत है तो चुनाव में आम आदमी पार्टी का सामना करे।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता व दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि, भाजपा ने कल एमसीडी के स्टैंडिंग कमिटी के छठें सदस्य के चुनाव करवाए। ये चुनाव गैर-कानूनी, गैर-संवैधानिक और गैर-लोकतांत्रिक है। उन्होंने कहा कि, दिल्ली के नगर निगम को चलाने के लिए भारत के संसद ने दिल्ली नगर निगम एक्ट 1957 पारित किया हुआ है। इसके तहत एमसीडी को चलाने के लिए कई कानून और नियम बने हुए है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण दिल्ली म्युनिसिपल कॉरपोरेशन प्रोसीजर एंड कंडक्ट ऑफ बिजनेस रेगुलेशन 1958ह्व है। जिसका रेगुलेशन 51 जो स्टैंडिंग कमिटी के चुनावों से संबंधित है। इसके अनुसार स्टैंडिंग कमिटी के सदस्यों का चुनाव कारपोरेशन की बैठक में होगा।

उन्होंने कहा कि, कारपोरेशन की मीटिंग का समय,स्थान और तारीख सिर्फ.और सिर्फ.मेयर तय कर सकते है। डीएमसी एक्ट का सेक्शन 76 भी स्पष्ट शब्दों के कहता है कि, जब भी कॉरपोरेशन की मीटिंग होगी, तो उसकी अध्यक्षता मेयर करेंगे और मेयर अनुपस्थित रही तो डिप्टी मेयर अध्यक्षता करेंगे।

यानी स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य के चुनाव की तारीख स्थान मेयर ही तय कर सकते है। और जब चुनाव के लिए बैठक होगी तो उस बैठक की अध्यक्षता सिर्फ मेयर ही कर सकते है। लेकिन भाजपा को संविधान से, नियम-कानूनों से कोई फर्क.नहीं पड़ता है। भाजपा को लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाने से कोई फर्क.नहीं पड़ता है।

सीएम आतिशी ने कहा कि, लोकतंत्र,संविधान और कानून की धज्जियां उड़ाते हुए, एलजी साहब के पास शक्तियां न होते हुए, एक आईएएस ऑफिसर जिसके पास सदन की बैठक बुलाने की शक्ति न होने के बावजूद भी एलजी साहब आदेश देते है, कमिश्नर उस आदेश को मानते है। चुनाव के लिए कारपोरेशन की बैठक बुलाते है, और चुने हुए मेयर और डिप्टी मेयर की जगह एक आईएएस अधिकारी को पीठासीन अधिकारी बना देते है।उन्होंने कहा कि, भाजपा ने, एलजी साहब ने और उनके अफसरों ने कल के गैर-कानूनी चुनाव में हर स्तर पर संविधान और लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाई। लेकिन ये पहली बार नहीं है। ये भाजपा का स्टैंडिंग ऑपरेटिंग प्रोसीजर है। जहाँ-जहाँ भाजपा चुनाव नहीं जीतती वहाँ नियम कानून, संविधान की धज्जियां उड़ाते हुए चोर दरवाजे से सरकार बनाने की कोशिश करती है।

बड़े देह व्यापार का भंडाफोड़ मौके से पांच सेक्सवर्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के जगतपुरी थाना पुलिस ने न्यू गोविंदपुर के एक फ्लैट में छापा मारा। पुलिस के छापे के बाद अफरा-तफरी का माहौल हो गया। मौके से दो संचालकों व पांच सेक्सवर्कर को पकड़ा गया। संचालक अपने ग्राहकों को वाट्सऐप पर महिलाओं के फोटो भेजते थे, पसंद करने के बाद उन्हें बुलाते थे। पुलिस ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि सूचना मिलने पर एसएचओ जगतपुरी और एसआई अशोक नंबर सहित एक छापा मारने वाली पार्टी बनाई गई। जिसके बाद एचसी वीरेंद्र को एक नकली ग्राहक के रूप में भेजा गया और उसके संकेत पर, उपरोक्त पते पर छापा मारा गया। दो आरोपी व्यक्ति अर्थात श्रीमती कुलवंत कौर (60 वर्ष) पत्नी श्री देवेन्द्र दूसरी मंजिल, न्यू गोविंदपुरा, दिल्ली और हर्ष दुआ उर्फ लकी (उम्र 43 वर्ष) के साथ 5 महिलाएं वहां मिलीं। आरोपी हर्ष दुआ और कुलवंत कौर सेक्स रैकेट का संचालन कर रहे हैं। पीएस जगतपुरी में आईटीपी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है और जांच की जा रही है।

केजरीवाल जल्द छोड़ेंगे सीएम आवास, नए घर की तलाश तेज

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जब से सरकारी आवास छोड़ने की घोषणा की है, उन्हें और उनके परिवार को रहने के लिए अपना घर देने वाले लोगों की होड़ लग गई है। अरविंद केजरीवाल को चाहने वाले आम आदमी पार्टी के विधायक, पार्षद, कार्यकर्ता और आम नागरिक समेत हर क्षेत्र से जुड़े लोग उनको अपने घर में रहने की पेशकश कर रहे हैं। अपनी सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना दिल्ली के लोगों ने अपना दिल और घर के दरवाजे दोनों अरविंद केजरीवाल के लिए खोल दिए हैं।

कुछ लोगों ने अरविंद केजरीवाल और उनके परिवार को अपने साथ परिवार के साथ रहने का अनुरोध किया है, तो कइयों ने अपने घर का साझा करने की पेशकश की है और कई लोग उनके रहने के लिए अपना खाली घर उपलब्ध करा रहे हैं। अरविंद केजरीवाल को रहने के लिए घर देने की पेशकश पूरी दिल्ली से आई है, जिनमें डिफेंस कॉलोनी, पीतमपुरा, जोर बाग, चाणक्यपुरी, ग्रेटर कैलाश, वसंत विहार और हौज खास समेत अन्य इलाके शामिल हैं।

गौरतलब है कि अरविंद केजरीवाल अपनी पत्नी, बच्चों और बुजुर्ग माता-पिता के साथ रहते हैं और वह ऐसे घर की तलाश में हैं, जहां उनका परिवार आराम से सहूलियत के साथ रह सके। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अपने विधानसभा क्षेत्र यानी नई दिल्ली के पास ही रहने को प्राथमिकता दे रहे हैं। नई दिल्ली विधानसभा से विधायक अरविंद केजरीवाल हमेशा अपने निर्वाचित क्षेत्र से जुड़े रहना चाहते हैं। लिहाजा वह एक ऐसे घर की तलाश में है जो सभी प्रकार की बाधाओं और विवादों से मुक्त हो।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में अब कुछ ही महीने बचे हैं। ऐसे में आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल एक ऐसा घर ढूंढने पर ध्यान दे रहे हैं, जहां से वह अपने समय और संसाधनों का पूरी क्षमता से इस्तेमाल कर सकें और उसमें किसी भी तरह की कोई रूकावट न आए। वह एक ऐसी जगह पर घर की तलाश कर रहे हैं, जहां रहकर वह न केवल अच्छे से अपना काम कर सकें, बल्कि उन्हें विजिट करने और दिल्ली के हर इलाके में रह रहे लोगों से आसानी से जुड़ने में मददगार साबित हो।

पहली पुण्यतिथि पर भारत में हरित क्रांति के जनक महान कृषि वैज्ञानिक पद्मविभूषण स्वर्गीय डॉ.एम.एस स्वामीनाथन को श्रद्धासुमन अर्पित किए

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

शिक्षाविद् डॉ. दयानंद वत्स ने आज समाज के मुख्यालय बरवाला दिल्ली में भारत में हरित क्रांति के जनक महान कृषि वैज्ञानिक पद्मविभूषण स्वर्गीय डॉ. एम.एस स्वामीनाथन की पहली पुण्यतिथि पर उन्हें कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। वत्स ने कहा कि अकाल मुक्त भारत के नव-निर्माण में डा.स्वामीनाथन की अहम् भूमिका सदैव याद रखी जाएगी। गौरतलब है कि भारत में पहले हर साल कहीं ना कहीं अकाल पड़ता था। लोग भुखमरी का शिकार होते थे। ऐसे में डा.स्वामीनाथन ने भारत के दो कृषि मंत्रियों स्वर्गीय श्री सी. सुब्रमण्यम और बाबू जगजीवन के कार्यकाल में ऐसी रणनीति बनाई जिससे भारत में हरित क्रांति का सूत्रपात हुआ और देश ने इसका सारा श्रेय डॉ.एम.एस स्वामीनाथन को दिया। उन्होंने भारत में कृषि अनुसंधान और विकास को नई दिशा देकर देश को खाधान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वत्स ने कहा कि उनके निधन से पूरे भारत के लोग खासतौर से किसानों में शोक की लहर दौड़ गयी है। खेती और किसानी को समर्पित हमारे मसीहा डॉ. एम.एस स्वामीनाथन सचमुच धरती पुत्र वे। बेहद विनम्र और सहृदय व्यक्तित्व के धनी महान कृषि वैज्ञानिक थे। वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और भारत सरकार के कृषि मंत्रालय में प्रधान सचिव भी रहे। उन्हें अनेकों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया था। किसान आंदोलन के समय डॉ.स्वामीनाथन की रिपोर्ट को लागू करने की जोरदार मांग आंदोलन कर रहे किसानों के संगठनों ओर राजनीतिक दलों के नेताओं ने की थी।

बाइक के साथ तीन बदमाश पकड़े

नई दिल्ली। नेब सराय और लोधी कॉलोनी थाना पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों राशिद खान, मुन्ना इलिया और बिट्टू उर्फ विवेक के पास से दो मोबाइल, दो बाइक बरामद हुई है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि 24 सितंबर को संगम विहार इलाके में एक महिला के साथ झपटमारी हुई थी। नेब सराय थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच की और सीसीटीवी कैमरों की मदद से राशिद खान को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के पास से एक बाइक और मोबाइल बरामद हुआ। दूसरे मामले में लोधी कॉलोनी थाना पुलिस ने गश्त के दौरान मुन्ना इलियास को चोरी की बाइक के साथ गिरफ्तार किया।

बंदूक दिखाकर लड़के से चटवाए जूते, मारपीट करने के बाद किया यौन शोषण

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच टीम ने जहांगीरपुरी में एक किशोर के साथ कथित तौर पर यौन उत्पीड़न करने और उसका वीडियो सोशल मीडिया पर साझा करने के आरोप में चार लोगों को गिरफ्तार किया है आरोपियों की पहचान हरीश भाटिया (38), पंकज उर्फ माया (37), अभिषेक कुमार उर्फ अमन (25) और आर्यन कुमार उर्फ मन्नू (22) के रूप में हुई है। इन सभी आरोपियों को क्राइम ब्रांच ने मंगलवार (24 सितंबर) को उत्तर प्रदेश के वृंदावन से गिरफ्तार किया गया। डीसीपी (क्राइम) सतीश कुमार ने बताया कि आरोपियों ने पीड़ित किशोर का यौन उत्पीड़न करने से पहले उसकी पिटाई की और उसे जूते चाटने पर मजबूर किया। उन्होंने बताया कि आरोपियों ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पीड़ित गिरफ्तार आरोपियों में से एक के दुश्मन का रिश्तेदार है। डीसीपी (क्राइम) सतीश कुमार ने बताया कि आरोपियों ने इस विकृत तर्क के साथ पीड़ित किशोर का यौन शोषण किया और उसकी पिटाई की। आरोपियों का तर्क है कि इससे उनके दुश्मन अपमानित महसूस करेंगे और इलाके में उनका वर्चस्व बढ़ेगा। डीसीपी के मुताबिक, पीड़ित किशोर के साथ यह वारदात 4 सितंबर की रात को हुई थी, लेकिन पीड़ित ने 17 सितंबर को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। इसकी वजह यह है कि वह मामले की रिपोर्ट करने के लिए आगे आने से डर रहा था। जहांगीरपुरी निवासी किशोर ने अपनी शिकायत में कहा कि 4 सितंबर की रात को वह घर लौट रहा था, तभी उसे चारों आरोपियों ने रोक लिया। चारों ने कथित तौर पर किशोर की पिटाई की, उसे पैरों से मारा और फिर बंदूक की नोक पर उसे अपने जूते चाटने के लिए मजबूर किया। इसके बाद चारों आरोपियों ने किशोर को अपमानित करने के लिए उसका यौन उत्पीड़न किया। इतना ही नहीं, उन्होंने इस कृत्य का वीडियो अपने फोन से शूट कर लिया और फिर पीड़ित और उसके रिश्तेदारों को नीचा दिखाने के लिए सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया।

एमसीडी में हुए चुनाव के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएगी आम आदमी पार्टी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिश ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) में शुक्रवार को हुए चुनाव को पूरी तरीके से गैर-कानूनी बताया है। उन्होंने एमसीडी की स्थायी समिति के 18वें सदस्य के चुनाव के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही है। सीएम ने शनिवार को कहा, हम इस चुनाव के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करेंगे।

उन्होंने कहा कि एमसीडी में शुक्रवार को भाजपा ने जो चुनाव कराया, वह गैरकानूनी है। एमसीडी का संचालन संसद द्वारा पारित दिल्ली नगर निगम अधिनियम, 1957 के तहत किया जाता है। इस कानून में साफ कहा गया है कि स्थायी समिति के सदस्यों का चुनाव कॉरपोरेशन की बैठक में होगा। उन्होंने आगे कहा, ह्लकॉरपोरेशन की बैठक की तारीख, स्थान और समय केवल और केवल मेयर तय कर सकती हैं। इन बैठकों की अध्यक्षता मेयर या उनकी अनुपस्थिति में डिप्टी मेयर ही कर सकते हैं।

आतिशी ने भारतीय जनता पार्टी पर आरोप लगाते हुए कहा, भाजपा को संविधान और लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाने से कोई फर्क नहीं पड़ता। उपराज्यपाल और भाजपा के आदेश पर एमसीडी कमिश्नर बैठक बुलाते हैं, जबकि उनके पास ऐसा कोई अधिकार ही नहीं है। इसके अलावा वह चुने हुए मेयर या डिप्टी मेयर की जगह चुनाव में एक अधिकारी को पीठासीन अधिकारी बना देते हैं। यह लोकतंत्र और संविधान की हत्या है। आतिशी ने कहा है कि शुक्रवार को भाजपा ने एमसीडी में जो चुनाव कराया है, वह सरासर गैरकानूनी है। हम इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएंगे और आज ही याचिका दाखिल करेंगे।

बता दें कि इस मुद्दे को लेकर आम आदमी पार्टी बीते दो दिन से लगातार भाजपा पर हमलावर है। पार्टी के नेता भाजपा पर असंवैधानिक तरीके से चुनाव कराने का आरोप लगा रहे हैं। उनका कहना है कि भाजपा ने उपराज्यपाल और पुलिस के साथ मिलकर जबरन यह चुनाव करवाया है जबकि दिल्ली की मेयर ने चुनाव 5 सितंबर को करने की बात की थी।

हाशमी लॉ कॉलिज में हुई वाद विवाद प्रतियोगिता

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा।एच एम यू हाशमी लॉ कॉलिज के सभागार में विधिक व्यवसाय में आर्टिफिशयल इन्टेलिजेन्स के महत्व विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके निर्णायक मण्डल में न01 डा0 मौ0 तारिक, डा0 मौ0 इफितेखार अली, डा0 मौहम्मद हारुन, शामिल रहे प्रथम पुरुस्कार प्राप्त करने वालो में बी0ए0एलएल0 बी0 प्रथम वर्ष की छात्रा कु0 रोजाऩ, द्वितीय पुरुस्कार बी0 ए0 एलएल0 बी0 सातवें सेमेस्टर की छात्रा सोफिया खान, तथा तृतीय पुरुस्कार संयुक्त रुप से बी0 ए0 एलएल0बी0 प्रथम सेमेस्टर की छात्रा सिदरा बतूल एंव बी0ए0 एलएल0 बी0 पाचवें सेमेस्टर की छात्रा कशिश अग्रवाल को मिला।महाविद्यालय के चेयरमेन डा0 बुरहान उददीन हाशमी एंव प्राचार्या डा0 राना परवीन द्वारा सभी विजेताओं को मोमेन्टो एंव प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।सभी प्रतिभागियों ने निष्कर्ष रुप में प्रभावशाली रुप से कहा कि विधि व्यवसाय में विशेष तौर से आज के वर्तमान परिप्रेक्ष में करोड़ो लम्बित वादों को निबटाने के लिए ए0 आई0 का प्रयोग मील का पत्थर के समान है तथा आई0 पी0 आर0 के क्षेत्र में, ऐग्रिमेन्ट, पुलिस जॉच, केस कमेन्ट करने में, तथा वाद निर्णय आदि में निर्णायक भूमिका निभाऐंगा।प्रतियोगिता का संचालन महाविद्यालय के असि0 प्रोफेसर डा0 शहजाद़ सिददीकी. ने किया कार्यक्रम में मुख्य रुप से डा0 रिपु दमन प्रताप सिंह, डा0 नूतन गुप्ता, फरहत मंसूरी, गुफरान अजीम़, तथा सुरेश कुमार जैन आदि मौजूद रहे।

सभासद सतेंदर सैनी ने सफाई अभियान में दिया अपना पूरा सहयोग

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा।स्वच्छता को प्रमुखता देते हुए पालिका अध्यक्ष फैसल वारसी व ईओ विजेन्द्र सिंह पाल के दिशा निर्देश पर नगर पालिका कर्मचारी द्वारा नगर के सभी वार्डो में स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत लोगो को जागरूक किया जा रहा है। तो वही जागरूकता रैलिया भी निकलने का सिलसिला जारी है।इसी के चलते नगर के वार्ड न. 25 के सभासद व समाजसेवी सतेंद्र सैनी ने भी इस अभियान में अपनी अहम भूमिका निभाते हुए नगर पालिका कर्मचारियों के साथ वार्ड में साफ सफाई अभियान चलाया।जिसमे वार्ड सभासद सतेंद्र सैनी ने कर्मचारियों के साथ मिलकर खुद वार्ड में सफाई अभियान में श्रमदान किया। सभासद सतेंद्र सैनी ने अपने वार्ड वासियों के साथ साथ नगर की जनता से भी अपील की है की अपने वार्ड ओर अपने नगर को साफ रखने में नगरपालिका का पूरा सहयोग करे कोई भी अपने घर का कूड़ा करकट सड़क पर ना डाले जब सुबह को नगरपालिका की कचरे की गाड़ी मौहल्ले में आये तभी कचरा गाड़ी में ही डाले।

घर छोड़कर गई पत्नी पर ब्लेड और चाकू से वार

नई दिल्ली। नरेला औद्योगिक क्षेत्र में एक शख्स ने घर छोड़कर जाने पर नाबालिग पत्नी की जमकर पिटाई की। साथ ही चेहरे पर ब्लेड और चाकू से वारकर घायल कर दिया। आसपास के लोगों के आने की वजह से पीड़िता की जान बच गई। पुलिस ने गुरुवार को दुष्कर्म, पोक्सो और हत्या के प्रयास की धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया है। जानकारी के अनुसार, 17 वर्षीय पीड़िता परिवार सहित नरेला इलाके में रहती है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि वर्ष 2022 में 10वीं की पढ़ाई के दौरान ट्यूशन आते-जाते समय शफीक नाम के युवक से मुलाकात हुई थी। शफीक किशोरी से दोस्ती कर अपने घर ले गया, जहां दुष्कर्म किया। फिर बीते साल दोनों ने शादी कर ली। पीड़िता ने बताया कि वह शफीक के साथ उसके घर पर रहने लगी, लेकिन कुछ समय बाद वह नशे और जुए का आदी हो गया। इसकी वजह से आए दिन वह पीड़िता की पिटाई करता था। 21 सितंबर को शफीक जुए में हार कर लौटा तो उसने पीड़िता की जमकर पिटाई की। इसके बाद वह मायके में रहने के लिए चली गई। बताया जाता है

स्मैक की लत से मजबूर 8 साल की बच्ची को किया किडनैप

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

साउथ डिस्ट्रिक्ट के फतेहपुर बेरी थाना पुलिस ने फिरौती के लिए किडनैप की गई 8 साल की बच्ची को बिहार में चलती ट्रेन से बरामद कर लिया है। पुलिस ने चलती ट्रेन में ट्रैक करके बिहार रेलवे पुलिस की मदद से अपहरणकर्ता को भी गिरफ्तार कर लिया है। उसकी पहचान समस्तीपुर, बिहार के रहने वाले रोहित के रूप में हुई है। जल्द रुपये कमाने के लिए उसने इस वारदात को अंजाम दिया था।

डीसीपी साउथ अंकित चौहान ने बताया कि 23 सितंबर को फतेहपुर बेरी के जोनापुर निवासी शख्स जो मूल रूप से गांव खैराबाद, उन्नाव के रहने वाले हैं, ने थाना फतेहपुर बेरी में शिकायत दी थी। बताया कि वह 8 साल की बेटी के साथ रहते हैं, पत्नी की मौत पहले ही हो चुकी है। शाम करीब 7 बजे जब वह काम से घर लौटे तो उनकी बेटी गायब मिली। उन्होंने इलाके में तलाश की, लेकिन कुछ पता नहीं चला। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। इंस्पेक्टर ऋषिकेश, एसआई नसीब सिंह, राज कुमार शर्मा की टीम ने बच्ची की डिटेल जिपनेट पर अपलोड कर टीम को पार्क, सुनसान इलाकों, गोदामों आदि में तलाशी शुरू की। पड़ोसी पुलिस स्टेशनों से भी पूछताछ की गई। टीम ने शिकायतकर्ता के घर के आसपास के सीसीटीवी फुटेज चेक किया और उसकी जांच में टीम पता लगाने में कामयाब रही। सीसीटीवी में लाल और काले रंग की चेक शर्ट से आरोपी की पहचान हुई। जो लाल और काले रंग की चेक शर्ट और हाफ पैंट पहने उस लड़की को अपने साथ ले जाता हुआ दिखा। उसकी पहचान रोहित के रूप में हुई।

कोरोना महामारी के दौरान जान गंवाने वाले 5 कोरोना योद्धाओं के परिवारों को 1-1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देगी दिल्ली सरकार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली सरकार कोरोना महामारी के दौरान अपनी जान गंवाने वाले 5 कोरोना योद्धाओं के परिवारों को 1-1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देगी। मुख्यमंत्री आतिशी द्वारा इसे मंजूरी दी गई। इस मौके पर मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली के कोरोना योद्धाओं ने महामारी के दौरान अपनी जान की परवाह किए बिना मानवता और समाज की रक्षा करने का काम किया और अपने जीवन का बलिदान दियो उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार इनके जज्बे को सलाम करती है। बेशक इस राशि से दिवंगत कोरोना योद्धाओं के परिवार के नुकसान की पूर्ति तो नहीं की जा सकती लेकिन उनके परिवार को एक सम्मानजनक जीवन जीने का जरिया जरूर मिलेगा।

मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि कोरोना महामारी पूरी मानवता के लिए एक भयानक संकट थी इस संकट ने सभी के मन में डर भय पैदा कर दिया था लेकिन हमारे कोरोना योद्धाओं ने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए दिल्ली को इस संकट से उबारने का काम कियो डॉक्टर, मेडिकल स्टाफ, सहायक स्टाफ, सफाई-कर्मचारियों सहित हजारों कोरोना योद्धाओं ने दिन-रात काम करते हुए इस महामारी से लड़ने का काम कियो और कई कोरोना योद्धा लोगों की सेवा करते हुए शहीद हो गए उन्होंने कहा कि,सरकार हमेशा कोरोना योद्धाओं के परिवारों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। दिल्ली सरकार की ये योजना कोरोना योद्धाओं के परिवार को ये आत्मविश्वास देती है कि सरकार और समाज हमेशा उनके साथ है।

बता दे कि, अपनी इस योजना के अंतर्गत दिल्ली सरकार अबतक 92 योद्धाओं के परिवारों को 1-1 करोड़ रुपये की सहायता सम्मान राशि दे चुकी है।

दिवंगत कोरोना योद्धा जिनके परिवारों को मिलेगी 1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि

1. श्री संजय मनचंदा, फार्मासिस्ट एसडीएमसी- श्री संजय मनचंदा कोरोना के दौरान के पेशेंट केयर फैसिलिटी में बतौर फार्मासिस्ट तैनात थे। साथ ही वो आशा वर्कर्स व एएनएम के साथ कंटेनमेंट जोन में भी विजिट करते थे। ड्यूटी के दौरान ही वो कोरोना से संक्रमित हुए और कुछ दिनों बाद उनका देहांत हो गया।

2. श्री रवि कुमार सिंह, जूनियर असिस्टेंट, मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज- श्री रवि कुमार मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में बतौर जूनियर असिस्टेंट तैनात थे। यहाँ ड्यूटी पर रहते हुए वो कोरोना संक्रमित हुए और उनका देहांत हो गया। दिल्ली सरकार ने उनके परिवार को 1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देने की घोषणा की है।

3. श्री वीरेंद्र कुमार, सफाई कर्मचारी- श्री वीरेंद्र कुमार कोरोना के दौरान एक हंगर रिलीफ सेंटर में साफ-सफाई का काम देखते थे। ड्यूटी के दौरान वो कोरोना संक्रमित हुए और कुछ समय बाद उनका देहांत हो गया। दिल्ली सरकार ने उनके परिवार को 1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देने की घोषणा की है।

4. श्री भवानी चंद्र, एएसआई, दिल्ली पुलिस- श्री भवानी चंद्र, कोरोना में लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात थे। ड्यूटी पर रहते हुए वो कोरोना से संक्रमित हुए और उनका देहांत हो गया। दिल्ली सरकार ने उनके परिवार को 1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देने की घोषणा की है।

5. श्री मो.यासीन, प्राइमरी टीचर, एमसीडी- कोरोना के दौरान मो.यासीन राशन डिस्ट्रीब्यूशन की ड्यूटी पर तैनात थे। इसी दौरान किसी संक्रमित के संपर्क में आने के बाद उन्हें भी संक्रमण हुआ और कुछ समय बाद उनका देहांत हो गया। दिल्ली सरकार ने उनके परिवार को 1 करोड़ रुपए की सम्मान राशि देने की घोषणा की है।

दिल्ली में वायु प्रदूषण को कंट्रोल करने के लिए सात अक्टूबर से सात नवंबर एंटी डस्ट कैंपेन चलाएगी आप सरकार- गोपाल राय

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली सरकार विंटर एक्शन प्लान के तहत सात अक्टूबर से सात नवंबर तक एंटी डस्ट कैंपेन चलाएगी। शनिवार को यह जानकारी देते हुए पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि इस कैंपेन के तहत पूरी दिल्ली में निगरानी के लिए 13 विभागों की 523 टीमें तैनात की गई हैं। सीएंडडी पोर्टल पर 500 वर्ग मीटर से अधिक वाले सभी निर्माण साइट्स को पंजीकरण करना अनिवार्य कर दिया गया है। सभी विभागों को सीएंडडी साइट्स का निरीक्षण करने और कंस्ट्रक्शन साइटों पर निर्माण संबंधी जारी 14 दिशा-निदेर्शों के उल्लंघन पर कार्रवाई की जाएगी। धूल प्रदूषण को रोकने के लिए 85 मैकेनिकल रोड स्वीपिंग (एमआरएस) मशीनें और 500 वॉटर स्प्रिंकलर तैनात की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि पर्यावरण नियमों का पालन करते हुए उत्कृष्ट कार्य करने वाली निर्माण एजेंसी/विभाग को हरित रत्न अवार्ड दिया जाएगा।

गोपाल राय ने बताया कि दिल्ली सरकार द्वारा उठाए गए कड़े कदमों की वजह से दिल्ली में वायु प्रदूषण में लगातार सुधार हो रहा है। दिल्ली सरकार द्वारा उठाए गए कदमो के कारण पिछले 9 सालों में दिल्ली के वायु प्रदूषण में 34.6 फीसद की कमी देखी गई है। सर्दियों के मौसम में होने वाले प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए 25 सितंबर को 21 फोकस प्वाइंट पर आधारित विंटर एक्शन प्लान की घोषणा की गई थी। दिल्ली में वायु प्रदूषण में और सुधार लाने के लिए विंटर एक्शन प्लान के तहत हमारी सरकार 7 अक्टूबर से अगले एक महीने के लिए दिल्ली में एंटी डस्ट कैंपेन शुरू कर रही है।

निगरानी करेंगी 523 टीमें

गोपाल राय ने बताया कि एंटी डस्ट कैंपेन के तहत पूरी दिल्ली में निगरानी को लेकर 13 विभागों की 523 टीमों की तैनाती की जा रही है। ये टीमें 24 घंटे दिल्ली में डस्ट प्रदूषण की घटनाओ की निगरानी और उसे रोकने का काम करेंगी। जिसकी रिपोर्ट समय-समय पर पर्यावरण विभाग और डीपीसीसी के साथ साझा की जाएगी।

सीएंडडी साइट्स का पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन अनिवार्य

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि कंस्ट्रक्शन साइट्स से पैदा होने वाला धूल प्रदूषण लोगो के स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक साबित होता है। इसी दिशा में कार्य करने के लिए कंस्ट्रक्शन एंड डेमोलिशन पोर्टल को लांच किया गया था। इस पोर्टल पर 500 वर्ग मीटर से अधिक सभी साइट्स का खुद रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है। इस अभियान के तहत यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी सक्रिय सीएंडडी साइटें पोर्टल पर पंजीकृत हो जाएं और डीपीसीसी द्वारा पोर्टल पर रजिस्टर्ड सभी पंजीकृत साइट्स की सेल्फ अस्सेस्मेंट रिपोर्ट की समीक्षा का कार्य किया जाएगा।

एंटी स्मॉग गन, एमआरएस व वॉटर स्प्रिंकलर की तैनाती

मंत्री गोपाल राय ने कहा कि डस्ट प्रदूषण को रोकने के लिए 85 मैकेनिकल रोड स्वीपिंग (एमआरएस) मशीनों, 500 वॉटर स्प्रिंकलर की पूरी दिल्ली में तैनाती की जा रही है। नवंबर में एक शिफ्ट से बढ़ाकर तीन शिफ्टों में मोबाइल एंटी स्मॉग गन की सड़कों पर तैनाती होगी। इसके लिए 200 मोबाइल एंटी स्मॉग गन लगाए जाएंगे।

निर्माण संबंधी 14 नियमों का पालन जरूरी

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि सभी कंस्ट्रक्शन साइटों पर निर्माण संबंधी जारी 14 नियमों को लागू करना अनिवार्य है। इसके लिए विभागों को निर्माण साइट्स की लगातार निगरानी करने के निर्देश जारी किए गए है। कंस्ट्रक्शन साइटों पर नियम उल्लंघन होने पर विभाग द्वारा कार्रवाई की जाएगी।

कंस्ट्रक्शन साइटों पर निर्माण के लिए तय किए गए नियम

1. सभी निर्माण साइटों पर निर्माण स्थल के चारों तरफ धूल रोकने के लिए ऊंची टीन की दीवार खड़ी करना जरूरी है।

2. धूल प्रदूषण को लेकर पहले केवल 20 हजार वर्ग मीटर से ऊपर के निर्माण साईट पर ही एंटी स्मोग गन लगाने का नियम था। अब नए नियम के आधार पर 5 हजार वर्गमीटर से लेकर उससे अधिक के एरिया के निर्माण साइट पर एंटी स्मोग गन लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। 5 हजार से 10 हजार वर्ग मीटर की निर्माण साईट पर 1 एंटी स्मॉग गन, 10 हजार से 15 हजार वर्ग मीटर साइट पर 2, 15 हजार से 20 हजार वर्ग मीटर की निर्माण साइट पर 3 और 20 हजार वर्ग मीटर से ऊपर की निर्माण साइट पर कम से कम 4 एंटी स्मॉग गन होनी चाहिए।

संक्षिप्त खबरें

दो लोगों के द्वारा मारपीट कर घायल कर दिए जाने पर रेफरल अस्पताल में हुआ इलाज

जमुई [झाझा] बरमसिया गांव में सड़क पर बैठे लोगों से बाइक लेकर जाने के लिए रास्ता मांगने पर एक युवक के साथ शुक्रवार की रात्रि लगभग 9 बजे दो लोगों के द्वारा मारपीट कर घायल कर दिया गया। घायल की पहचान बरमसिया गांव के रहने वाले मो.शमशेर के रूप में हुई है। घायल का इलाज रेफरल अस्पताल झाझा में किया गया। घायल युवक ने बताया कि विशाल यादव और गौतम यादव ने मेरे साथ मारपीट किया। घायल ने बताया कि थाना में भी मारपीट की हुई घटना की जानकारी दे दी गई है।

तीन पाली में सफाई करेंगे स्वच्छता कर्मी : बीडीओ सदर

मुंगेर। भारी बाढ़ के कारण लोग अपना घर वार छोड़कर अपने जान माल के साथ शिविर में शरण लिए हुए हैं। वही स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी सदर मुंगेर आरके राघव ने पत्र जारी कर नौवागढ़ी दक्षिणी तथा नौवागढ़ी उत्तरी पंचायत के स्वच्छता कमी को नौवागढ़ी उच्च विद्यालय तथा मध्य विद्यालय के शिविर में सफाई हेतु तीन पाली में बांटकर उन्हें स्वच्छता ध्यान में रखते हुए सफाई हेतु आदेश जारी किए हैं। ताकि शिविर में लोगों को किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो और कोई भी गंदगी के कारण बीमारी का शिकार ना हो। वही नौवागढ़ी दक्षिणी पंचायत के स्वच्छता पर्यवेक्षक श्रवण कुमार द्वारा बताया गया कि हम लोग स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए अपने स्वच्छता कमी से शिविर में सफाई हेतु तात्पर्य है और सफाई किया जा रहा है।

विद्यालय में चोरी की हुई वारदात

जमुई [झाझा] अज्ञात चोरो के द्वारा प्रखंड क्षेत्र स्थित प्राथमिक विद्यालय बांझीकुसुम का ताला तोड़कर हजारो रूपए की सामग्री की चोरी कर लिए जाने का मामला थाना में दर्ज कि गई है। इस संदर्भ में विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक कपिलदेव यादव ने थाना में दिए गए आवेदन में बताया कि अज्ञात चोरो के द्वारा विद्यालय का समरसेबुल पंप, एक कमरे में मध्याहन भोजन के लिए रखे पांच बोरा चावल, चार टेबुल, दो पंखा सहित अन्य सामग्री की चोरी कर ली है।

महिला की संदिग्ध स्थिति में हुई मौत, मिला सल्फास का डिब्बा, पुलिस मामले की जांच में जुटी

मृतिका के पुत्री ने अपने पिता- भाभी के अवैध संबंध में हत्या होने की जताई आशंका

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] घरेलू विवाद में झाझा थानाक्षेत्र अंतर्गत बलियो गांव में एक महिला की संदिग्ध स्थिती में मौत हो गई। घटना स्थल पर सल्फास का डिब्बा भी मिला है। मृत महिला की पहचान बालदेव यादव की 55 वर्षीय पत्नी संपतिया देवी के रूप में हुई। घटना शनिवार की अहले सुबह लगभग 4 बजे की बताई गई है। वही काफी देर के बाद घटना की जानकारी झाझा पुलिस को ग्रामीणों के द्वारा दिया गया। सूचना मिलने के बाद एसआई नंदन कुमार पुलिस बल के साथ उक्त गांव पहुंचकर मृतिका के शव को अपने कब्जें में लिया और घर वालों से पूछताछ करते हुए घटना स्थल पर छानबीन किया तो सल्फास की गोली से भरा एक डिब्बा मिला। वही पुलिस घर वालों से संपर्क किया गया तो घर में मृतिका के पति, पुत्र और पुत्रवधु फरार था सिर्फ घर पर एक पोती थी। जिससे पुलिस ने मामले की पूरी जानकारी लिया। पूछताछ के बाद पुलिस ने शव को कब्जें में लेने के बाद कागजी कार्रवाई पूरी करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल जमुई भेज दिया और हर बिंदुओं पर पूछताछ करते हुए जांच पड़ताल करने में जुट चुकी है। मुखिया प्रतिनिधि दीनदयाल साह ने बताया कि शनिवार की सुबह गांव में जमीन विवाद को लेकर एक घर में पंचायती के लिए आया तो पता चला कि महिला संपतिया देवी जहर खा ली जिसके बाद मै वहां पहुंचा तो घर में सिर्फ बच्चे थे और घर पर कोई नही था। मृतिका के पोती बंटी कुमारी ने बताया कि मेरी दादी जहर खा लिया। पोती ने बताया कि मेरी दादी को शक था कि मेरी मां और मेरे दादा के बीच प्रेम प्रसंग है और इस बात को लेकर दादी ने पूरे गांव में भी हल्ला कर दिया था। फिर घर में दादी और मेरे पापा संजय कुमार के बीच घरेलू विवाद हुआ जिसके बाद मेरी दादी जहर खा ली और जब मेरी नजर उसपर पड़ी तो मैने जहर छिनकर फेंका और फिर शुक्रवार को मेरी दादी बाजार से जहर लाई और फिर दुबारा खा ली जिससे उसकी जान चली गई। बेटी ललीता देवी ने बताया कि मेरी मां के साथ हमेशा मेरे पिता, भाई, भाभी के द्वारा मारपीट किया जाता है जिसकी जानकारी मेरी मां के द्वारा कई बार बताया गया। ललीता देवी ने बताया कि मेरी मां को घर में मुझसे बात नही करने दिया जाता था इसलिए वे दूसरे गांव में दूसरे मोबाइल से संपर्क कर मुझे हर बात की जानकारी देती रहती थी। मृतिका के पुत्री ने बताया कि मेरी भाभी और मेरे पिता में बीते दस साल से अवैध संबंध था जिसका विरोध मेरी मां किया करती थी। विरोध का नतीजा यह है कि तीनो मिलकर मेरी मां को जहर देकर मार दिया है। हालांकि मृतिका के किसी भी परिजनों के द्वारा देर दोपहर तक थाना में आवेदन नही दिया है।

मुंगेर जिले के स्वच्छता कर्मियों ने पंचायती राज मंत्री को सौंपा मांग- पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । बिहार प्रदेश स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी संघ, बिहार के प्रदेश अध्यक्ष सह मुंगेर प्रखंड अंतर्गत नौवागढ़ी दक्षिणी पंचायत के स्वच्छता पर्यवेक्षक श्रवण कुमार के नेतृत्व में परी सदन मुंगेर में स्वच्छता कर्मियों का एक प्रतिनिधिमंडल ने मुंगेर के बिहार सरकार के पंचायती राज मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान संघ के प्रदेश अध्यक्ष ने मंत्री को अपनी 5 मांगों से संबंधित एक मांग- पत्र सौंपा। मांग पत्र में स्वच्छता कर्मियों ने कहा है कि, हमारे नियुक्ति संविदा के आधार पर हुई है। परंतु, संविदा के मापदंडों का लाभ हमें नहीं मिल रहा है।

हमें संविदा से संबंधित एवं मापदंडों के अनुरूप सभी तरह के लाभ दिए जाएं और हमें उचित मानदेय दिया जाए।। हमें जो मानदेय दिया जा रहा है वह हमारे कार्यों को देखते हुए काफी कम है। हम सभी स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी हमेशा आर्थिक कठिनाइयों से घिरे रहते हैं। ऐसे में पूर्व में पंचायत राज विभाग द्वारा निर्गत पत्र के आलोक में हमारा मानदेय बढ़ाकर 20000 रुपया किया जाए। इसके साथ ही सरकार द्वारा पूर्व में जारी पत्र के अनुसार हमारे बैठने की व्यवस्था पंचायत सरकार भवन अथवा पंचायत भवन में किया जाए। इसके अतिरिक्त पत्र में कहा गया है कि, हमारा काम साफ- सफाई का है। इस क्रम में हम गंदगी से घिरे रहते हैं। ऐसे में स्वच्छता पर्यवेक्षकों एवं स्वच्छता कर्मियों को विभिन्न तरह का भयंकर बीमारी होने का खतरा बना रहता है। इसलिए, कार्य की प्रकृति एवं उससे होने वाले विभिन्न बीमारियों के खतरों को देखते हुए हमारा हेल्थ कार्ड बनाया जाए। वही मौके पर उपस्थित एमएलसी लाल मोहन गुप्ता मुंगेर विधायक प्रणव कुमार आपकी आपकी मांग जायज है। इसे हम लोग आगे और मजबूती देने का काम करेंगे।

पूर्व जदयू प्रखंड अध्यक्ष का निधन

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। पूर्व जदयू प्रखंड अध्यक्ष व गिद्धौर निवासी जकीर खां का निधन बीते रात्रि हो गया। वे 65 वर्ष के थे। उनके निधन से प्रखंड भर में जदयू कार्यकताओं के बीच शोक की लहर व्याप्त है। बताया जाता है कि जकीर खां मृदुभाषी स्वभाव के व्यक्ति थे एवं प्रखंड क्षेत्र जदयू पार्टी को मजबूती प्रदान करने में अपनी मजबूत भूमिका निभाया करते थे। बीते कुछ दिनों से अस्वस्थ्य चल रहे थे, जिन्होंने अपने पैतृक आवास पर अंतिम सांस ली। उनके निधन पर झाझा विधायक दामोदर रावत,जदयू नेता शैलेंद्र कुमार,जदयू नेता दिनेश मंडल,पतसंडा मुखिया ललिता देवी,देवेन्द्र रावत,जसीम खां,कैप्टन रावत,वर्तमान जदयू प्रखंड अध्यक्ष विवेका सिंह,पतसंडा पंचायत के पैक्स अध्यक्ष राजीव कुमार साव,समाजसेवी गुरुदत्त प्रसाद,पन्ना सिंह,झुन्नू खां सहित कई समाजसेवियों व जदयू नेताओं ने उनके निधन पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है।

दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण तरीके से मनाने हेतु बटिया थाना में शांति समिति की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई : दुर्गा पूजा को शांति पुर्वक व सोहार्द पूर्ण वातावरण में मनाने के लिए शुक्रवार को बटिया थाना परिसर में थानाध्यक्ष श्रीमती नितु कुमारी की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई । जहाँ पर दहियारी , गंदर एवं नैयाडीह पंचायत के बडी. संख्या में लोग उपस्थित हुए । बैठक में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई । साथ ही विभिन्न पंचायतों से आये हुए लोगों ने भी कई प्रकार के महत्वपूर्ण जानकारियां दी । बैठक में मेला परिसर में विशेष सुरक्षा व्यवस्था बहाल करने पर विचार विमर्श किया गया । इसके अलावा वैष्णवी दुर्गा मंदिर बटिया में बड़ी संख्या में होने वाली भीड़ को लेकर विशेष सुरक्षा व्यवस्था की चर्चा की गई । बैठक में साफ शब्दों में कहा गया है कि बिना लाइसेंस के मुर्ति की स्थापना नहीं की जायेगी एवं डीजे बजाने पर पुर्ण प्रतिबंध रहेगा । साथ ही पुजा के दौरान लगाये गये पंडालों को मजबूत और सुरक्षित स्थानों पर लगाने का निर्देश दिया गया । पूजा के दौरान अस्लील एवं भोजपुरी गानों पर पाबंदी लगाई गई है । पूजा समिति द्वारा सभी कमिटी सदस्यों का फोटो , आधार कार्ड एवं मोबाइल नंबर यथा शीघ्र उपलब्ध कराकर थाना में जमा कराने का निर्देश दिया गया , ताकि प्रशासन द्वारा गठित टीम के सदस्य मेला क्षेत्र में भ्रमण करते हुए शांति और सोहार्द बनाने एवं प्रशासन को सहयोग करने का काम करेंगे । मेला क्षेत्र में बड़ी संख्या में पुलिस बलों की तैनाती की जायेगी । पूजा के दौरान शराबियों ओर उपद्रव फेलाने वाले लोगों को किसी भी किमत पर बख्शा नहीं जायेगा । बैठक में बटिया बाजार निवासी सह दुर्गा मंदिर बटिया के अध्यक्ष लालु प्रसाद बरनवाल , गंदर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सुनिल रविदास , दहियारी पंचायत के मुखिया भीम रजक , दहियारी पैक्स सुखदेव प्रसाद यादव , गंदर पंचायत के पंचायत समिति सदस्य , नैयाडीह पंचायत के समाज सेवी सहदेव यादव के अलावा मोहन बरनवाल , आशीष बरनवाल , प्रमोद बरनवाल , शिक्षक रंजित प्रसाद यादव , श्रवण सिंह , अनुज सिंह , ललन बरनवाल , मो0 इस्लाम , बासुदेव यादव , निरंजन सिंह , मजहार आलम , मनोज सिंह सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद थे ।

नदी में डूबे व्यक्ति का शव बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) । प्रखंड क्षेत्र के कटियारी पंचायत के बिरजपुर गांव के एक व्यक्ति का मुहाने नदी में डूब कर मृत्यु हो गई। मृतक की पहचान 65 वर्षीय सुरेन पासवान के रूप में हुई है।परिजनों के द्वारा मृतक का दाह संस्कार शनिवार को कर दिया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार को दिन की 11:00 बजे बिरजपुर निवासी सुरेन पासवान अपने धान की फसल को देखने के लिए मुहाने नदी पर बने पुल से होकर बागमरा बहियार गया हुआ था। बहियार से लौटने के क्रम में सुरेंद्र पासवान कम समय और कम दूरी में घर पहुंचने की मकसद से नदी में घुसकर नदी को पार करने लगा। परंतु तेज धार की वजह से उनका संतुलन बिगड़ गया और वह नदी की तेजधार में बह गए। ग्रामीणों को इसकी सूचना मिलने पर ग्रामीणों ने अपने ही स्तर से नदी में घुसकर उनकी खोज प्रारंभ कर दी परंतु शुक्रवार की देर संध्या तक उनका कोई पता नहीं चला। शनिवार को दिन के लगभग 9:00 बजे ग्रामीणों के द्वारा मुहाने नदी की झाड़ी में इनके शव देखा गया। ग्रामीणों ने नदी से शव को निकाल कर घर लाया। परिजनों ने पोस्टमार्टम की इच्छा नहीं जताई एवं मृतक का दाह संस्कार कर दिया । ग्रामीणों के अनुसार मृतक सुरेन पासवान बंगाल की दुगार्पुर में कोलियरी में नौकरी करता था। 5 वर्ष पूर्व रिटायर होने के बाद घर पर रहकर ही खेती-बाड़ी करता था।मृतक के घर में उसके पत्नी के अलावे दो पुत्र जिसकी शादी हो चुकी है एक अविवाहित पुत्री है।

जनता दरबार का आयोजन, एक मामले का निष्पादन

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर(मुंगेर)। भूमि संबंधित विवाद को स्थानीय स्तर पर निपटने के उद्देश्य से शनिवार को संग्रामपुर थाना परिसर में आयोजित जनता दरबार में एक मामले का निपटारा दोनों पक्षों की सहमति से एवं प्रस्तुत किए गए दस्तावेज के आधार पर कर दी गई। शनिवार को संग्रामपुर थाना परिसर में अंचलाधिकारी निशीथ नंदन की अध्यक्षता में आयोजित जनता दरबार में पूर्व के एक मामले एवं शनिवार को प्राप्त हुए पांच मामलों सहित कल 6 मामले पर सुनवाई की गई। थाना क्षेत्र के पृथ्वी चक गांव के एक मामले की सुनवाई करने के दौरान दोनों पक्ष भूमि पर अपना दावा कायम कर रहे थे। दोनों के द्वारा जमीन का मालिकाना हक उनके नाम पर होने की बात खतियान के आधार पर कही जा रही थी। अंचलाधिकारी ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद एवं प्रस्तुत किए गए दस्तावेज को देखने के उपरांत दोनों पक्षों को जमाबंदी के आधार पर अपनी अपनी जमीन पर कायम रहने का निर्देश दिया। दोनों पक्ष इसको लेकर सहमत हो गए। बाकी बचे पांच मामलों की सुनवाई में किसी पक्ष के नहीं उपस्थित रहने एवं दस्तावेज की कमी की वजह से मामले को अगले जनता दरबार में अग्रसारित कर दिया गया।

जमीन से जुड़े दस्तावेज को पढ़ने में हो रही है परेशानी

भूमि सर्वे: 60 से 70 साल पुराने जमीन के अधिकांश दस्तावेज कैथी भाषा में

प्रात : किरण संवाददाता

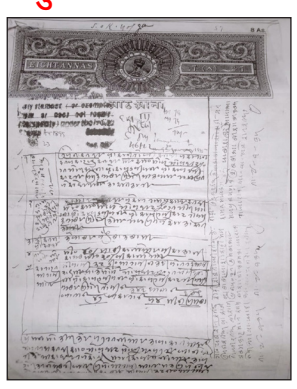

गिद्धौर। जमीन विवाद का जड़ से निपटारा करने के उद्देश्य से जमीन सर्वे का काम चल रहा है।इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं लेकिन कुछ ऐसे कारण है। जिसके चलते लोगों को परेशानी बढ़ी है। कैथी हिंदी केवाला की बात हो या मौखिक बदलने की जमीन की। इन मामले में ज्यादा फजीहत हो रही है। हर गांव में ऐसी जमीन बड़ी मात्रा में है। जो जमीन किसी के नाम से है और सहमति से जोत कोई और रहा है। दोनों पक्षों के चाहने के बाद भी काम नहीं बन रहा है। सर्वे के अधिकारी कर्मचारी केवाला मांग रहे हैं। एक और परेशानी यह आ रही है कि किसी खाते की जमीन खाते में डेबिट तो है लेकिन डेबिट होने का आधार नहीं मिल रहा। साक्ष्य के रूप में 60-70 साल पुराना केवाला प्रस्तुत हो रहा है, लेकिन डीड कैथी हिंदी भाषा में लिखा हुआ मिल रहा है। जमुई जिले में कैथी भाषा को ट्रांसलेट करने वाले बहुत कम लोग हैं जो लोग हैं। उन लोगों के पास काफी भीड़ लग रहा है।इससे न सिर्फ रैयतों को दिक्कत हो रही है बल्कि सर्वे करने वाले कर्मियों को भी परेशानी हो रही है।जमीन सर्वेयर अंकित कुमार ने कहा है कि सर्वे को लेकर लगातार रैयतों को जागरूक किया जा रहा है। रैयतों को कोई परेशानी नहीं हो, इसके लिए विभाग कई सहूलियत प्रदान किया है। जमीन के पुराने दस्तावेज अधिकांश कैथी भाषा में बताया जाता है कि अंग्रेजी शासन काल में कैथी भाषा को आधिकारिक रूप से सरकारी और न्यायालय में कामकाज करने के लिए लागू कर दिया गया था,इसलिए पहले के कैडस्टल सर्वे (सीएस) के खतियान,जमीन की रजिस्ट्री, जमींदारों द्वारा किसानों को दिया गया। हुकुमनामा या पटा, दान पत्र, जमीन की बदलेन, पुराना लगन रसीद आदि कागजात कैथी भाषा में ही लिखे गए हैं। कई न्यायालय के आदेश कैथी में ही है। अब कैथी हिंदी उपयोग में नहीं है और इसे पढ़ने वाले बेहद कम ही लोग हैं। सर्वे करने वाले अधिकारी या अमीन को भी इस भाषा की जानकारी नहीं है। इस समस्याओं को लेकर वैसे रैयत काफी परेशान है,जिनके अभिलेख 60-70 साल पहले के हैं।थोड़ा भी अड़चन आने पर उन्हें इसे ट्रांसलेट करने के लिए भटकना पड़ रहा है। जरूरत पड़ने पर किसान अनुवाद कराते हैं और इसके लिए उन्हें काफी पैसा खर्च करना पड़ता है।

पोषण सप्ताह मेले का हुआ आयोजन

किशोरियों के बीच मोटे अनाज से बने व्यंजन किये गये वितरित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर:- प्रखंड के कोल्हुआ पंचायत अंतर्गत पड़ने वाले सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर पोषण माह के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया है।इस दौरान आंगनबाड़ी केंद्रों पर पर्यवेक्षिका सोनी रेखा की अगुआई में दर्जनों फलदार पौधे का रोपण भी किया गया। आंगबाड़ी सेविका व सहायिकाओ ने भी अपने अपने केंद्रों पर अपनी मां के नाम एक एक फलदार पौधा लगाया।आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते पर्यवेक्षिका सोनी रेखा ने पोषक क्षेत्र की उपस्थित महिलाओं,बालिकाओं व ग्रामीणों से कहा कि आज के वर्तमान समय में मोटे अनाज से बने आहार को लोग अपने जीवन शैली से त्याग रहे है।जिसकी वजह से खासकर महिलाएं और किशोरियों को एनिमियां बीमारी से जूझना पड़ रहा है।सोनी रेखा ने सभी महिलाओं और किशोरियों से अपने अपने घरों में सुबह और शाम मोटे अनाज के सेवन करने को लेकर जागरूक किया। व किशोरियों के बीच मोटे अनाज से तैयार व्यंजन का वितरण भी किया गया। इस दौरान ग्रामीणों से भी आग्रह करते हुए कहा कि आप अपनी बेटियों की शादी उम्र के सापेक्ष व बिना दहेज के करे। बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ,सही पोषण,देश रौशन कार्यक्रम के तहत सेविका व सहायिकाओं ने रंगोली कार्यक्रम व मोटे अनाज से बने व्यंजन सामग्रियों कि प्रदर्शनी भी पंचायत वासियों के लिए कि गई। ग्रामीणों के बीच दर्जनों फलदार पौधे का भी वितरण किया गया। मौके पर सेविका संजीता कुमारी,रीया कुमारी,सुधा देवी,आशा देवी,ललीता देवी,बिंदु कुमारी,रेणु कुमारी,बिनीता कुमारी नीलम मिश्रा सहित दर्जनों महिलाएं एवं किशोरियां मौजूद थी।

छात्र नेता ने सांसद से बात कर तीन महत्वपूर्ण मांगों को रखा

जमुई [झाझा] रेलवे सहित डीएसएम कॉलेज को लेकर अभाविप के छात्र नेता एसएफडी दक्षिण बिहार प्रांत सहसंयोजक सूरज कुमार बरनवाल ने जमुई लोकसभा क्षेत्र के सांसद अरूण भारती से दूरभाष पर तीन महत्वपूर्ण मांगों को पूरा करने का जिक्र किया। जानकारी देते हुए संहसंयोजक ने बताया कि सांसद से वातालाप करते हुए जानकारी दी गई झाझा रेलवे नगरी के नाम से जाना जाता है और ऐसे में झाझा रेलवे स्टेशन को अमृत भारत की सूची में शामिल नही करने, झाझा होकर गुजरने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस का ठहराव न होने की जानकारी दी साथ कॉलेज की जर्जर भवन के बारे में भी बताया और जानकारी दी गई कॉलेज के नाम 14 एकड़ जमीन पर लोगों के द्वारा अतिक्रमण किया जिसे अतिक्रमण मुक्त कर भवन निर्माण करवाया जाए ताकि यहां पर पीजी की पढ़ाई हो सके। सहसंयोजक ने बताया कि सांसद से तीनो विषयों पर बात करने पर उन्होनें आश्वासन देते हुए कहा कि तीनो महत्वपूर्ण मांगो पर जल्द ही सकरात्मक पहल करने का प्रयास किया जाएगा।

धोखाधड़ी से जमीन लिखने को लेकर दर्जनों ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से मिलकर लगाई न्याय की गुहार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई :- जिले के सिकंदरा प्रखंड के पाठकचक गांव निवासी नरेश राम व उसका भाई प्रदीप कुमार राम ने गांव के ही यदुनंदन यादव द्वारा धोखे से जमीन लिखवा लेने को लेकर गांव के एक दर्जन से अधिक लोगों के साथ समाहरणालय पहुंचे जहां डीएम अभिलाष शर्मा को एक लिखित आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाया है। आवेदन के माध्यम से पीड़ित नरेश राम ने बताया कि वह दोनों भाई को कुछ पैसे की आवश्यकता हुई तो वह अपने गांव के यदुनंदन यादव के पास जमीन बेचने की बात किया और दुसरे दिन यदुनंदन यादव, सोनू कुमार, शोभा देवी घर पर आकर जमीन खरीद एवं बिक्री का बात किये। बात-चीत में खाता नं. 302, खासरा नं. 1055 एवं 1058 में 24 डिसमिल जमीन बेचने की बात तय हुआ।

जिसके बाद उक्त लोगों ने कहा कि जमीन रजिस्ट्री के लिए जमुई रजिस्ट्री ऑफिस चलना है। उसके बाद दोनों भाई रजिस्ट्री ऑफिस पहुंचे जहां केवाला कागज पर दोनों भाई से हस्ताक्षर करा लिया गया। लेकिन जिस जमीन पर बात तय हुआ था उसके अलावा भी एक और केवाला तैयार किये हुये थे और उसी खाता-खसरा के जमीन के अंदर दुसरा केवाला जिसका खाता नं.416 एवं खसरा नं.1921, 07 डिसिमिल जमीन धोखा देकर हस्ताक्षर करवा लिया था। उसके दो तीन दिन बाद गांव में हल्ला किया कि नरेश राम और प्रदीप कुमार राम का घर का जमीन लिखा लिया। इसको लेकर जब रजिस्ट्री कचहरी आकर पता किया तो पता चला की मेरा घर का भी जमीन लिखा लिया है। वहीं जमीन लौटाने को लेकर गांव में पंचायत भी बुलाई गया था। जिसमें यदुनंदन यादव द्वारा जमीन लौटाने की बात को स्वीकार भी किया था लेकिन अब वे लोग जमीन लौटाने को तैयार नहीं है। इस मामले को सिकंदरा थाने की पुलिस को भी जानकारी दी गई साथ ही जमुई पुलिस अधीक्षक और आईजी डीआईजी सांसद और उट तक रजिस्ट्री के द्वारा आवेदन दिया गया जिसके बाद भी कोई कार्रवाई नहीं कि गई है। वहीं फिर से पीड़ित ने नया डीएम से न्याय की गुहार लगाते हुए मामले की जांच कर दोषी के विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग की है जिसके बाद जिला अधिकारी का आश्वासन सिकंदरा प्रखंड के उड से जांच करने का आदेश दिया गया ।

कोर्ट परिसर में प्रेम विवाह करने पहुंचे शेखपुरा के प्रेमी युगल का हाई वोल्टेज ड्रामा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई कोर्ट परिसर में प्रेम विवाह करने को पहुंचा शेखपुरा जिले के एक प्रेमी युगल हाई वोल्टेज ड्रामे का शिकार हो गया।कोर्ट मैरिज की सूचना पर लड़की के पिता दल बल के साथ पहुंच कर इस शादी का जमकर विरोध किया।इस दौरान एक घंटे से अधिक समय तक कोर्ट परिसर में हंगामा होता रहा। कोर्ट परिसर में हंगामे की खबर की सूचना के बाद डायल 112 की पुलिस मौके पर पहुंचकर दोनों प्रेमी जोड़े को अपने साथ ले गई।प्रेमी जोड़े ने बताया कि दोनों के बीच तीन साल से प्यार है।इसलिए भाग कर शादी कर ली। मामला शेखपुरा जिला का है। जहां के साजन कुमार बहुआरा इलाके के गगरी गांव की रहने वाली मुस्कान ने कॉलेज में बीए का एक्जाम देने के दौरान भगाकर शादी कर ली।बता दें कि दोनों अलग-अलग जाति के है। इस कारण लड़की के परिजनों को उनका रिश्ता मंजूर नहीं था। इस कारण उन्होंने भाग कर शादी कर ली। प्रेमी साजन कुमार 20 साल बताते हैं हम दोनो कोर्ट मैरिज कर लिए है।लेकिन मुस्कान के पापा टॉर्चर कर रहे है, जान मार देने की धमकी दे रहे है।वही मुस्कान 18 साल बताती है कि कोई दिक्कत नही है।हमलोग 10 सितंबर को शादी कर लिए है।आज कोर्ट मैरिज किए है।इस शादी से मेरे पापा और मम्मी को परेशानी है।वो जाने उनको प्रॉब्लम है।हम दोनो के बीच 3 साल से प्रेम है।हमलोग शेखपुरा जिला के रहने वाले है।जमुई घूमने आए थे, सोचे इधर ही कोर्ट में शादी कर लेते है। हम दोनो 15 दिन से घर से फरार है।हम दोनो साथ रहना चाहते है।पिता के द्वारा पुलिस बुलाने के बात पर मुस्कान कहती है की आने दीजिए। इधर प्रेमी जोड़े ने कोर्ट मैरिज करने के बाद कोर्ट परिसर स्थिति मंदिर में जाकर भगवान का आशीर्वाद लिया।इस दौरान दर्जनों लोगों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। लकड़ी के पिता पंकज कुमार ने बताया कि मेरी लड़की नाबालिग है। 10 सितंबर को मेरी बेटी को नशा का टेबलेट खिला कर भगाया था।मेरी बेटी को 17 दिनों से मानसिक टॉर्चर किया गया है।अभी जो लड़का बोल रहा है,वही लड़की बोल रही है। लकड़ी के पिता ने बताया कि पहले बेटी को लेकर तमिलनाडु फिर दिल्ली लेकर भागा।अपनी बेटी को खोजने के लिए एक लाख रुपया खर्च कर चुके है।

गायत्री परिवार द्वारा यूथ एक्सपो कार्यक्रम का भव्य किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] नगर स्थित रिटायर कॉलोनी, न्यू टाउन हॉल में आदर्श युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार द्वारा यूथ एक्सपो कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी मनीष कुमार, निशांत रंजन, अरविंद कुमार, लाल बाबू,शिवशंकर अकेला, ज्ञान प्रकाश, आशीष कुमार ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम का संचालन अभय नाथ तिवारी ने किया वही बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ, पटना (बिहार) समन्वयक श्री मनीष कुमार जी ने कहा कि आज के युवाओं को स्वामी विवेकानंद, एपीजे अब्दुल कलाम पुज्य गुरुदेव जैसे महापुरुषों से सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गायत्री महामंत्र युवाओं को आत्म बल देता है और आज के युवाओं में यदि आत्म बल आ जाए तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। मानवीय जीवन में गायत्री मंत्र का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। आज के युवाओं को अंदर से मजबूत होना बहुत ही जरूरी है साथ ही उन्होंने युवाओं को नियमित रूप से 20 मिनट गायत्री मंत्र करने का संकल्प भी दिलाया। निशांत रंजन जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के 4 सूत्र साधना स्वाध्याय संयम सेवा को जीवन में धारण करने को विस्तार से बताया। इन सुत्रों को धारण कर अपने जीवन को शानदार बनाने की कला बताया। आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने कहा कि आदर्श युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार विगत पांच वर्षों से निरंतर निःशुल्क बाल संस्कार शाला चलाया जा रहा है। यह युवा प्रकोष्ठ लगातार अश्लीलता निवारण, नशा मुक्ति अभियान जैसे कई सामाजिक आध्यात्मिक विचार क्रांति अभियान को आगे बढ़ा रही है। इन युवाओं को सही दिशा और दशा दिया जाए तो यह अच्छे कार्यक्रम में जाते हैं और निश्चित रूप से अपने व्यक्तित्व को शानदार बनाते हैं। यह समय बिहार को जगने का है और किसी ने कहा है बिहार सोया हुआ शेर है जिस दिन बिहार जगह उस दिन हिंदुस्तान की दिशा और दशा बदल सकती है इतनी ताकत है इस मिट्टी में। इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार जिला संयोजक मनोज कुमार, नरेंद्र कुमार,रामलखन वर्णवाल,बमशंकर वर्णवाल,मनीष कुमार, विशाल कुमार,नीतीश कुमार सहित पूरे जिले भर से गायत्री परिजन व हजारों की संख्या में युवा उपस्थित थे।

सम्पादकीय

हिंदुत्व में रुकावट हैं दलितों पर अत्याचार

हिंदुओं की एकता की बात करने वाली भारतीय जनता पार्टी का यह सपना शायद ही कभी पूरा हो सकेगा। देश में अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचारों के मामले में देशभर में उत्तरप्रदेश पहले, मध्यप्रदेश दूसरे और राजस्थान तीसरे स्थान पर है। इन तीनों ही राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं। सर्वाधिक आश्चर्य यह है कि हाशिए पर रह रहे इन वर्गों पर अत्याचारों का मामला राष्ट्रीय मुद्दा नहीं बन सका। इन वर्गों की दुहाई के लिए घडिाली आंसू बहाने वाले राजनीतिक दलों और संगठनों ने इन अत्याचारों पर धरना-प्रदर्शन करना तो दूर, मुंह तक नहीं खोला। भाजपाशासित राज्यों में एससी-एसटी पर अत्याचार शीर्ष पर होने के बावजूद यह मुद्दा चिंता का विषय नहीं बन सका। अत्याचारों के आंकड़ों की यह तस्वीर भाजपा के हिंदुओं के एकता प्रयासों की सच्चाई उजागर करती है। एक सरकारी रिपोर्ट से पता चला है कि वर्ष 2022 में अनुसूचित जातियों (एससी) के खिलाफ 97.7 प्रतिशत अत्याचार 13 राज्यों में केंद्रित थे, जिनमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में ऐसे मामलों की सबसे अधिक संख्या दर्ज की गई। उत्तर प्रदेश में 12287 मामले (23.78 प्रतिशत), राजस्थान में 8651 मामले (16.75 प्रतिशत) और मध्य प्रदेश में 7732 मामले (14.97 प्रतिशत) दर्ज किए गए। इसके अलावा अन्य राज्यों में अधिक मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें बिहार में 6799 मामले (13.16 प्रतिशत), ओडिशा में 3576 मामले (6.93 प्रतिशत) और महाराष्ट्र में 2706 मामले (5.24 प्रतिशत) शामिल हैं। वर्ष 2022 में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत दर्ज किए गए कुल मामलों में से लगभग 81 प्रतिशत केवल इन छह राज्यों में दर्ज किए गए। इस अधिनियम के तहत 2022 में अनुसूचित जातियों के खिलाफ कुल 51656 मामले दर्ज किए गए। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि ये मामले भारतीय दंड संहिता के तहत भी दर्ज किए गए थे। रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि एसटी के खिलाफ अत्याचार के अधिकांश मामले भी 13 राज्यों में हुए। एसटी से जुड़े 9735 मामलों में से मध्य प्रदेश में 2979 मामले (30.61 प्रतिशत), राजस्थान में 2498 मामले (25.66 प्रतिशत) और ओडिशा में 773 मामले (7.94 प्रतिशत) दर्ज किए गए। एसटी से संबंधित अन्य मामलों में महाराष्ट्र में 691 मामले (7.10 प्रतिशत) और आंध्र प्रदेश में 499 मामले (5.13 प्रतिशत) शामिल हैं। इस रिपोर्ट में जांच और चार्जशीट से संबंधित डेटा भी प्रस्तुत किया गया है। अनुसूचित जाति से संबंधित मामलों में 60.38 प्रतिशत मामलों में आरोपपत्र दाखिल किए गए, जबकि झूठे दावों या सबूतों की कमी के कारण 14.78 प्रतिशत मामलों में अंतिम रिपोर्ट दी गई। वर्ष 2022 के अंत तक 17166 मामलों की जांच अभी भी लंबित थी। अनुसूचित जनजाति से संबंधित मामलों में 63.32 प्रतिशत मामलों में आरोपपत्र दाखिल किए गए, जबकि 14.71 प्रतिशत मामलों में अंतिम रिपोर्ट दी गई। 2022 के अंत तक 2702 मामलों की जांच जारी थी। रिपोर्ट में एक प्रमुख चिंता अधिनियम के तहत दोषसिद्धि दर में गिरावट है। साल 2022 में यह दर 2020 के 39.2 प्रतिशत से घटकर 32.4 प्रतिशत हो गई। रिपोर्ट में इन मामलों के निपटारे के लिए विशेष अदालतों की अपर्याप्त संख्या पर भी चिंता व्यक्त की गई है। 14 राज्यों के 498 जिलों में से केवल 194 जिलों ने विशेष अदालतें स्थापित की हैं ताकि मामलों की तेजी से सुनवाई हो सके। रिपोर्ट में ऐसे विशिष्ट जिलों की पहचान की गई है जहां अत्याचार की घटनाएं काफी अधिक हैं, लेकिन केवल 10 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने ऐसे जिलों की घोषणा की है। उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों में, जहां अनुसूचित जाति से संबंधित मामलों की अधिक संख्या दर्ज की गई, वहां कोई अत्याचार-ग्रस्त जिला नहीं बताया गया। रिपोर्ट में जाति आधारित हिंसा को रोकने और कमजोर समुदायों के लिए मजबूत सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इन जिलों में हस्तक्षेप करने का आह्वान किया गया है। अनुसूचित जाति-जनजाति पर अत्याचारों की रोकथाम करने के लिए किए गए सरकारी उपाय दिखावटी साबित हुए हैं। यह समस्या सुरसा की तरह मुंह फाड़े चली आ रही है। आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में एससी/एसटी संरक्षण प्रकोष्ठ स्थापित किए गए हैं। बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, केरल और मध्य प्रदेश में एससी/एसटी अपराधों से निपटने के लिए विशेष पुलिस स्टेशन स्थापित किए गए हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इन वर्गों पर अत्याचारों के मामले में पुलिस की भूमिका पर सवालिया निशान लगते रहे हैं। यदि पुलिस ईमानदारी से कार्रवाई करती तो अत्याचारों के इन आंकड़ों की नौबत नहीं आती। एससी-एसटी अधिनियम-1989 संसद द्वारा पारित एक अधिनियम है जो एससी एवं एसटी समुदायों के सदस्यों के विरुद्ध भेदभाव का निषेध करने तथा उनके विरुद्ध अत्याचार को रोकने के लिए बनाया गया है। यह अधिनियम इस निराशाजनक वास्तविकता को भी स्वीकार करता है कि अनेक उपाय करने के बावजूद अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों को उच्च जातियों के हाथों विभिन्न प्रकार के अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है। यह अधिनियम संविधान के अनुच्छेद 15 (भेदभाव का प्रतिषेध), 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन) और 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संरक्षण) में उल्लिखित संवैधानिक सुरक्षा उपायों को ध्यान में रखते हुए लागू किया गया है।

सामुदायिक भागीदारी को प्रेरित कर रहा स्वच्छता ही सेवा अभियान

इसके अलावा घर के आस-पास, मुहल्ला-गली, कार्यस्थल पर भी स्वच्छता बनाये रखना चाहिए। निश्चित रूप से यह समाज पर बहुत अच्छा प्रभाव दिखायेगा और पर्यावरण स्वच्छता को बढ़ायेगा। जब पर्यावरण स्वच्छ होता है, तो हम स्वस्थ और सक्रिय जीवनशैली जीते हैं। इसलिए, स्वच्छ भारत के मिशन को सफल बनाना राष्ट्र के प्रति एक जिम्मेदारी है। लेकिन, स्वच्छता एक बार का मिशन नहीं होना चाहिये, बल्कि यह एक अभ्यास और दैनिक आदत होनी चाहिये।

मनोज कुमार सिंह
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

स्वास्थ्य सबसे बड़ी नेमत है। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है। तन और मन के स्वस्थ रहने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता, स्वच्छ भोजन, स्वच्छ जल, स्वच्छ हवा के साथ स्वच्छ वातावरण जरूरी है। स्वच्छता स्वस्थ जीवन जीने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। जो व्यक्ति साफ-सफाई रखता है, वह निरोगी जीवन जीता है। जब कोई स्वच्छता के बारे में सोचता है, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि स्वच्छता को कई स्तरों पर खोजा जा सकता है। व्यक्तिगत स्वच्छता का मतलब है दिन-प्रतिदिन व्यक्तिगत स्वच्छता बनाये रखना। स्वस्थ जीवन जीने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही जिस वातावरण में हम रहते हैं, उसके प्रति विचारशील होना और अपने आस-पास के वातावरण को साफ रखने की जिम्मेदारी लेना भी महत्वपूर्ण है। हमें अपने आस-पास के वातावरण के बारे में जागरूक होना चाहिए। पर्यावरण की स्वच्छता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी घर और खुद की स्वच्छता। हालांकि एक दशक में स्वच्छता को लेकर जागरुकता बढ़ी है। इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है, जिन्होंने न सिर्फ जनता को महात्मा गांधी के स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण वाले भारत के निर्माण के सपने को साकार करने के लिए प्रेरित किया, स्वच्छ भारत अभियान चलाकर इसे आंदोलन का रूप दे दिया। इस अभियान के तहत देश में स्वच्छता ही सेवा है पखवाड़ा चल रहा है।

इस अभियान की शुरूआत औपचारिक स्वच्छता शपथ और ह्यएक पेड़ मां के नामह्ल वृक्षारोपण अभियान के साथ हुई। इसका उद्देश्य सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है। इस वर्ष स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की 10वीं वर्षगांठ भी है, जिससे इस अभियान का महत्व और बढ़ गया है। दो अक्टूबर तक चलनेवाले ह्यस्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छताह्ल थीम पर आधारित स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े में स्वच्छता पहलों में जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, व्यापक स्वच्छता और स्वच्छता लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तथा सफाई कर्मचारियों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने देश भर में गतिविधियां चल रही हैं। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के आधे समय में ही सफाई के लिए चुनी गयी स्वच्छता लक्षित इकाइयों को स्वच्छ स्थानों में बदलकर उनका सौंदर्यीकरण करने में सराहनीय उपलब्धि हासिल हुई है। देश भर में इस बार वार्षिक स्वच्छता पखवाड़े के दौरान पांच लाख से ज्यादा मुश्किल, चुनौतीपूर्ण और उपेक्षित स्थानों को कायाकल्प के लिए लक्षित किया गया है। यह प्रभावशाली पहल 2 अक्टूबर 2024 तक चलने वाले वार्षिक पखवाड़े में इस बार के प्रमुख स्तंभों में विशेष रूप से शामिल की गयी है, क्योंकि स्वच्छ भारत मिशन-शहरी इस वर्ष अपनी स्वच्छता यात्रा का एक दशक भी पूरा कर रहा है। अब तक देश भर में चार लाख से अधिक स्थानों पर स्वच्छता की पहल सक्रिय रूप से चल रही है, जिनमें विभिन्न राज्यों की प्रभावशाली भागीदारी दिख रही है। ऐसी एक लाख से अधिक इकाइयों का कायाकल्प सुनिश्चित किया जा चुका है। ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ल अभियान के तहत 10 लाख से अधिक पेड़ लगाये जा चुके हैं। फूड स्ट्रीट्स एरिया की सफाई की गयी और क्षेत्रीय परंपराओं को दर्शाने वाले लगभग पचास हजार सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किये गये हैं। विभिन्न केंद्रीय मंत्रालय स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े में निर्धारित इकाइयों पर बड़े पैमाने पर सफाई अभियानों में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, जिसके साथ-साथ अभियानों में पौधारोपण अभियान, साइक्लोथॉन, प्लोगाथॉन और सांस्कृतिक उत्सव भी शामिल हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर पखवाड़े का शुभारंभ होने के बाद कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने स्वच्छता के लिए आगे बढ़कर सफाई अभियान शुरू किए, सफाई मित्र शिविरों की शुरूआत की और खुद भी श्रमदान किया। केंद्रीय मंत्रियों ने भी पूरे देश में स्वच्छता के लिए संकल्प, पौधारोपण कार्यक्रम और अन्य पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेकर जमीनी स्तर पर श्रमदान में हिस्सा लिया। दैनिक जीवन के हर पहलू में स्वच्छता के प्रति अपना समर्पण दशार्ते हुए सभी राज्य, शहरी स्थानीय निकाय, ग्राम पंचायतें, धार्मिक संगठन, गैर सरकारी संगठन, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, केंद्रीय मंत्रालय और अन्य राज्य सरकारें भी स्वच्छता ही सेवा 2024 के लिए एकजुट होकर काम कर रहे हैं। देश भर में तेजी से बढ़ती सक्रिय भागीदारी के साथ जमीनी स्तर पर दिख रहा प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वच्छता के लिए यह सामूहिक प्रयास न केवल अभियान को मजबूती देता है, बल्कि कचरा मुक्त शहरों के लिए स्वच्छ भारत मिशन-शहरी के लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में भी ठोस कदम बढ़ाता है।

भारत सरकार ने देश में स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाये हैं। स्वच्छता पखवाड़ा पूरे देश में स्वच्छता और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाये रखने के लिए देश के हर नागरिक को सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाता है। स्वच्छता अब एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले चुका है। स्वच्छ भारत के संदेश ने लोगों के अंदर उत्तरदायित्व की एक अनुभूति जगा दी है। अब जबकि नागरिक पूरे देश में स्वच्छता के कामों में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो रहे हैं, महात्मा गांधी द्वारा देखा गया ह्यस्वच्छ भारतह्ल का सपना अब साकार होने लगा है। जीवन के हर चरण में स्वच्छता महत्वपूर्ण है चाहे वह हमारे अपने व्यक्तिगत तरीके से हो या जब हम समाज का हिस्सा हों। लेकिन, बहुत से लोग अपने घरों को साफ रखना चाहते हैं, लेकिन अपने घर के कचरे को गैर-जिम्मेदाराना तरीके से सड़कों पर फेंक देते हैं, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है। जब हम स्वच्छ जीवन जीते हैं, तो हम स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन जीते हैं। समाज के व्यापक हित के लिए छोटे-छोटे कदम उठायें और इसकी शुरूआत हमेशा घर से की जा सकती है।

बच्चों को बर्बर दुष्कर्मों से बचाने अश्लील वेबसाइटों पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक

वास्तव में भारत जैसे विकासशील देश में जहां यौन शिक्षा का भारी अभाव है और यौन विषय पर बातचीत करना भी मर्यादित व्यवहार का अतिक्रमण माना जाता है वहां यौन विकृत व्यवहार का पनपना बहुत सरल है। जब से इंटरनैट शिक्षित, अशिक्षित, बच्चों, वृद्ध सभी के हाथ में आया है एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो मोबाइल पर बच्चों के साथ यौनाचार की बेहद कुत्सित और अनैतिक सामग्री को देखने और उसको प्रसारित करने के कुकर्म में लगे रहते हैं इससे उनकी कुंठित विकृतियों को उकसावा मिलता है और समाज की नैतिक मान्यताओं को नष्ट भ्रष्ट करने का बेहद अस्वीकार्य माहौल बनता है। हाल ही में ऐसे कई मामले समय समय पर सामने आते रहे हैं

मनोज कुमार अग्रवाल
लेखक

देश में संचार क्रांति के साथ ही अनेक नयी समस्याएं भी सामने आई हैं। इनमें से अश्लील वेबसाइट्स भी समाज के लिए बड़ी घातक समस्या बन गयी हैं। कई बार संगीन यौन बर्बरता के मामलों की विवेचना में यह तथ्य सामने आया है और दुष्कर्मी अपराधियों ने खुद कबूल किया है कि उन्होंने अपराध करने से पहले चाइल्ड पोर्न साइट्स देखी और उनके मन में अपराध की दुष्प्रेरणा जागृत हुयी। इससे पैदा क्षणिक उन्माद में वह बर्बरता और हैवानियत कर बैठे। हाल ही में एक महत्वपूर्ण फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने घोषणा की है कि बाल यौन सामग्री का भण्डारण, बाल संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत अपराध है। यह फैसला भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और जेबी पारडीवाला की पीठ ने दिया है। इस पीठ ने मद्रास उच्च न्यायालय के आदेश को पलट दिया। मद्रास उच्च न्यायालय ने पहला निर्णय यह सुनाया था कि बाल पोर्नोग्राफी को केवल डाउनलोड करना या देखना अपराध नहीं माना जाएगा। हालाँकि, सर्वोच्च न्यायालय ने इस सिद्धांत को खारिज कर दिया, यह पुष्टि की गई कि ऐसी सामग्री का उपयोग पॉक्सो अधिनियम के तहत एक आपराधिक कृत्य के लिए किया जाता है, जिसका उद्देश्य बच्चों का यौन शोषण और उत्पीड़न करना है। सुप्रीम कोर्ट ने संसद को ह्यचाइल्ड पोर्नोग्राफीह्ल शब्द में संशोधन करने की सलाह दी, जिसमें बाल पोर्नोग्राफी और इसके कानूनी परिणामों पर कुछ दिशानिर्देश भी तय किए। शीर्ष अदालत ने संसद को सुझाव दिया कि वह ह्यबाल पोर्नोग्राफीह्ल शब्द को ह्यबाल यौन शोषण और सामग्रीह्ल शब्द के साथ आपत्तिजनक करे। एसोसिएटेड एसोसिएशन से संशोधन को लागू करने के लिए एक शीट का भी आग्रह किया गया। इसके अलावा, सर्वोच्च न्यायालय ने अदालतों को निर्देश दिया है कि वे ह्यचाइल्ड पोर्नोग्राफीह्ल शब्द का उपयोग न करें।

शीर्ष अदालत ने पहले मद्रास उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति व्यक्त की थी, जिसमें कहा गया था कि केवल बाल अश्लीलता डाउनलोड करना और देखना पॉक्सो अधिनियम और सूचना (आईटी) अधिनियम के तहत अपराध नहीं है। हाल ही में मद्रास हाईकोर्ट के फैसले को पलटते हुए कोर्ट ने साफ कर दिया कि बच्चों से जुड़ी अश्लील फिल्मों को डाउनलोड करना, स्टोर करना, देखना व प्रसारित करना पॉक्सो व आईटी एक्ट के अंतर्गत अपराध है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय बेंच के सदस्यों न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला व न्यायमूर्ति मनोज मिश्र ने देश को साफ संदेश दे दिया कि बच्चों पर बने अश्लील कंटेंट की स्टोरेज करना, डिलीट न करना तथा इसकी शिकायत न करना, इस बात का संकेत है कि उसे प्रसारित करने की नीयत से स्टोर किया गया है। साथ ही मद्रास हाईकोर्ट के उस फैसले को रद्द किया, जिसमें कहा गया था ऐसे कंटेंट को डाउनलोड करना, देखना अपराध नहीं है, जब तक कि इसे प्रसारित करने की नीयत न हो। शीर्ष अदालत ने उस फैसले को रद्द करके केस वापस सेशन कोर्ट को भेज दिया। इतना ही नहीं शीर्ष अदालत ने निर्देश दिया कि चाइल्ड पोर्नोग्राफी शब्द को हटाकर इसकी जगह चाइल्ड सेक्सुअल एक्सप्लोएटेटिव एवं एब्यूसिव मैटेरियल शब्द का प्रयोग किया जाए। कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा कि वह अध्यादेश लाकर इसमें बदलाव करे। यहां तक कि अदालतें भी इस शब्द का प्रयोग न करें। साथ ही पॉक्सो एक्ट में इस शब्द को लेकर बदलाव किया जाए।

कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसले में दलील दी कि नया शब्द ठीक से बताएगा कि यह महज अश्लील सामग्री ही नहीं है, बच्चे के साथ हुई वीभत्स घटना का एक रिकॉर्ड भी है। वह घटना जिसमें बच्चे का यौन शोषण हुआ है या फिर ऐसे शोषण को वीडियो में दशार्या गया है। अदालत ने गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा कि यौन शोषण के बाद पीड़ित बच्चों के वीडियो, फोटोग्राफ और रिकॉर्डिंग के जरिये शोषण की श्रृंखला आगे चलती है। दुर्भाग्य से यह सामग्री इंटरनेट पर मौजूद रहती है। दरअसल, कोर्ट ने व्याख्या की है कि ऐसी सामग्री से बच्चों का निरंतर भयादोहन किया जाता है। यह सामग्री लंबे समय तक बच्चों को नुकसान पहुंचाती है। जब इस तरह की सामग्री प्रसारित की जाती है तो पीड़ित बच्चें की मयार्दा का बार-बार उल्लंघन होता है। मौलिक अधिकारों का हनन होता है। समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर हमारी भूमिका ऐसी यौन कुंठित मानसिकता का प्रतिकार करने की होनी चाहिए। यह कृत्य समाज में नैतिक पतन की पराकाष्ठा को भी दशार्ता है। उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष सितंबर माह में केरल हाईकोर्ट ने भी अपने एक फैसले में अश्लील फोटो-वीडियो देखने को अपराध नहीं माना था। लेकिन इसे प्रसारित करने को गैरकानूनी माना था। इसी फैसले के आलोक में मद्रास हाईकोर्ट ने एक आरोपी को अपराधमुक्त किया था। उल्लेखनीय है कि भारत में सूचना प्रौद्योगिकी एक्ट 2000, आईपीसी तथा पॉक्सो एक्ट के तरह अश्लील वीडियो बनाने व प्रसारित करने पर जेल व जुमार्ने का प्रावधान है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के बाद अब बच्चों के गंदे वीडियो देखने वाले मोबाइल यूजर्स को जेल की हवा खानी पड़ सकती है। यदि कोई व्यक्ति मोबाइल, लैपटॉप या अन्य डिवाइस पर बच्चों के अश्लील वीडियो देखता है या उसे डाउनलोड करता है तो उस व्यक्ति को सजा मिल सकती है। देखने वाले ऑनलाइन मोड से पकड़े जाएंगे। ऐसा करने वाले व्यक्ति के आईपी एड्रेस से उसकी लोकेशन को ट्रैक किया जा सकता है।

जन्मदिन पर विशेष : लता मंगेशकर-संगीत ही जिनका जीवन था

मुकेश कबीर

लता मंगेशकर को गए हुए ढाई साल हो गए हैं लेकिन आज भी वे उतनी ही मौजूद हैं, जितनी वे अपने जीवनकाल में हुआ करती थीं। अभी भी ऐसा कोई दिन नहीं जब कहीं न कहीं उनका कोई गाना सुनाई न देता हो और रेडियो की तो आज भी रानी लता जी हैं ही, रोज उनके गानों की फरमाइश होती है और खास बात यह है कि यह फरमाइशें नई पीढ़ी के लोग ज्यादा करते हैं। यह लता जी की गायकी की ही ताकत है। अभी कुछ दिनों से सोशल मीडिया में देखने में आ रहा है कि नई गायिकाएं लता जी को कॉपी करने में लगी हैं और एक अघोषित कंपीटिशन चल रहा है कि कौन बिल्कुल उनके जैसा गा सकती है और जिन एक दो गायिकाओं ने उनकी आवाज या गायकी को थोड़ा सा भी मैच किया हो उनको जमकर लाइक्स और व्यूज मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि लोग आज भी लता जी को खोज रहे हैं लेकिन लता जी तो अकेली ही थीं। ऐसा महान कलाकार युग में कोई एक होता है लेकिन सदियों तक पीढ़ियों को प्रेरित करता है, लता जी भी यही कर रही हैं। लता जी की गायकी के बारे में तो ज्यादातर लोग जानते ही हैं इसलिए उस बारे में कुछ और कहना तो अब सभी के लिए मुश्किल ही है लेकिन जो लोग उनसे मिल चुके हैं वो आज भी उनकी बातों और मुलाकातों को बार बार दोहराने से नहीं चूकते। यह लाजिमी भी है क्योंकि लता जी से मिलना कोई कम बात तो है नहीं। यदि बड़े कलाकारों की बात करें तो प्यारे लाल जी, आनंद जी भाई आज भी उनको याद करते हुए भावुक हो जाते हैं। प्यारेलाल जी तो लता जी को याद करते हुए अपने बचपन में ही चले जाते हैं, वे जब बच्चे थे तब से ही उनका लता जी के घर आना जाना था और फिर लता जी के एक इंस्टीट्यूट में ही उनको सीखने का सौभाग्य भी मिला और जब पारंगत हुए तो लता जी के साथ काम करने का मौका भी मिला और ऐसा मौका मिला कि लता जी ने सबसे ज्यादा गाने लक्ष्मीकांत प्यारेलाल की जोड़ी के साथ ही गाए। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि उनके पारिवारिक रिश्ते थे और अलग से कहीं बैठकर तैयारी करने की उतनी जरूरत नहीं थी जितनी अन्य लोगों को होती थी, ये लोग घर में उठते बैठते, खाते पीते, साथ काम करते हुए ही कंपोज कर लिया करते थे और लता जी एल.पी. को अपना छोटा भाई ही मानती थीं इसलिए इनको प्राथमिकता भी बहुत देती थीं, रिकॉर्डिंग में भी फैमिलियर माहौल रहता था। जो नए लोग उनके साथ काम करते थे वे लता जी से डरते भी बहुत थे लेकिन लता उनको सहज बना देती थीं, लता जी के साथ कई फिल्मों में ढोलक बजा चुके अनूप बोरलिया बताते हैं कि लता जी किसी को डांटती नही थीं लेकिन वो चश्मा उठाकर देख लेती थीं इतने में ही लोग कांप जाते थे। लता जी का सम्मान और आभा मंडल था ही ऐसा कि उनके सामने अनुशासन खुद ही कायम हो जाता था। असल में लता जी कि सबसे खास बात यह थी कि वे संगीत के अलावा कुछ और सोचती ही नहीं थी, संगीत ही उनका जीवन था यही कारण है कि उनको बहुत ज्यादा रीटेक या रिहर्सल की जरूरत नहीं पड़ती थी और रिकॉर्डिंग वक्त पर पूरी हो जाती थी, यदि कोई गलती होती भी तो वह अन्य कलाकारों के कारण होती थी इसलिए भी सारे लोग पूरी तरह तैयार होकर ही लता जी के सामने आते थे। एक बार जावेद अख्तर ने भी कहा था कि लता जी गाने को न सिर्फ तुरंत पकड़ लेती थीं बल्कि उसको और बेहतर करके गा देती थीं, लता जी की इसी खासियत के कारण गुणी संगीतकार लता जी को ही प्राथमिकता देते थे। एस डी बर्मन तो कहते थे कि ह्हमको तो सिर्फ लता ही चाहिएह्ल यही हाल मदन मोहन और खैयाम साब का था। हालांकि मदन मोहन जी ने तो लता जी को अलग तरह से परिभाषित भी किया है और इस जोड़ी ने बहुत से महिला प्रधान गाने दुनिया को दिए, एक अलग ही लेबल का संगीत सुनाया लता जी और मदन मोहन जी ने। इनकी आपसी बॉन्डिंग और अंडरस्टेंडिंग भी ऐसी थी कि कभी तो फोन पर ही धुन सुना दी जाती थी और लता जी सीधा स्टूडियो में आकर रिकॉर्डिंग कर देती थीं, ह्लनैना बरसेह्ल ऐसा ही गाना है, जिसे पहले मदनमोहन जी ने डमी रिकॉर्ड कर दिया था और लता जी जब विदेश से वापस आईं तो उन्होंने उसे सुनकर ही रिकॉर्डिंग में गा दिया और क्या खूब गाया यह तो बताने की जरूरत ही नहीं है क्योंकि सारी दुनिया ने वो गाना सुना है।

संक्षिप्त खबरें

सांसद के अध्यक्ष बनने पर बीजेपी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण के सांसद राजीव प्रताप रूडी को संसदीय जल संसाधन समिति का अध्यक्ष बनने पर भाजपा कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर है जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार सिंह एवं महामंत्री विवेक कुमार सिंह बधाई देते हुए कहा कि सारण के विकास की गति और बढ़ेगी राजीव प्रताप रूडी सारण के विकास के लिए सदैव तत्पर रहते हैं । वही जिला भाजपा के मुख्य प्रवक्ता धर्मेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि सांसद राजीव प्रताप रूडी को संसदीय जल समिति के अध्यक्ष बनने से देश को काफी फायदा मिलेगा क्योंकि सांसद रुडी जी का अनुभव का लाभ सारण, बिहार सहित पूरे देश को नया गति मिलेगा। एवं प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राकेश कुमार सिंह ने कार्यकर्ताओं में मिठाइयां बांट कर अपनी खुशी का इजहार किया सारण के सांसद सारण के लिए विकास पुरुष है खुशी व्यक्त करने वालों में जिला मंत्री सत्यानंद सिंह मीडिया प्रभारी बलवंत सिंह, आदि कार्यकर्ता ने बधाई देते हुए कहा कि इससे सारण को विकाश में मदद मिलेगा।

झमाझम बरसात के बावजूद जल निकासी दुरुस्त बनाने में युद्ध स्तर पर करें कार्य: गरिमा

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया। तीन दिन से जारी झमाझम बरसात के कारण नगर निगम के सघन शहरी क्षेत्र में जल निकासी व्यवस्था चरमरा उठी है। बावजूद इसके जल निकासी दुरुस्त बनाने में नगर निगम के सफाई कर्मी युद्ध स्तर पर जल जमाव से सघन शहरी क्षेत्र को बचाने के लिए नगर निगम के संबंधित कर्मी युद्ध स्तर पर कार्य कर रहें हैं। इस बरसात के बीच शनिवार को नगर निगम की महापौर गरिमा देवी सिकारिया छाता के सहारे मौके पर मौजूद रह कर सफाई कर्मियों का उत्साह बढ़ाती दिखीं। महापौर ने अपनी उपस्थिति में सुप्रिया रोड में स्थित पंजाब नेशनल बैंक की शाखा कार्यालय के समीप अरसे से अवरुद्ध पड़े मुख्य नाले का नया के लिए मिट्टी हटा रहे नगर निगम के कर्मियों और सफाई निरीक्षक के साथ तमाम सफाई कर्मियों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि आप सफाई कर्मीगण जाड़ा, गर्मी और ऐसी बरसात में भी अपनी कठिन जिम्मेदारी का निर्वहन करने वाले सही के कर्मवीर योद्धा हैं। कोई भी मजदूरी मद में आपको दी जा रही राशि से आप सबकी कठिन श्रमदान की भरपाई नहीं की जा सकती। मौके पर घड़ी प्रभारी तबरेज आलम, वार्ड संख्या 27 के पार्षद इंद्रजीत यादव, संजय शर्मा आदि मौजूद रहे।

मानोपाली में मां दुर्गा विराजेंगी लोटस टेम्पल में

प्रात: किरण संवाददाता

बनियापुर । प्रखण्ड के मानोपाली में हर साल की तरह इस भी दुर्गापूजा धूमधाम से मनाने की तैयारी चल रही है पूजा समिति द्वारा इस साल दिल्ली के प्रसिद्ध लोटस टेम्पल का पंडाल बनवाया जा रहा है इसको लेकर पंडाल का निर्माण जोर शोर से चल रहा है पूजा समिति के अध्यक्ष राजीव कुमार ने बताया कि यहाँ विगत करीब तीन दशकों से धूमधाम से दुर्गापूजा का आयोजन होता है जिसको देखने के लिए अगल बगल के दर्जनों गांवों से लोग आते है।
इस बार यहाँ आकर्षण का केंद्र होगा दिल्ली का प्रसिद्ध लोटस टेम्पल।

सीपीएस स्कूल में नई पहल,आईजी शिमला जेपी सिंह ने किया हाउस सिस्टम का उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय सीपीएस कैंपस में एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक दिन रहा। शिमला के आईजी, श्री जेपी सिंह, आईपीएस, जो मूल रूप से छपरा जिले के निवासी हैं, ने मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के हाउस सिस्टम का विधिवत उद्घाटन किया। श्री सिंह की विद्यालय में उपस्थिति और उनके प्रेरणादायक भाषण ने छात्रों में जोश और उत्साह भर दिया। जेपी सिंह, जो अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से आज इस ऊंचे पद तक पहुंचे हैं, ने अपने भाषण के दौरान जीवन के मूल्यों, अनुशासन, नेतृत्व, और कठिन परिश्रम पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को अपने सपनों का पीछा करते रहने की प्रेरणा दी, चाहे चुनौतियां कैसी भी हों। उनकी बातों ने छात्रों के दिलों में आत्मविश्वास और साहस का संचार किया, जिससे छात्र अत्यधिक उत्साहित और प्रेरित हुए। कार्यक्रम के दौरान, सीपीएस ग्रुप के चेयरमैन डॉ. हरेंद्र सिंह ने मुख्य अतिथि श्री जेपी सिंह का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें एक बुके एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया।
विद्यालय ने इस अवसर पर चार प्रमुख हाउस का गठन किया है: महाराणा हाउस, शिवाजी हाउस, आजाद हाउस, अशोक हाउस ।
मुख्य अतिथि जेपी सिंह ने स्कूल के उन छात्रों को भी सम्मानित किया जिन्होंने वेटलिफ्टिंग, कबड्डी और योगा में जिला और राज्य स्तर पर पदक हासिल किए हैं। इन छात्रों की उपलब्धियों पर श्री सिंह ने उन्हें बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता उनके अनुशासन और कठिन परिश्रम का परिणाम है, जो आने वाले समय में उन्हें और ऊंचाइयों पर ले जाएगी।
कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकाश कुमार सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य मुरारी सिंह द्वारा किया गया।
प्रधानाचार्य ने मुख्य अतिथि, अभिभावकों और उपस्थित सभी सदस्यों को इस अवसर पर शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया और छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।श्री सिंह के प्रेरणादायक भाषण के बाद, छात्रों में अद्वितीय उत्साह देखने को मिला, और उन्होंने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

6, 7 एवं 8 अक्टूबर को आयोजित होगा जिला स्तरीय युवा उत्सव

प्रात: किरण संवाददाता

मोतिहारी। बिहार सरकार के द्वारा कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही महत्वाकांक्षी योजना के तहत जिला युवा उत्सव का आयोजन पूर्वी चंपारण जिला में 6 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक मोतिहारी स्थित महात्मा गांधी प्रेक्षा गृह में किया जाएगा। जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल के निर्देश पर अपर समाहर्ता पूर्वी चंपारण मुकेश कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में उनके कार्यालय कक्ष में हुई पदाधिकारियों की बैठक में यह निर्णय लिया गया। जिला युवा उत्सव में भाग लेने के लिए 15 वर्ष से 29 आयु वर्ग के इच्छुक छात्र, छात्रा एवं व्यक्ति जिला शिक्षा पदाधिकारी पूर्वी चंपारण के कार्यालय में आवेदन करेंगे। जिला युवा उत्सव में विभिन्न विधाओं अंतर्गत भाग लेने वाले प्रतिभागियों में प्रतियोगिता कराई जाएगी एवं उसमें से प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर चयनित प्रतिभागियों को राज्य स्तरीय युवा उत्सव के लिए चयनित किया जाएगा।जिला युवा उत्सव में जिन विधाओं को शामिल किया गया है उसमें 1.एकल/समूह लोक नृत्य एवं लोकगीत 2. शास्त्रीय/ उप शास्त्रीय गायन, नृत्य एवं वादन 3. एकांकी/ लघु नाटक एवं नाटिका 4.चित्रकला, मूर्ति कला, हस्तशिल्प,छायाचित्र 5.वक्तृता(भाषण) को शामिल की गई है। इन विधाओं में भाग लेने के लिए प्रतिभागी को अलग-अलग आवेदन देने होंगे। बैठक में युवा उत्सव के सफल आयोजन को लेकर संबंधित पदाधिकारी को अपर समाहर्ता के द्वारा निर्देश देते हुए कहा गया कि जिन पदाधिकारी को जो दायित्व दिया गया है उसका अच्छे से क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे। जिला शिक्षा पदाधिकारी पूर्वी चंपारण मोतिहारी को अपने स्तर से जिला अवस्थित विद्यालयों, महाविद्यालयों में समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम को व्यापक एवं सफल बनाने तथा सभी प्रखंडों की सहभागिता के लिए प्रतिभागियों के भाग लेने हेतु सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों के प्रधान को निर्देशित करेंगे। राज्य सरकार के द्वारा दिए गए अनुदेश एवं जिले के सभी क्षेत्र के सहभागियों के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि जिले के सभी उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालय इस उत्सव में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें ताकि बेहतर प्रतिभागियों का चयन किया जा सके। जिला स्तरीय युवा उत्सव में भाग लेने वाले अव्वल प्रतिभागियों के चयन के लिए निर्णायक मंडल के गठन का निर्देश दिया गया। निर्णायक मंडल कार्यक्रम स्थल पर भाग लेने वाले प्रतिभागियों की स्क्रीनिंग करेंगे। जिला स्तरीय युवा उत्सव में चयनित प्रतिभागी राज्य स्तर पर आयोजित जिला स्तरीय युवा उत्सव में भाग लेंगे इसके लिए, जिला प्रशासन अलग से व्यवस्था करेंगी। बैठक में अपर समाहर्ता के साथ प्रभारी पदाधिकारी जिला विकास शाखा, प्रभारी पदाधिकारी जिला नजारत शाखा, डीसीएलआर मोतिहारी, प्रभारी पदाधिकारी जिला सामान्य शाखा सह जिला कला संस्कृति पदाधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, पदाधिकारी शिक्षा विभाग आदि थे।

वर्तमान खरीफ मौसम में धान अधिप्राप्ति 15 नवंबर से होगी शुरू

विभाग के पोर्टल पर किसानों से ही क्रय किया जायेगा धान, निबंधन 15 सितंबर से है जारी

- धान अधिप्राप्ति की पूर्व तैयारी को लेकर जिलाधिकारी ने की बैठक, तैयारियों को लेकर दिया महत्वपूर्ण दिशा निर्देश

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। खरीफ विपणन मौसम 2024-25 में धान/चावल अधिप्राप्ति 15 नवंबर से शुरू होगी।
इस वर्ष साधारण धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 प्रति क्विंटल तथा ग्रेड ए के धान का मूल्य 2320 प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है।
धान अधिप्राप्ति की पूर्व तैयारी को लेकर शुक्रवार की संध्या जिलाधिकारी अमन समीर ने बैठक किया तथा सभी व्यवस्था को ससमय सुनिश्चित करने को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिया।
कृषि विभाग के पोर्टल पर निबंधित किसानों से ही धान का क्रय किया जाएगा। इस पोर्टल पर किसानों के निबंधन की प्रक्रिया 15 सितंबर से ही प्रारंभ है। जिलाधिकारी ने इसका व्यापक प्रचार-प्रसार कराकर अधिक से अधिक इच्छुक एवं पात्र किसानों का निबंधन कृषि विभाग के पदाधिकारियों एवं कर्मियों के सहयोग से सुनिश्चित कराने को कहा। इसके लिए जिला कृषि पदाधिकारी एवं जिला सहकारिता पदाधिकारी को आवश्यक निदेश दिया।
जिलाधिकारी ने अधिप्राप्ति कार्य हेतु अक्टूबर माह के पहले सप्ताह तक अंकेक्षित एवं गैर प्रमादी समितियों (पैक्सों) के चयन की प्रक्रिया सुनिश्चित करने का निदेश दिया।
सभी धान क्रय केन्द्रों (समितियों) पर नमी मापक यंत्र की व्यवस्था सुनिश्चित की जायेगी। मापतौल यंत्र के नवीकरण एवं सत्यापन का भी निदेश दिया गया।किसानों के आधार के सत्यापन हेतु सभी केन्द्रों पर बॉयोमेट्रिक फिंगर स्कैनर की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निदेश दिया गया।
भंडारण हेतु गोदामों की जिओ टैगिंग
अधिप्राप्ति के तहत प्राप्त सीएमआर के भंडारण हेतु सभी गोदामों की जिओटैगिंग कर विभागीय पोर्टल पर प्रविष्टि कराने को कहा गया।

राइस मिलों की संबद्धता

समितियों के साथ राइस मिल की संबद्धता के लिये मिलों का सत्यापन किया जायेगा। मिलों के सत्यापन के लिये जिला स्तर पर जाँच दल गठित करने का निदेश दिया गया।

जीपीएस युक्त वाहनों का उपयोग

अधिप्राप्ति की प्रक्रिया के तहत धान एवं चावल की ढुलाई के लिए उपयोग में लाये जाने वाले सभी वाहन जीपीएस युक्त होंगे।
जिलाधिकारी ने सभी आवश्यक व्यवस्था एवं तैयारी निर्धारित टाइम लाइन के अनुरूप सुनिश्चित करने का स्पष्ट रूप से निदेश दिया।

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। नंदलाल सिंह महाविद्यालय जैतपुर दाउदपुर सारण के सेमिनार हॉल में राष्ट्रीय सेवा योजना के पदाधिकारियों डॉ संजय कुमार, डॉ प्रवीण पंकज, डॉ चन्द्रभान राम के द्वारा संचालित स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर व्याख्यानमाला पर प्रतिभागियों द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । प्रोफेसर डॉ के पी श्रीवास्तव ने कहा कि आपलोगो अपने जीवन को समृद्ध बनावें। जीवन बहुमूल्य है इस व्यर्थ न जाने दे। प्रोफेसर आफताब आलम सर ने कहा कि समाज और राष्ट्र की प्रगति आपके कन्धों पर पर है। डॉ अमृत प्रजापति ने कहा कि हमें अपने मन को पवित्र रखना होगा डॉ चन्द्रभान राम ने कहा कि अपने झिझक को दूर करने के लिए अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करना होगा।स्वच्छता की शुरूआत अपने आप से करनी होगी । डॉ शेखर कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वच्छता की शुरूआआत अपने मस्तिष्क की सफाई पर भी निर्भर करती हैं।। स्वच्छता के लिए अपने विचारों में बदलाव करने होगी।डॉ प्रवीण पंकज ने कहा कि लोभ रहित कृत्य ठरर का लक्ष्य है।तभी समाज और राष्ट्र का हित हो सकता है । डॉ संजय कुमार ने कहा कि अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान होना होगा । हम भाग्य पर नहीं कर्म पर विश्वास करें। सफलता तो निश्चित ही मिलेगी। डॉ राकेश कुमार ने कहा कि बच्चों के वर्तमान भविष्य और अतीत को समझने की आवश्यकता है।धन्यवाद ज्ञापन डॉ प्रवीण पंकज ने किया।मंच का संचालन डॉ चन्द्रभान राम ,साहायक प्राध्यापक(हिंदी विभाग) के द्वारा किया गया भाषण , कविता पाठ में भाग लेने वाले छात्रों में आदित्यनाथ,नितीश, अनुज, अरबिन्दने ओजपूर्ण विचारों से सभागार को भव्य बनाया। डॉ स्वर्ग दीप शर्मा,डॉ आशीष कुमार सिंह,डॉ श्री भगवान ठाकुर,डॉ अमृत प्रजापति, डॉ आशीष कुमार सिंह,डॉ मनोज कुमार, डॉ राकेश आदि थे।

गंडक नदी के उफान से आई बाढ़, पानी एसएसबी कैम्प में घूसा, जवानों की बढ़ी परेशानी

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा पर तैनात एसएसबी कैम्प में बाढ़ का पानी घुस गया है।जिससे जवानों की परेशानियां बढ़ गई है। वहीं चकदहवा के बिन टोला और झंडू टोला में गंडक नदी के बाढ़ का पानी घुस गया है।।बतादें की गंडक नदी के किनारे इंडो नेपाल सीमा पर बसे झंडू टोला और ठाढ़ी स्थित एसएसबी कैम्प में बाढ़ का पानी घुस आने से जवानों की परेशानी बढ़ गई है।बतादें की ये एसएसबी कैंप के जवान इंडो नेपाल सीमा की सुरक्षा में लगे रहते है।यह क्षेत्र भूगोलिक दृष्टि से अत्यंत दुर्गम क्षेत्र माना जाता है।ऐसे में इन जवानों को दोहरी परेशानियों से दो चार होना पड़ रहा है। बतातें चलें कि गंडक बराज से महज 2 किलोमीटर की दूरी पर ये कैम्प है जहां गंडक बराज से छोड़े गए बाढ़ का सामना इन्हें सबसे पहले झेलना पड़ता है। फिलहाल गंडक बराज से 4 लाख से ऊपर क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है।

बगहा वाल्मीकिनगर मुख्य पथ पर पेड़ गिरने से आवागवन बाधित , सड़क पर बह रहे बाढ़ के पानी से परेशानी बढ़ी

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा। बगहा वाल्मीकिनगर के एक मात्र सड़क मार्ग के हर्दियाचांटी के समीप विशालकाय पेड़ के गिरने से घंटो सड़क जाम रहा।बतादें की लगातार भारी बारिश के कारण हर्दियाचांटी के समीप विशालकाय पेड़ आकर गिर गया है। बस ड्राइवर मोहम्मद जवाहिर ने बताया की बीती रात को ही पेड़ मुख्य सड़क पर आ गिरा था।जिसके कारण आवागवन बाधित रही। बतातें चलें कि लगातार बारिश के कारण वीटीआर जंगल के बीच बहने वाली छोटी बड़ी पहाड़ी नदियां पूरी तरह से उफनाते हुए हर्दियाचांटी के समीप बगहा वाल्मीकिनगर मुख्य सड़क मार्ग के उपर से बह रही है।

गंडक बराज से छोड़ा गया पानी निचला इलाका हुआ जलमग्न

- गंडक बराज कंट्रोल रूम हाई अलर्ट पर

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा। वाल्मीकिनगर में स्थित गंडक बराज फाटक बांध से 4,32,500 से ऊपर पाने छोड़ा जा रहा है। बतादें की पिछले दो दिनों से हो रहे लगातार गंडक नदी के जल स्त्रोत क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण नदी के जलस्तर में भारी बढ़ोतरी हो रही है।अनुमान के अनुसार अभी इसके जलस्तर में और बढोत्तरी होगी। गंडक नदी के उफान भरते ही गंडक नदी के निचले इलाके जलमग्न हो गए हैं वहीं इसके किनारे बसे लोगों के लिए मुश्किलें बढ़ गई हैं। बतातें चलें कि गंडक नदी के जलग्रहण क्षेत्रों की सहायक नदियों राप्ती, काली गंडकी,त्रिशूली,सोनभद्र,तमसा आदि नदियों के क्षेत्रों में लगातार भारी बारिश हो रही है,जिस कारण गंडक नदी के जलस्तर में भारी बढोत्तरी दर्ज की जा रही है। शनिवार के दिन के एक बजे गंडक बराज कंट्रोलरूम से जारी किए गए रीडिंग चार्ट के मुताबिक 4,32,500 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। गंडक बराज कंट्रोलरूम को हाई अलर्ट पर रखा गया है। साथ ही जलसंसाधन विभाग के अधिकारियों द्वारा मोनेटरिंग की जा रही है।

सारण जिला के 277 पैक्सों के अध्यक्ष एवं प्रबंधकारिणी समिति के सदस्यों का चुनाव नवंबर-दिसंबर में ,5 चरणों में संभावित

- चुनाव की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी ने की बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय । सारण जिला में 277 पैक्सों के अध्यक्ष पद एवं प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य पदों के लिये चुनाव होना है। यह चुनाव 5 चरणों में नवंबर-दिसंबर माह में होने की संभावना है।
इस चुनाव की पूर्व तैयारी को लेकर जिलाधिकारी श्री अमन समीर ने शुक्रवार की संध्या में बैठक किया।
पैक्स चुनाव में 5 लाख से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। 9 अक्टूबर को ड्राफ्ट मतदाता सूची का प्रकाशन किया जायेगा। इसके उपरांत 22 अक्टूबर तक दावा/आपत्ति प्राप्त किया जायेगा। प्राप्त दावा आपत्ति के निष्पादन के बाद 25 अक्टूबर को फाइनल मतदाता सूची का प्रकाशन किया जायेगा। इस चुनाव के लिए जिला में 863 मतदानकेन्द्र बानाये जाएंगे। मतदान समाप्ति के उपरांत उसी दिन मतगणना भी की जायेगी।
इस चुनाव के लिये सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी निवार्ची पदाधिकारी होंगे तथा उनके द्वारा जिलाधिकारी के अनुमोदन से सहायक निवार्ची पदाधिकारी बानाये जाएंगे।जिलाधिकारी ने सभी बीडीओ को प्रखंड स्तर पर सभी आवश्यक कोषांगों का गठन सुनिश्चित करने का निदेश दिया। शिकायत एवं समाधान अनुश्रवण कोषांग का गठन जिला स्तर पर किया गया है। इसी तर्ज पर सभी प्रखंडों में भी इस कोषांग का अभी ही गठन सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया।
जिला सहकारिता पदाधिकारी को सभी मतपेटियों की आवश्यक मरम्मती एवं ऑयलिंग हेतु आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया।
स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण माहौल में चुनाव संपन्न कराने के लिये असामाजिक तत्वों के विरुद्ध भारत नागरिक सुरक्षा संहिता के अंतर्गत निरोधात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया।
उपयुक्त मामलों में सीसीए तहत कार्रवाई हेतु भी प्रस्ताव भेजने का निदेश दिया गया। सभी अनुमंडल पदाधिकारी को विधि व्यवस्था को लेकर आवश्यक पूर्व कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया।
बैठक में उपविकास आयुक्त, जिला सहकारिता पदाधिकारी तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अनुमण्डल पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी जुड़े थे।

नवनिर्मित विद्यालय भवन के उपर पेड़ गिरा ,भवन में आई दरारें

प्रात: किरण संवाददाता

बगहा । वाल्मीकिनगर स्थित मध्यविद्यालय के उपर बीती रात विशालकाय पेड़ के गिरने से भवन को नुकसान पहुंचा है।गनीमत रही कि घटना रात्रि पहर में हुई जिससे जानमाल का कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ा। बतादें की विद्यालय का नया भवन छोटी पहाड़ी के किनारे बना हुआ है।इस पहाड़ी के ढलान और भवन के आसपास कई विशालकाय पेड़ है।बतादें की पहाड़ी क्षेत्र होने की वजह से पथरीले जमीन में पेड़ की जड़ें मजबूत नहीं होती है। जो भारी बारिश होते ही इसकी जड़ें खोखली होकर उखड़ जाती है।

नहर कि पानी से तैरता हुआ शव को पुलिस ने किया बरामद

एकमा। स्थानीय थाना पुलिस ने थाना क्षेत्र के एकमा व भूईली गांव से गुजरने वाली नहर पुल के समीप से एक 35 वर्षीय अज्ञात महिला का शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया । इसकी जानकारी पुलिस को उस वक्त मिला जब गांव के लोग सुबह में शौच के लिए निकले हुए थे उसी वक्त लोगों ने देखा कि एक महिला का शव पानी में तैर रहा है । जहां थोड़ी ही देर में इसका खबर लोगों में आग कि तरह फैल गई । इसकी सूचना लोगों ने थाना अध्यक्ष उदय कुमार को दिया तो थाना अध्यक्ष ने थाने के पुलिस पदाधिकारी शिवानी शरण सेठ कुणाल कुमार सहित अन्य पुलिस बल के साथ पहुंचकर शव को पानी से बाहर निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया महिला की शव से बदबू निकल रही थी । लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ था।

झमाझम बारिश से किसानों के चेहरे खिले

- किसानों ने कहा मृत शरीर में संजीवनी बूटी काम करता है, ठीक उसी प्रकार सुख रहे धान के पौधों में यह बारिश काम करेगा

प्रात: किरण संवाददाता

इसुआपुर । प्रखंड में सुखाड़ की मार झेल रहे किसानों के चेहरे पिछले तीन दिनों से हो रही झमाझम बारिश से खिल उठे हैं। इसे किसानों ने भगवान इंद्र की कृपा दृष्टि बताया तथा इस पानी को संजीवनी बूटी बताया। साथ ही कहा कि जैसे मृत शरीर में संजीवनी बूटी काम करता है, ठीक उसी प्रकार सुख रहे धान के पौधों में यह बारिश काम करेगा। किसानों ने बताया कि हम काफी मेहनत मजदूरी कर तथा पैसा खर्च करके धान की खेती किए थे। जो अल्प वृष्टि की वजह से सुख रहे थे। वहीं देर से ही सही लेकिन अब भी बारिश के हो जाने पर फिर से अच्छी पैदावार होगी। किसानों ने बताया कि लंबे समय के बाद यह बारिश हुई है। जिसकी वजह से महंगे दामों पर मोटर से पानी की खपत में कमी आएगी। मूसलाधार हुई बारिश से अब किसान यूरिया खाद खरीद कर धान में डाल रहे हैं। ताकि धान की पैदावार अच्छी हो सके। वहीं भीषण गर्मी से परेशान लोगों को भी बारिश होने से काफी राहत मिल रही है। बच्चे भी बारिश में स्नान करने का लुत्फ ले रहे हैं। किसान कुंदन सिंह ने बताया कि मैं तो यह मान कर चल रहा था कि सारी लगाई पूंजी, मेहनत बिना बारिश का खत्म होने के कगार पर आ चुका था। किसानों ने कहा कि हम लोग निराश हो गए थे। लेकिन प्रकृति की मेहरबानी से पिछड़े तीन दिनों से बारिश हो रही है। जिससे फिर से आस जगी है कि धान की पैदावार अच्छी होगी। किसान अवधेश सिंह, वीरेंद्र राय, राजेश सिंह, नंदकिशोर सिंह, उपेंद्र सिंह व अन्य का कहना था कि अब लग रहा है धान की पैदावार अच्छी होगी तथा हमारी खुशियां लौटेंगी।

अनावश्यक रूप से नदी के किनारे नहीं जाएं ग्रामीण : डीएम

- सुरक्षा के मद्देनजर नाव के परिचालन पर रहेगी रोक
- उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध सख्ती से पेश आएगा प्रशासन
- बाढ़ से बचाव को लेकर जिलाधिकारी ने विभिन्न वार्डों का लिया जायजा

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया। बाढ़ से बचाव के दृष्टिकोण से जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय ने बगहा अनुमंडल के पारस नगर, शास्त्री नगर के विभिन्न वार्डों का जायजा लिया। साथ ही किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए संबंधित सभी अधिकारियों को पूरी तरह मुस्तैद रहने तथा सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया।
जिलाधिकारी के द्वारा ग्रामीणों से खैरियत की जानकारी ली गयी। ग्रामीणों ने कहा कि अभी कोई समस्या नहीं है। उन्होंने बताया गया कि वर्ष 2017 में पानी घरों में प्रवेश कर गया था, उसके बाद से पानी का प्रवेश नहीं हुआ है।
जिलाधिकारी ने कहा कि अनावश्यक रूप से नदी के किनारे नहीं जाए। नाव के परिचालन पर बिल्कुल रोक रहेगी। नाव का परिचालन करने वालों के विरुद्ध सख्ती करने हेतु निदेशित किया गया।
मीडिया प्रतिनिधिगणों से बात करते हुए जिलाधिकारी ने बताया कि गंडक बराज पर पानी का दबाव बढ़ा था, जिसको लेकर जिला प्रशासन अलर्ट है। नदियों के किनारे, निचले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को चिन्हित करते हुए ऊँचे स्थानों पर लाया जा रहा है। नाव का परिचालन बंद करवा दिया गया है। बाढ़ से बचाव हेतु लगातार माइकिंग करायी जा रही है। इस कार्य में पुलिस प्रशासन का सहयोग मिल रहा है।जिलाधिकारी ने अंचल अधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी को विस्तृत माइकिंग कराने का निर्देश दिया गया। संध्या काल में भी माइकिंग कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को किसी भी आपात स्थिति से बचाव के प्रति आश्वस्त किया गया तथा जानकारी दी गयी कि बाढ़ से बचाव हेतु एस०डी०आर०एफ०, एन०डी०आर०एफ० की टीम बगहा में उपलब्ध है।कार्यपालक अभियंता, बाढ़ प्रमंडल, बगहा सहित अन्य अभियंताओं को 24७7 पेट्रोलिंग करने का निर्देश दिया गया। किसी भी प्रकार की आपात स्थिति की जानकारी देने एवं उसका निराकरण कराने का निर्देश दिया गया।जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा बाढ़ आपदा से जुड़े अन्य कई निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिया गया है, जो इस प्रकार है।

1. सभी संबंधित पदाधिकारियों को बाढ़ से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में 24 घंटे निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है।
2. सभी पदाधिकारियों को अलर्ट मोड में रहने का निर्देश दिया गया है।
3. गंडक नदी तथा सीमावर्ती क्षेत्र में बहने वाली अन्य पहाड़ी नदियों के तटीय इलाकों में माईकिंग के माध्यम से ग्रामीणों को अलर्ट कराने का निर्देश दया गया है।
4. आवश्यकतानुसार निचले/बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को ऊँचे चिन्हित स्थलों पर शिफ्टिंग कराने का निदेश दिया गया है।
5. सामुदायिक किचेन/राहत शिविर का संचालन कराने का निर्देश दिया गया है।
6. जल संसाधन विभाग के अभियंताओं को कटाव होने वाले स्थलों पर तत्काल कटाव निरोधी कार्य कराने का निर्देश दिया गया है।
7. नाव के सामान्य परिचालन पर रोक लगाने का निर्देश दिया गया है।
8. बगहा अनुमंडल के नेपाल के सीमावर्ती अनुमंडल होने तथा गंडक नदी के किनारे अवस्थित हेने के कारण एस.डी.आर.एफ. की एक टीम को एहतियातन बगहा अनुमंडल में प्रतिनियुक्त किया गया है।
9. अतिरिक्त एस.डी.आर.एफ. की एक टीम की मांग आपदा प्रबंधन विभाग से की गई है। 10. बाढ़ राहत सामग्रियों की आपूर्ति से संबंधित भेंडरों को भी तैयारी स्थिति में रहने का निदेश दिया गया है।

कार्यकर्ता साथियों की बदौलत विधानसभा में एनडीए की जीत सुनिश्चित होगी: रणविजय

प्रात: किरण संवाददाता

सारण जिला जनता यूनाइटेड कार्यकारिणी एवं प्रखंड अध्यक्षों की एक दिवसीय समीक्षा बैठक जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू की अध्यक्षता में परिसदन छपरा में आयोजित की गई कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सारण प्रमंडल जदयू प्रभारी रणविजय कुमार को सर्व प्रथम सभी नेताओं एवं कार्यकताओं ने अंग वस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया अपने स्वागत से अभिभूत प्रभारी ने सारण की घरती को नमन किया जयप्रकाश नारायण की धरती पर पहुंच कर अपने को गौरवान्वित महसूस किया अपने संबोधन में प्रमंडल संगठन प्रभारी ने कार्यकताओं को माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बिहार के आम जनों के लिए किये गये कल्याणकारी योजनाओं को जन - जन तक पहुंचाएं अपने नेता माननीय नीतीश कुमार के प्रति समर्पित रह कर आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी को नई उंचाई तक पहुंचाये । अपने संबोधन में पूर्व मंत्री गौतम सिंह ने राज्य सरकार के विकास कार्यों की चर्चा की,पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी ने सभी जिला कार्यकारिणी के सदस्यों का एवं अभिनन्दन किया तथा जिला में आम जनों तक राज्य सरकार के विकास कार्यों को सभी तक पहुंचाये अपने संबोधन में पूर्व उपसभापति सलीम परवेज ने राज्य सरकार द्वारा अल्पसंख्यक समाज के लिए माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किये जा रहे कार्यों की व्यापक चर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष बैधनाथ प्रसाद सिंह विकल ने कहा की संगठन के बदौलत ही हम लोग पार्टी को ऊंचाई पर ले जाया जा सकता है कार्यक्रता को प्रदेश से नियुक्त विधानसभा प्रभारी ने संबोधित किया गड़खा विधानसभा प्रभारी डा.हुलास मांझी(बाल श्रमआयोग सदस्य), अमनौर विधानसभा प्रभारी संजय गिरी एकमा विधानसभा प्रभारी प्रमोद पटेल, विधानसभा गुलाम गौश, मढ़ौरा विधानसभा इंद्रदेव पटेल, छपरा विधानसभा प्रभारी संदेश महतो, परसा विधानसभा नरेंद्र कुमार चंद्रवंशी , प्रदेश उपाध्यक्ष बैद्यनाथ प्रसाद सिंह बिकल,पूर्व जिला अध्यक्ष मुरारी सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष डॉ विशाल सिंह राठौड़, आनंद किशोर सिंह,कामेश्वर सिंह, ओमप्रकाश शर्मा,मदन सिंह कुशवाहा,अरशद परवेज मुन्नी , पशुपतिनाथ पटेल,कार्यालय प्रभारी ब्रजेश कुमार,ई.प्रभाष शंकर, ,चन्द्र भूषण पंडित, कुसुम देवी, शम्भू मांझी,रविप्रकाश, जयप्रकाश महतो, लियाकत अली,मन्नु गिरि, काजिम रजा रिजवी,पवन वर्मा ,भगवान दास, महेश सिंह, बृजकिशोर चन्द्रवंशी, शंकर मालाकार, जावेद अब्बास पप्पू,वीरेंद्र गिरि, गौतम सिंह,ओमनाथ भारती, मनोज कुमार सिंह, रामाधार सिंह,पवन सिंह, चन्द्रेश्वर भारती, जितेन्द्र सोनी, शिवनारायण पटेल, गामा सिंह,अनवर आलम,प्रो.ज्वाला प्रसाद,रामसिंगार सिंह, बबलू सिंह, अख्तर अली, रमेश किशन कुशवाहा काफी संख्या है पार्टी के नेताओं कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

संक्षिप्त खबरें

अपनी 21 सूत्री मांगों को लेकर भाकपा ने किया प्रदर्शन

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास)। रोहतास जिले के सासाराम में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के रोहतास इकाई के द्वारा अपनी 21 सूत्री मांगों को लेकर विशाल प्रदर्शन निकाला गया। जिसमें सैकड़ो की संख्या में महिला और पुरुष कार्यकर्ता केंद्र और राज्य सरकार के जनविरोधी नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन किया। जिसमें अग्निपथ की योजना वापस लेने, स्मार्ट मीटर लगाना बंद करने, टरद की गारंटी करने, वृद्ध एवं विधवा पेंशन में बढ़ोतरी करने, भूमिहीनों को पाँच डिसमिल जमीन देने, महंगाई पर रोक लगाने, कानून व्यवस्था में सुधार करने सहित 21 मांगों की एक मांग पत्र उठककार्यकर्ताओं ने एडीएम चंद्रशेखर प्रसाद को सौंपा। वही वक्ताओं ने कहा कि पूरे राज्य में अफसरशाही और घूसखोरी चरम सीमा पर है। जिले के अंदर कोई भी काम बिना पैसे दिए नहीं हो रहा है। ऐसे में हमारी 21 सूत्री मांगों को सरकार जब तक पूरा नहीं करती है तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

पुलिस ने दो अभियुक्त को किया गिरफ्तार

प्रातः किरण संवाददाता

नसरीगंज(रोहतास) : कछवां पुलिस ने विभिन्न कांडों के दो अभियुक्त को किया गिरफ्तार । थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम कछवां निवासी विजय यादव के 27 वर्षीय पुत्र सुनील कुमार और ग्राम खिरियांव निवासी वीर बहादुर सिंह के 20 वर्षीय पुत्र राहुल कुमार को गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया । श्री कुमार ने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त सुनील कुमार के विरुद्ध स्थानीय थाना में कांड संख्या 57/24 और राहुल कुमार के विरुद्ध कांड संख्या 112/ 23 के आलोक में विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज था । उन्होंने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों को जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया ।

बीडीओ ने लोगों को दिलाई स्वच्छता की शपथ

प्रातः किरण संवाददाता

भगवानपुर (कैमूर) प्रखंड विकास पदाधिकारी अंकिताशेखर भगवानपुर के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान की शुरूआत हुई, जिसमें सभी प्रखंड कर्मचारियों और क्षेत्र के निवासियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। यह अभियान स्वच्छ भारत मिशन के तहत आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य देश को स्वच्छ और सुंदर बनाना है । अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि स्वच्छता हमारी जिम्मेदारी है और हमें अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने सभी से स्वच्छता के महत्व को समझने और इसके लिए काम करने का आह्वान किया। स्वच्छता के बारे में जागरूकता अभियान शामिल थे।यह अभियान न केवल स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए बल्कि लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है । जिस कार्यक्रम में उप प्रमुख संजय कुमार सिंह उर्फ भोला सिंह, प्रखण्ड समन्वयक अर्चना पाण्डेय, अंचलाधिकारी अपर्णा कुमारी सहित सभी प्रखण्ड कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

अवैध बालू लदे एक ट्रैक्टर को पुलिस ने किया जब्त

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास): कछवां पुलिस ने अवैध बालू लदे एक ट्रैक्टर को किया जब्त । कछवां थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सरैया से अवैध बालू लदे एक ट्रैक्टर को जब्त कर लिया गया है । उन्होंने कहा कि जब्त ट्रैक्टर के मालिक व चालक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है । बताया कि इसकी सूचना संबंधित विभाग के अधिकारियों को दे दी गई है । श्री कुमार ने बताया कि जब्त ट्रैक्टर को स्थानीय पुलिस की अभिरक्षा में रखा गया है ।

चार दिव्यांग बेटियों के साथ पिता की खुदकुशी की खबर से स्तब्ध हैं ग्रामीण

मशरक थाना क्षेत्र के घोघीया गांव निवासी मोरई ठाकुर के पुत्र हीरालाल ठाकुर द्वारा अपनी चार दिव्यांग बेटियो के साथ दिल्ली मे खुदकुशी किए जाने की खबर मिलते ही परिजन सहित गांव के लोग स्तब्ध हो गए।मृतक दिल्ली के रंगपुरी गांव मे अपना चार दिव्यांग बेटियो के साथ रहता था।पिछले साल कैंसर से पीड़ित पत्नी सुनीता देवी की मौत के बाद चलने फिरने मे असमर्थ बेटियो की हालत देखकर वह पुरी तरह टुट चुका था।और जिंदगी को बोझ समझकर खुदकुशी कर ली।शुक्रवार को दोपहर दिल्ली पुलिस ने बदबू दे रहे शव को किराये के घर से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।मृतक बेटियो मे 18 वर्षीय नीतु कुमारी,15 वर्षीय निशी कुमारी,10 वर्षीय नीरू कुमारी और 8 वर्षीय निधि कुमारी शामिल है।पहली संतान विकलांग होने के बाद स्वस्थ संतान की चाहत में चार दिव्यांग लड़की हो गयी।

इंकलाबी नौजवान सभा आइसा ने राष्ट्रनायक भगत सिंह की 117 वीं जयंती पर निकाला युवा दावेदारी मार्च

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। आरवाईए-आइसा ने राष्ट्रनायक शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 117 वां जयंती पर आरा शहर में मार्च निकाला।यह युवा दावेदारी मार्च माले जिला कार्यालय से बस स्टैंड,पूर्वी गुमटी होते,रेलवे स्टेशन,नवादा चौक होते करमन टोला स्थित भगत सिंह की मूर्ति के पास पहुंचा।इस अवसर पर नौजवानों का जत्था बैनर के साथ होकर जुलूस निकाला।जुलूस में शहीद-ए-आजम भगत सिंह की क्रांतिकारी विरासत जिंदाबाद,भगत तेरा मिशन अधूरा हम सब मिलकर करेंगे पूरा,शहीदों के सपनों को नीलाम करने वालो खबरदार देश का युवा है तैयार,नफरत का कारोबार बंद करो-रोजगार का प्रबंध करो,रोजी दो-रोजगार दो नहीं तो गद्दी छोड़ दो,देश के छात्र-युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ बंद करो,मुद्दा मत भटकाओ-रोजगार कहा के ये बतलाओ,रोजगार पर श्वेत पत्र लाना होगा,रेल बैंक व कल-कारखानों को बेचना बंद करो,देश की संपदा को देशी-विदेशी पूंजीपतियों के हाथों बेचना बंद करो नारे के साथ उसके बाद शहीद-ए-आजम भगत सिंह के मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया !माल्यार्पण के बाद सभा आयोजित की गई !सभा संचालन आरवाईए जिला सह सचिव विशाल कुमार ने किया! मौके पर सभा को संबोधित करते हुए इंकलाबी नौजवान सभा (आरवाईए) राज्य सचिव शिव प्रकाश रंजन ने कहा कि शहीदे आजम भगत सिंह देश के छात्र-युवाओं के लिए प्रेरणादायक है !भगत सिंह ने पूंजीवाद ओर साम्राज्यवाद को मानव जाति का सबसे बड़ा दुश्मन बताया,वह हर प्रकार के शोषण के खिलाफ थे भगत सिंह एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे जहा मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हों !उत्पादन के साधनों पर कुछ लोगो का अधिकार न हों !लेकिन आज इसके बिल्कुल उलट हो रहा है !भगत सिंह ने समाज को समतामूलक बनाने के लिए लड़ाई लड़ी थी !वर्तमान सरकार उनके सपनों को कुचल रही है लोकतंत्र और संविधान खतरे में है,इसे बचाने के लिए भगत सिंह को अपना आईकॉन मानने वाले नौजवान आरवाईए के नेतृत्व में देशभर में संघर्ष चला रही है !आगे उन्होंने का कि आज हम ऐसे दौड़ में भगत सिंह को याद कर रहे है जब केंद्र के मोदी सरकार के कुछ दिन ही बचे है ! देश के छात्र-नौजवानों को नई सरकार चुननी है इस सदर्भ में सरकार के कार्यकाल का लेखा-जोखा जरुरी है !आज छात्र युवाओं सवैधानिक मूल्यों और नागरिक अधिकारों,दलितों, अल्पसंख्यकों,महिलाओं पर सत्ता प्रायोजित हमले किये जा रहे !
आरवाईए-आइसा ने कहा कि आज देश के नौजवान सम्मानजनक रोजगार चाहते है बेहतर भविष्य चाहिए जिसके लिए वह रात-दिन संघर्ष कर रहे हैं लेकिन इस नौजवानों को रोजगार उपलब्ध कराने के बदले उनके हाथों में भाजपा सरकार तलवार थमा कर उन्हें नफरती उन्मादी और दंगाई बना कर एक विशेष धर्म के खिलाफ युद्ध में झोंक देने का अभियान चला रही हैं। जिसके खिलाफ आरवाईए भगत सिंह और अंबेडकर को अपना आईकॉन मानने वाले नौजवानों को संगठित कर देशभर में इस नफरत के कारोबार और इस तबाही और बर्बादी के खिलाफ देश भर में आंदोलन चला रहे है !मौके पर माले जिला कार्यालय सचिव दिल राज प्रीतम,आरवाईए जिलाअध्यक्ष निरंजन केशरी,जिला सह सचिव अखिलेश कुमार,अजित कुमार,दिलीप कुमार,अमित यादव आदि शामिल हुए।

रजत जयंती की तैयारी में जुटा विद्यालय परिवार

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। शहर के गोढ़ना रोड स्थित आर्यन रेसिडेंसियल पब्लिक स्कूल अपने स्थापना का पच्चीसवां वर्षगांठ इस वर्ष मनाने जा रहा है। स्कूल के द्वारा अपने इस रजत जयन्ती वर्ष में इस अवसर पर विद्यालय स्तरीय त्रैमासिक कार्यक्रम करने का रुपरेखा तैयार किया गया है। एक विशेष भेंट में स्कूल के निदेशक विनोद कुमार राय ने बताया की त्रैमासिक कार्यक्रम का उद्धघाटन आठ अक्टूबर को ध्वजारोहण व मशाल प्रज्वलन से शुरू होगा। तदुपरान्त विभिन्न तिथियों को भिन्न भिन्न छात्र छात्राओं के बीच अलग अलग प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी । इसके अन्तर्गत सुलेख प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, मेंहदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, उत्प्रेरक संबोधन, टेराकोटा - आर्ट एण्ड क्राफ्ट - कल्चरल वर्कशॉप, आओ खेलें खेल, चुनावी प्रक्रिया की समझ, वॉलीवॉल, बैडमिंटन, चेस प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। इसी क्रम में शहर के जाने-माने एलोपैथ, होमियो एवं आयुर्वेद के चिकित्सकों के समन्वय से छात्र छात्राओं का भौतिक परीक्षण कर उन्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व सजग रहने का परामर्श दिया जाना है। भेंटवार्ता के क्रम में स्कूल के प्रधानाचार्य बाबूराम पांडेय ने बताया कि कार्यक्रम का समापन धूमधाम व हर्षोल्लास के वातावरण में ग्यारह दिसम्बर को भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से होना है। इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वयक शशिभूषण मिश्र ने बताया कि समापन समारोह शहर से आमंत्रित बुद्धिजीवीयों, सुधि अभिभावक गणों , आदरणीय शुभचिंतकों व छात्र छात्राओं की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। जिसके लिये जोरशोर से तैयारी चल रही है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि व सम्मानित अतिथि हेतु समाज के प्रथम स्तरीय गणमान्यों से सम्पर्क कर आमंत्रित किया जा रहा है।

आजम सरदार भगत सिंह जन्मोत्सव का 117 वीं वर्षगांठ मनाया गया

- सरदार भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । आजम सरदार भगत सिंह जन्मोत्सव का 117 वीं वर्षगांठ पर स्थानीय कर्मन टोला स्थित सरदार भगत सिंह के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।माल्यार्पण कार्यक्रम की अध्यक्षता जनता दल यूनाइटेड अति पिछड़ा प्रकोष्ठ बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद सिंह चंद्रवंशी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भगत सिंह राष्ट्र हित में देश की आजादी की लड़ाई में जो क्रांति वीर योद्धाओं ने शंखनाद किया और लाहौर के ब्रिटिश शासन के पुलिस अधिकारी जॉन सैंडर्स की हत्या कर , 1928 की घटना ऐतिहासिक पुरुषों में भगत सिंह, राजगुरु, और सुखदेव सिंह, यूआ पीढ़ियों के लिए प्रेरणा श्रोत है जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना जीवन हंसते हंसते फांसी की बेरियों को चूमा और सर्वस्व न्योछावर किया है ऐसे मां सपूत को हम सभी नतमस्तक हैं। प्रमुख साथी धीरज कुमार,दीपक कुमार कौशल किशोर, राहुल कुमार ,रवि यादव सतेंद्र कुमार, जावेद अख्तर,रंगीला राम , राम निवास जी विजय ,रजनीश कुमार,राजेश चंद्रवंशी ,पंकज सिंह, ददन यादव शामिल थे।

एथलेटिक्स मैराथन दौड़ दिल्ली में बिहार के रोहतास जिले की बेटी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर लहराया परचम

- विद्यालय प्रबंधन ने छोटी कुमारी को किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज । शिक्षा क्षेत्र में ख्याति प्राप्त बिक्रमगंज शहर के पड़रिया रोड नियर चर्च समीप अवस्थित डिवाइन लाइट पब्लिक स्कूल के प्रांगण में शनिवार को एक सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित की गई । जिस कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के निदेशक चंदेश्वर भारती ह्यअजेयह्न और संचालन उप प्राचार्य ओम प्रकाश पांडेय ने की। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए विद्यालय के निदेशक श्री अजेय ने बताया कि शहर के तेंदुनी गांव के रहने वाले मूल निवासी मुन्ना साह की पुत्री छोटी कुमारी ने राज्य समेत जिला और अनुमंडल का नाम रौशन की है। बताया कि बिहार राज्य की ओर से नेतृत्व कर रही डिवाइन लाइट पब्लिक स्कूल के कक्षा 7 की छात्रा छोटी कुमारी एथलेटिक्स दिल्ली

मैराथन के एक किलोमीटर रेस की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त की है। जिसका रिकॉर्ड 4.19 रहा। उन्होंने बताया कि छोटी कुमारी की इस सफलता से विद्यालय परिवार में काफी खुशी की लहर दौड़ गई है। श्री भारती ने कहा कि छोटी कुमारी एथलेटिक्स दिल्ली मैराथन की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्य के साथ-साथ जिला ,अनुमंडल एवं गांव का नाम रौशन की है। जिसको लेकर विद्यालय प्रबंधन के द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिस कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक श्री भारती समेत सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने छोटी कुमारी को शुभकामनाएं व बधाई देते हुए जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए कई टिप्स दिए। तत्पश्चात निदेशक ने छोटी कुमारी को अंग- वस्त्र ,मेडल एवं कप से सम्मानित किया। साथ ही साथ विद्यालय प्रबंधन की ओर से छोटी कुमारी के पिता मुन्ना साह को भी फूलमाला एवं अंग-वस्त्र से सम्मानित किया गया ।साथ ही मौके पर मौजूद स्थानीय पत्रकार एवं आगंतुक अतिथियों को अंग-वस्त्र से सम्मानित किया गया। उक्त दौरान कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों की आंखों से कुछ देर के लिए खुशी के आंसू छलक पड़े।

पूर्व एमएलसी ने विधायक के बयान पर जताया ऐतराज

प्रातः किरण संवाददाता

आरा (भोजपुर)। आरा पहुंचे जदयू के पूर्व एमएलसी रणविजय सिंह ने किया प्रेस वार्ता बड़हरा और शाहपुर में आई बाढ़ विभीषिका को लेकर जनप्रतिनिधि द्वारा दिए गए ज गलत बयान का क्या खंडन उस बयान पर आपत्ति जताते हुए खंडन किया है बड़हरा के कुछ पंचायत को बाढ़ग्रस्त घोषित व किए जाने की घोषणा की थी. रणविजय सिंह ने कहा कि अ सोशल मीडिया के माध्यम से मुझे भी मिला. इस बयान कार कोई मतलब नहीं है क्योंकि यह सच्चाई से परे है. उन्होंने बताया है कि किसी भी इलाके को बाढ़ग्रस्त घोषित करने का कार्यप सरकार अथवा जिले के जिलाधिकारी करते हैं लेकिन विधायक जी ने पता नहीं किन कारणों से ऐसा किया है उन्हें ऐसा नहीं व करना चाहिए था. पूर्व एमएलसी ने कहा कि बड़हरा सीएम नीतीश कुमार से भी बात हुई है इसके अलावा डिप्टी सीएम ने भी भोजपुर जले के बाढ़ वाले इलाकों की समीक्षा की है।

धावा दल के टीम ने पिरो प्रखंड के बाजार से बाल श्रम से लिप्त दो बाल श्रमिक को कराया मुक्त

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। एक्सेस टू जस्टिस प्रोग्राम के तहत समाजिक संस्था दिशा एक प्रयास, भोजपुर और श्रम संसाधन विभाग, भोजपुर और स्थानीय पुलिस के सहयोग से पिरो बाजार से बाल श्रम से लिप्त दो बालश्रमिक को विमुक्त कराकर बाल कल्याण समिति भोजपुर में प्रस्तुत किया गया और नियोजक आकाश कुमार और मोहम्मद खान पर प्राथमिक दर्ज कराया गया। बाल श्रम से लिप्त बालश्रमिक को मुक्त कराने के लिए पिरो प्रखंड मे धावा दल की टीम ने जगह जगह पर छापेमारी किया। इस दौरान पिरो बाजार से जेवर ज्वेलर्स और बैग का दुकान पिरो चौक से दो बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया। इस धावा दल की टीम में तनु प्रिय श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी पिरो, अभिमन्यु कुमार श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी जगदीशपुर, कुमार गौरव श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी सहार, पूजा मौर्या श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी तरारी और संस्था दिशा एक प्रयास, भोजपुर से रजत कुमार एवं स्थानीय पुलिस शामिल थे।

कर्मचारी महासंघ गोप गुट प्रखंड का तीसरा सम्मेलन किसान भवन बड़हरा में संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

भोजपुरःबड़हरा प्रखंड में कर्मचारी. महासंघ गोप गुट प्रखंड का तीसरा सम्मेलन इ किसान भवन बड़हरा में संपन्न हुआ, सम्मेलन की शुरूआत झंडोत्तोलन के साथ सुरु किया गया, झंडोत्तोलन प्रखंड के अध्यक्ष मोहम्मद मेराज खा ने किया, संचालन जिला सचिव सुमन ने किया, दो मिनट का मौन रखा गया शहीदों के नाम जिनके संघर्ष के बल पर आज हम सभी सुविधाएं ले रहे हैं, स्थाई नियुक्ति, अनुकम्पा लाभ, पुराना पेंशन, सहित अन्य लाभ मिलता है, सम्मेलन का उद्घाटन जिला महासंघ गोप गुट भोजपुर के मुख्य संरक्षक जानकी प्रसाद सिंह ने अपने संबोधन में केंद्र सरकार ,राज्य सरकार के मजदूर कर्मचारी किसान विरोधी नीतियों का विस्तार से चर्चा किए, महासंघ गोप गुट जिलाध्यक्ष रामानंद सिंह,धर्म कुमार ,रमेश कुमार यादव, अवधेश पासवान, संजय कुमार सिंह, मन नारायण शर्मा, सहित अन्य ट्रेड यूनियन के नेता भी सम्मेलन को संबोधित किये, प्रखंड कमिटी के चुनाव के लिए दो चुनाव पदाधिकारी के रूप में धर्म कुमार जिला सचिव प्राथमिक शिक्षक संघ गोप गुट भोजपुर और संजय कुमार सिंह जिला सचिव भूमि सुधार कर्मचारी संघ गोप गुट के देख रेख मे प्रखंड कमिटी का चुनाव किया गया ।

जिसमें निम्नलिखित कर्मी अगले सत्र के लिए प्रखंड कर्मचारी संघ के पद धारक हुए, संरक्षक उमेश कुमार सुमन, अध्यक्ष, मेराज खा, सचिव दीपक शर्मा, कोषाध्यक्ष अक्षय चौबे, उपाध्यक्ष धीरज कुमार, पिंटो कुमार, सुनील कुमार, संध्या सिंह, संयुक्त सचिव हरि नाथ राम निशांत अली, नौशाद, शोभा कुमारी, राहुल राम, कार्यालय सचिव मनीष कुमार संघर्ष कमिटी प्रमोद कुमार सिंह, शशि भूषण सिंह, संतोष कुमार सिंह, धनंजय कुमार सिंह त्रिलोकी सिंह, राणा शक्ति, नलिनी कांत त्रिपाठी, राजीव रंजन प्रसाद को सर्व सम्मति से उपस्थित कर्मियों ने निर्वाचित किया, अंत में केंद्र,राज्य, जिला और प्रखंड स्तरीय प्रस्ताव पारित किया गया, पुराना पेंशन लागू हो, स्थाई नियुक्ति हो, संविदा कर्मियों को 30 हजार मानदेय हो, समान शिक्षा प्रणाली लागू हो, वरीयता सूची का प्रकाशन हो, विभागीय प्रोन्नति हो, लंबित बकाया वेतन भुगतान हो, स्वच्छता कर्मियों का बारह माह का मानदेय भुगतान हो, किसान सलाहकारों का जनसेवक में समायोजन हो, सभी संविदा कर्मियों को स्थाई नियुक्ति किया जाए, ठेका प्रथा बंद हो, 44,श्रम कानून लागू हो, निलंबित कर्मियों को विभागीय कार्रवाई करते हुए समय से निलम्बन मुक्त किया जाए,अंत मे अध्यक्षीय भाषण के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा किया गया ।

शुभाशुभ फल की प्राप्ति हेतू प्रतिपदा में देवी को चंदन लेप,त्रिफला व कंघी अर्पण करें

- शारदीय नवरात्र पर इस बार डोली पर होगा देवी का आगमन, प्रस्थान करेंगी मुर्गे पर

प्रातः किरण संवाददाता

गडहनी। आश्विन शुक्लपक्ष प्रतिपदा से शारदीय नवरात्र का प्रारंभ होता है।यह अनुष्ठान इस वर्ष 3 अक्टूबर 2024 दिन गुरुवार से प्रारंभ हो रहा है।इस दिन कलश स्थापन सुबह से ही प्रारंभ होगा।कलश स्थापन के साथ देवी भगवती का षोडषोपचार पूजन पाठ और नवरात्र व्रतारम्भ शुरू होगा। 10 अक्टूबर दिन गुरूवार को अष्टमी महागौरी देवी का पूजन होगा उसी दिन ही अष्टमी अनुष्ठान रखा जायेगा और रात्री 11:41 पर महानिशा पूजा होगा। 11 अक्टूबर दिन शुक्रवार को नवमी मे सिद्धिदात्री देवी का पूजन पाठ होगा।नवमी तिथि प्रातः में 5:47 तक है इसलिए ह्ययावन्नवमी होमादिकम्चरेतह्न के अनुसार हवन हो जायेगा।12 अक्टूबर दिन शनिवार को दशमी तिथि रात्री 4:19 तक है और श्रवणा नक्षत्र 12:52 तक है अतः श्रवणायाम विसर्जयेतह्न के साथ पाठ का समापन और प्रतिमा, कलश विसर्जन आदि किया जायेगा साथ ही नवरात्र व्रत का पारणा भी होगा।उसी दिन नीलकंठ दर्शन के साथ दशहरा अर्थात विजया दशमी का त्योहार मनाया जायेगा।वहीं संध्याकाल मे रावण वध का आयोजन किया जायेगा।पण्डित अमरेन्द्र कुमार मिश्र बताते है कि इस वर्ष गुरुवार से शारदीय नवरात्र प्रारंभ होने से दूर्गा देवी का आगमन दोला (डोली) पर हो रहा है जो कि शुभ नहीं है।इसलिए सचेष्ट होकर देवी की उपासना करनी है और बार-बार क्षमायाचना करते रहना होगा।वहीं देवी को प्रसन्न करने व शुभ फल की प्राप्ति हेतू प्रतिपदा मे देवी को केश पवित्र (चंदन लेप व त्रिफला) तथा कंघी अर्पण करें।विजयादशमी शनिवार को पड रहा है इसलिए देवी का प्रस्थान ह्यमुर्गे की वाहनह्न पर होगा जो व्याकुलता व्याग्रता का परिचायक हैह्न।उन्होने बताया कि आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक शारदीय नवरात्रि का पर्व होता है। यदि कोई पूरे नवरात्रि का उपवास-व्रत न कर सकता है तो सप्तमी, अष्टमी और नवमी तीन दिन उपवास करके देवी की पूजा करने से वह संपूर्ण नवरात्रि के उपवास के फल को प्राप्त करता है।

श्रीमद् देवी भागवत में आता है कि यह व्रत महासिद्धि को देने वाला, धन-धान्य प्रदान करने वाला, सुख व संतान बढ़ाने वाला, आयु एवं आरोग्य वर्धक आदि फलदायक होता है।

वंचित बच्चों पर आयोजित परख के कार्यक्रम में पार्षद,समाजिक कार्यकर्ताओं एवं रंगकर्मी के साथ हुई परिचर्चा

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। नगर निगम सभागार में परख द्वारा आयोजित शहरी वंचित बच्चों को, कैसे शिक्षित हो और मुख्य धारा से कैसे जुड़े इस पर विमर्श हुआ। जिसकी अध्यक्षता उप मेयर प्रतिनिधि सरोज सिंह ने की।विशिष्ठ अतिथि रंगकर्मी अशोक मानव , एंव पार्षद शमीम आरवी थे। सरोज सिंह ने कहा कि परख द्धारा इस कार्यक्रम में जहां हमारी जरुरत होगी हर संभव मदद करने की अस्वासासन दिया। समाजिक कार्यकर्ता मानव जी ने कहा की समाज के स्तर पर जो भी मदद पड़ेगी हम से ये संस्था ले सकती है।हम हर तरह से तैयार हैं क्यों कि हम चाहते हैं कि समाज के बंचित बच्चे पढ़ लिख जाएं।पार्षद आरवी ने कहा परख द्वारा जो भी जिम्मेदारी दी जायेगी उसे हम सब मिलजुल कर काम करेगे । पार्षद मुन्ना महतो ने भी कहा की शिक्षा के महत्व देते हुए अपने यहां जरुरत पड़ी तो लर्निंग सेंटर खोलने में मद्दद करेगें। इस पूरे सफल आयोजन को संयोजन करने में चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता संटू लाल और आलोक कुमार (दीपक) की सरहनीय भूमिका रही। इसका संचालन निदेशक सुनील श्रीवास्तव ने किया ।इस अवसर समिल होने वाले प्रमुख लोगो में पर्षद मालती सीता देवी , दीपू तेली, जितेंद्र कुमार, बिभू जैन, जीतू चौरसिया, मन्तु सिंह, भानु दुबे, अभय श्रीवास्तव , बम ओझा ,साहेब लाल लड्डू भोपाली, और संजय पाल उपस्थित थे।

बिचली पट्टी गडहनी में दुर्गापूजा पर दैत्यों की संहार की कहानी का जीवंत रूप देखेंगे श्रद्धालु व भक्तगण

- श्रद्धालु कर सकेंगे माँ के दिव्य रूप का दर्शन

अमरेन्द्र कुमार मिश्र

गडहनी। नगर पंचायत गडहनी के बिचली पट्टी मे दुर्गा पुजन का इतिहास रहा है।यहाँ सैकड़ों वर्ष पहले से ही शारदीय नवरात्रि पर श्रद्धा भाव से श्रद्धालुओ द्वारा मातारानी की प्रतिमा स्थापित कर विधि विधान के साथ पूजन अर्चना की जाती रही है।पूजा समिति के मुख्य सलाहकार भगवान प्रसाद सोनी कहते है कि हम सभी युवा पीढी अपने पूर्वजो के पदचिन्हो पर चलते हुए उसका निर्वहन कर रहे है।इस शारदीय नवरात्र पर दुर्गा पूजा समिति बिचली पट्टी नगर पंचायत गडहनी अपने दर्शनार्थियों को माँ जगदम्बा द्वारा सेनापति कराल और दुर्गमा सुर का संघार की जीवन्त कहानी दिखायेंगी, वहीं भारत माता अपने भक्तगणो को एक प्यारा सा संदेश देती नजर आयेंगी। माँ जगदम्बा और हिरण्याक्ष का पौत्र दुर्गमा सुर महासंग्राम एवं दुर्गमासुर के सेना पति कराल वध की झलक दर्शको को आकर्षित करेगी।वहीं माँ जगदम्बा अपना स्वरूप बदलकर असुरो की संहार करते नजर आयेंगी।मूर्ति टेक्नीशियन अभिषेक कुमार उर्फ चिटु के निर्देशन मे इन जीवंत प्रतिमाओं को आकार देने मे जुटे मूर्तिकार बिट्टू प्रजापति आरा की कला कौशल दर्शको को मंत्रमुग्ध करने मे कोई कोर कसर नही छोडती।वहीं टेंट और पूजा पंडाल मिस्त्री हेलाल और इम्तियाज भारती उर्फ कल्लू की तो बात ही निराली है।इनके द्वारा निर्णाम किये गए पंडाल बिजली पट्टी की शानो शौकत मे चार चांद लगा देता है।वहीं पूजा समिति के अध्यक्ष मुन्ना बाबा बताते हैं कि बिचली पट्टी गडहनी का इतिहास है कि यहाँ जो भी भक्त श्रद्धाभाव से माँ दुर्गा की पूजा कर मन्नते मांगी है माँ उसकी मुरादे पुरी की है।टेक्नीशियन अभिषेक चिटु बताते हैं कि नवरात्रि के अवसर पर भक्तो को मां दुर्गा की और दैत्यों का संहार की कहानी जीवंत रूप से दिखाया जाता है।साथ ही यहाँ हर साल माता रानी के द्वारा अलग अलग स्वरूप धारण कर दैत्यों का वध जो की पौराणिक कथा में हम सुनते आते है उसी कहानी को सांचे मे ढालकर दिव्य अलौकिक व जीवन्त सच्ची प्रतिमा दिखाने का प्रयास किया जाता है।

पूरे प्रखंड में सबसे जायदा उत्सुक रहते हैं लोग

बिचली पट्टी मे स्थापित माँ दुर्गा की प्रतिमा का जीवंत रूप व पूजा देखने के लिए नगर पंचायत सहित प्रखण्ड व जिले के लोगो मे उत्सुकता बनी रहती है।पूजा से पूर्व ही लोगो द्वारा आंकलन किया जाने लगता है की इस बार कौन राक्षस का वध करेंगी।वहीं बिचली पट्टी मे भीड की बाते करें तो कोई सीमा नहीं रहती।यहां पर एकदम अदभुत अविश्वसनीय पूजा होती है।यहां पे आये श्रद्धालुओ की सबसे जायदा मनोकामना पूरी होती है।यही कारण है कि यहां के लोग मनोकामना माता भी कहते है।सदस्यों का कहना है कि हमारे पूर्वज ही इस पूजा की नींव रखे थे।हम नए सदस्य लोग पूजा महोत्सव का तीसरा पीढ़ी हैं।कोर कमिटी के सदस्य और मुख्य सलाहकार भगवान प्रसाद सोनी बताते है की दर्शनार्थी की सुविधा के लिए हर तरह की व्यवस्था कमिटी की सभी सदस्य के तरफ से की गई है।पंडाल मे सीसीटीवी कैमरा, भुलेन्टियर की तैनाती के साथ ही प्रशासन के गाइडलाइन को ध्यान मे रखकर वो सभी ब्यवस्था की तैयारी की जा रही है।मुख्य सलाहकार का कहना है की ये परंपरा आगे भी ऐसे ही बनी रहें इसके लिए हर साल कुछ न कुछ नया किया जाता है।एक बार आने के बाद हर बार लोगो का झुकाव होता है पूजा पंडाल मे श्रद्धालुओ का हुजूम उमड़ता है।मातारानी के इस महोत्सव पूजार्चन को शान्ति और सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सफलता की गति प्रदान करने मे पूजा समिति के अध्यक्ष मुन्ना बाबा व सचिव सुनील यादव, कोषाध्यक्ष रवि शंकर यादव, उपाध्यक्ष अखिलेश कुमार, उप सचिव कमलेश पासवान, उप कोषाध्यक्ष राहुल कुमार, मूर्ति टेक्नीशियन अभिषेक कुमार उर्फ चिटु, संयोजक छोटन सिंह, कमलेश सोनी, धर्मेन्द्र सोनी, अमित परमार, पंकज सिंह, रमन सिंह, नितेश सिंह सहित स्थानीय आम जनता का सहयोग प्रशंसनीय है।

रंगदारी मांगने में 72 घंटे के अंदर पुलिस ने किया उद्भेदन, आरोपी पकड़ा गया

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) । रोहतास जिले के सासाराम मुफस्सिल थाने की पुलिस ने रंगदारी के रूप में 15 लाख रुपए के सोना मांगने के एक मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए 72 घंटे के अंदर हीं मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर पूरे मामले का उद्भेदन कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी काराकाट थाना क्षेत्र अंतर्गत नांद गांव निवासी चंदेश्वर राम का 22 वर्षीय पुत्र जय कुमार है। जिसके पास से पुलिस ने एक मोबाइल भी बरामद किया है। मामले में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सासाराम - 2 कुमार वैभव ने सासाराम मुफस्सिल थाने में शनिवार को आयोजित एक प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि बीते 25 सितंबर को मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बैजला गांव निवासी 35 वर्षीय मनीष कुमार द्वारा थाने को एक लिखित सूचना दी गई कि उनके व्हाट्सएप पर संदेश एवं वीडियो भेज कर 15 लाख रुपए का सोना रंगदारी के रूप में मांगा जा रहा है। रोहतास पुलिस ने पूरे मामले को गंभीरता से लिया और पीड़ित मनीष कुमार के आवेदन पर कांड दर्ज कर पुलिस अधीक्षक रोहतास को सूचना दी। उन्होंने बताया कि रोहतास एसपी के निर्देश पर कांड के सफल उद्भेदन एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु हमारे नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया तथा जिला आसूचना इकाई के सहयोग से कांड में संलिप्त अपराधी को 72 घंटे के अंदर हीं बिक्रमगंज से गिरफ्तार कर लिया गया। डीएसपी 2 ने बताया कि जिस मोबाइल से रंगदारी की मांग की गई थी उस मोबाइल को जप्त कर लिया गया है तथा गिरफ्तार अभियुक्त द्वारा भी पुलिस के समक्ष अपना अपराध स्वीकार किया गया है। टीम में मुफस्सिल थानाध्यक्ष रौशन कुमार, जिला आसूचना इकाई डेहरी के प्रभारी राहुल कुमार, एस आई नितेश कुमार व अन्य शामिल रहे।

आरोपी ने फिल्मी स्टाइल में मांगी रंगदारी

मिली जानकारी के मुताबिक आरोपी जय कुमार द्वारा पीड़ित मनीष कुमार से 15 लाख रुपए तक का सोना ऐंठने के लिए फिल्मी तरीका अपनाया गया। पीड़ित को भेजें लिखित एवं वीडियो संदेश में आरोपी द्वारा 10 दिनों के अंदर बी एड कॉलेज के समीप स्थित ट्रांसफार्मर के ठीक बगल के एक खंडहर में सफेद पत्थर के नीचे सोना रखने की बात कही गई। साथ हीं आरोपी ने कहा कि अगर 10 दिनों के अंदर सोना नहीं रखा तो तुम्हें एवं तुम्हारे भाई को गोली मार कर हत्या कर दिया जाएगा। वहीं पुलिस के समक्ष अपने स्वीकारोक्ति बयान में आरोपी ने बताया कि उसके मां-बाप द्वारा काफी कर्ज लिया गया था। जिसके कारण लोग उसके घर पर पैसे की मांग के लिए बराबर आते थे और इससे वह काफी अपमानित महसूस करता था। उसने बताया कि मनीष कुमार के गांव में भाई की शादी होने के कारण उनसे पूरी तरह परिचित था ।

विद्युत विभाग दिनारा ने आठ बकायेदार उपभोक्ताओं को भेजा लीगल नोटिस

प्रातः किरण संवाददाता

दिनारा(रोहतास) : विद्युत आपूर्ति प्रशाखा दिनारा अंतर्गत विभिन्न ग्रामीण उपभोक्ताओं के विद्युत कनेक्शन विच्छेदित उपभोक्ताओं के परिसर में लीगल नोटिस भेजी गयी है । पूर्व में जो बकायेदार उपभोक्ताओं का कनेक्शन काटा गया था एवं अब तक बकाये राशि का भुगतान एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा नहीं किया गया है । उन पर विभाग नीलामवाद दायर करने हेतु लीगल नोटिस भेज रही है । सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज राज कुमार द्वारा बताया गया कि प्रखंड दिनारा के उपभोक्ताओं पर नीलामवाद दायर करने हेतु आठ लीगल नोटिस भेजी गई है । निबंधित डाक से भेजी गई नोटिस में ग्राम दिनारा के हामिद अंसारी पर बकाया 1लाख 01 हजार 448, गायत्री देवी पर 66 हजार 651, गीता देवी पर 30 हजार 103, अभिनाश कुमार पर 56 हजार 873, बिलासपुर के प्रमोद साह पर 26 हजार 328, ओसियर सिंह पर 17 हजार 023, कुसही के नारायण सिंह पर 31 हजार 086, खनिता के सरोज सिंह पर 32 हजार 046 बकाया राशि है । उक्त उपभोक्ताओं का विद्युत कनेक्शन कटने के बाद भी बकाया राशि जमा नही करने के कारण बिहार और उड़ीसा लोक मांग वसूली अधिनियम 1914 के तहत नीलामवाद दायर करने हेतु अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है । आगे बताते चले कि कनीय विद्युत अभियंता दिनारा विकाश कुमार द्वारा बताया गया ।

करण जौहर के भुगतान में कटौती की बात पर सैफ ने दी प्रतिक्रिया

बॉलीवुड के मशहूर निर्देशक और निर्माता करण जौहर ने हाल ही में सितारों की मनमानी फीस की मांग को लेकर खुलकर बोला है। करण ने हाल के वर्षों में पुरुष फिल्म सितारों के बारे में अक्सर बात की है कि वे अपनी खुद की बैंकेबिलिटी को लेकर बहुत ज्यादा उत्साहित हैं और अपने ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए ऐसी रकम की मांग कर रहे हैं जिसके वे हकदार नहीं हैं। अब अभिनेता सैफ अली खान को भी इस मुद्दे पर सहयोग मिला है। आइए जानते हैं सैफ ने इसे लेकर क्या कहा?

क्या कहा था करण जौहर ने?

बातचीत में करण जौहर ने ने कहा था कि वह अब कलाकारों की मांगों के आगे नहीं झुकते। निर्देशक ने कहा, 'मैं अब ऐसा नहीं करता। मैंने 'किल' नाम की एक छोटी फिल्म बनाई, मैंने उस पर पैसा खर्च किया, क्योंकि यह एक नए कलाकार के साथ एक अच्छी फिल्म थी। करण ने कहा हम जिस भी स्टार के पास गए, उन्होंने मुझसे बजट के बराबर ही पैसे मांगे। जब बजट 40 करोड़ रुपये है, तो आप 40 करोड़ रुपये कैसे मांग सकते हैं? क्या आप मुझे गारंटी दे रहे हैं कि फिल्म 120 करोड़ रुपये कमाएगी? एक साक्षात्कार के दौरान सैफ अली खान ने मजाक में कहा कि उन्हें करण की हाल ही में की गई घोषणा के विरोध में एक यूनियन शुरू करना चाहिए, जिसमें उन्होंने कहा था कि अब वह सितारों को उनकी मांग के अनुसार भुगतान नहीं करेंगे, जब तक कि उन्हें यह न लगे कि यह राशि उचित है। सैफ ने बातचीत के दौरान कहा कि वह कभी भी उन सितारों की श्रेणी में नहीं रहे हैं, जो बहुत अधिक राशि की मांग करते हैं और उन्होंने खुद को मंदी प्रूफ बताया।

एक साक्षात्कार में सैफ से जब करण की हालिया टिप्पणियों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने हंसते हुए कहा, 'करण पे-चेक में कटौती करना चाहते हैं, मुझे यकीन नहीं है कि मुझे इस पर अपना खुद का यूनियन बनाना चाहिए या नहीं। मुझे यकीन है कि वह सही हैं, लेकिन जब हम पे-चेक में कटौती की बात करते हैं तो यह मुझे थोड़ा परेशान करता है। पे-चेक में कटौती नहीं।' करण का तर्क है कि आजकल ज्यादातर बड़े सितारे बड़ी ओपनिंग की गारंटी नहीं दे सकते हैं। हाल के महीनों में अक्षय कुमार और अजय देवगन जैसे सितारों की फिल्में 5 करोड़ रुपये से कम की ओपनिंग पर आई हैं। करण ने कहा था कि जिन सितारों से उन्होंने फिल्म 'किल' के लिए संपर्क किया था, वह 40 करोड़ रुपये तक की मांग कर रहे थे, जबकि पूरी फिल्म का बजट ही इतना था।

कृति सेनन की दो पत्ती की रिलीज पर आया अपडेट

अभिनेत्री काजोल और कृति सेनन जल्द ही एक साथ स्क्रीन शेयर करने जा रही हैं। दोनों अभिनेत्रियां फिल्म दिलवाले में साथ नजर आईं थी, इस फिल्म के नौ साल बाद वह दोनों फिर एक साथ एक पर्दे पर दिखाई देंगी। दोनों की फिल्म दो पत्ती अक्तूबर के आखिरी सप्ताह में रिलीज होगी।

दो पत्ती में नजर आएंगी कृति सेनन

अभिनेत्री कृति सेनन इस साल क्रू और तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया में नजर आईं थी। अब वह ओटीटी पर शशांक चतुर्वेदी की दो पत्ती में नजर आने वाली हैं। खबरों की मानें तो फिल्म के मेकर्स काफी समय से चल रही इस फिल्म को अक्तूबर के आखिरी सप्ताह में रिलीज कर सकते हैं।

पिछले साल रिलीज की हुई थी घोषणा

दो पत्ती पिछले साल 2023 दिसंबर में रिलीज किए जाने की घोषणा मेकर्स ने की थी। इस पोस्टर में काजोल, कृति सेनन को पोस्ट में देखा गया था। दो पत्ती टीजर में कृति सेनन एक कॉप के किरदार में नजर आ रही हैं। काजोल ने पहली बार किसी फिल्म में कॉप का किरदार निभाया है।

काजोल के लिए कृति ने कही थी ये बात

फिल्म दो पत्ती की शूटिंग पूरी होने का एक वीडियो कृति सेनन ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया। उन्होंने काजोल के लिए कहा कि आपके साथ फिर से काम करने का मौका मुझे मिला, मैं इसके लिए खुद को बहुत ही खुशनसीब मानती हूं। आप इस दुनिया में बहुत ही सरल और सहज स्वभाव की महिला हैं। आपने मुझे अपना सबसे अच्छा काम करने में बहुत मदद की है, उसके लिए धन्यवाद।

कृति सेनन को चुनौतीपूर्ण लगा किरदार

दो पत्ती में कृति सेनन को अपना किरदार काफी चुनौती पूर्ण लगा था। एक बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, दो पत्ती में आपको बहुत सारा ग्राफ, इमोशन, ड्रामा और रहस्य दिखाई देने वाला है। इस फिल्म में काम करना थोड़ा चुनौती पूर्ण रहा। हालांकि, टीम के सहयोग से हम इसे पूरा कर पाए।

पलक सिधवानी ने तारक मेहता का उल्टा चश्मा को कहा अलविदा

लोकप्रिय टीवी शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा में सोनू भिड़े के रूप में नजर आने वालीं अभिनेत्री पलक सिधवानी ने एक आधिकारिक बयान जारी कर निर्माताओं पर उनका शोषण करने का आरोप लगाया है। उनका यह बयान प्रोडक्शन से कानूनी नोटिस मिलने के बाद आया है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि उन्होंने अपने शुरुआती अनुबंध का उल्लंघन किया है। मीडिया को दिए अपने बयान में, पलक सिधवानी ने निर्माताओं के आरोपों से इनकार किया। साथ ही यह आरोप लगाया कि वह बेहद सौहार्दपूर्ण तरीके से इस्तीफा दे रही थीं लेकिन निर्माताओं को ये बात अच्छी नहीं लगी। अपने कानूनी नोटिस में, नीला फिल्म्स ने पलक पर अपने अनुबंध में महत्वपूर्ण धाराओं का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। नोटिस में आगे कहा गया है कि अभिनेत्री ने कई मौखिक और लिखित चेतावनियों के बावजूद अपनी हरकतें जारी रखीं। इससे शो और सोनू भिड़े के किरदार को काफी नुकसान पहुंचा।

हालांकि, पलक ने उल्लेख किया कि उन्होंने पांच साल पहले उक्त अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे और निर्माताओं को उनके सोशल मीडिया समर्थन करने के बारे में पता था। आधिकारिक बयान में कहा गया है, तारक मेहता का उल्टा चश्मा फेम पलक सिंधवानी, जो सोनू का किरदार निभाती हैं, उन्होंने निर्माताओं द्वारा मानसिक उत्पीड़न और लगातार दुर्व्यवहार का हवाला देते हुए शो छोड़ दिया है। उन्होंने अनुबंध के उल्लंघन के आरोपों से भी इनकार किया है। उन्होंने कहा कि अब जब उन्होंने शो छोड़ दिया है तो निर्माता उन्हें परेशान करने के लिए मुद्दे पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। पलक ने आगे कहा कि उन्हें अपने अनुबंध की कॉपी सालों बाद मिली है। अभिनेत्री ने साझा किया कि उन्होंने कोविड काल के दौरान ब्रांड एंडोर्समेंट करना शुरू कर दिया था लेकिन समस्याएं उनके इस्तीफा देने के बाद आईं।

26 वर्षीय अभिनेत्री ने कहा कि उन्होंने 8 अगस्त को शो छोड़ने के अपने फैसले के बारे में प्रोडक्शन को बताया था, लेकिन निर्माताओं ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उन्हें अपने आधिकारिक ईमेल का इंतजार करने के लिए कहा।

वकील के किरदार में नजर आएंगी अदा शर्मा

अभिनेत्री अदा शर्मा अपने नए सीरीज शो रीता सान्याल में नजर आने वाली हैं। इस शो में अदा को सान्याल के रूप में आप एक वकील और जासूस की भूमिका में देखा जाएगा। यह सीरीज कानून और न्याय पर आधारित है। सीरीज को डिजनी प्लस हॉटस्टार पर 14 अक्टूबर से देखा जा सकता है। सीरीज को दर्शक मोबाइल पर फ्री में स्ट्रीम कर सकते हैं। सीरीज को लेकर बातचीत के दौरान अभिनेत्री अदा शर्मा ने कहा कि मैं हमेशा से ऐसा रोल निभाना चाहती थी। मैं जैसा किरदार चाहती थी, वैसा ही किरदार मुझे मिला है। इस किरदार में काफी कुछ मेरे जैसा है- कुछ सराहनीय, कुछ डरावना, कुछ प्यारा। जब मैंने इस सीरीज की स्क्रिप्ट को सुना तो मुझे पता था कि यह शो मेरे लिए ही है। एक अभिनेता के तौर पर हमें अलग-अलग किरदार निभाने होते हैं। एक साथ एक शो में मुझे 10 लोगों की भूमिका निभाने का मौका मिला है। यह एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो एक वकील और जासूस के तौर पर अपना नाम बड़ा करने की कोशिश करती है। सान्याल एक ऐसी लड़की है जिसे कॉमिक बुक पढ़ना पसंद है। यह एक ऐसी कहानी है जो शायद ही आपने पहले देखी, सुनी या पढ़ी हो।

राजेश्वरी नायर और कृष्णन अय्यर के प्रोडक्शन में बनी इस सीरीज को अभिरूप घोष ने निर्देशित किया है। सीरीज के लेखक अमित खान हैं। शो की प्रोड्यूसर राजेश्वरी नायर ने कहा, रीता सान्याल थ्रिलर, भावनात्मक और साजिशों पर आधारित सीरीज है। मुझे स्टोरी सुनना पसंद है, ये वाकई कुछ ऐसी ही है। अदा शर्मा ने इस सीरीज में शानदार किरदार निभाया है।

देव आनंद की वजह से मैं फिल्मी दुनिया में आया

पिछली बार स्ट्रीमिंग फिल्म 'मस्त में रहने का' में नजर आने वाले अभिनेता जैकी श्रॉफ ने दिवंगत अभिनेता देव आनंद को उनकी जयंती पर याद किया। जैकी श्रॉफ ने अपने इंस्टाग्राम के स्टोरीज सेक्शन में सिनेमा के दिग्गज को याद करते हुए एक वीडियो शेयर किया। उन्होंने वीडियो पर लिखा, देव साहब के आशीर्वाद से, मैं फिल्मी दुनिया में आया। जिन्हें नहीं पता उन्हें बता दें कि जैकी श्रॉफ ने देव आनंद की 1982 की फिल्म स्वामी दादा से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी। देव आनंद से पहली मुलाकात में उन्हें सेकेंड लीड रोल ऑफर किया गया था, लेकिन 15 दिन बाद देव आनंद ने अपना मन बदल लिया और मिथुन चक्रवर्ती को यह रोल दे दिया। जैकी को शक्ति कपूर के एक गुर्गे के रूप में एक बिना श्रेय वाली भूमिका में कास्ट किया गया था। इससे पहले जैकी एक ट्रैवल एजेंट के रूप में काम करते थे और एक विज्ञापन कंपनी में भी काम करते थे। विज्ञापन में उनके कार्यकाल ने उन्हें मॉडलिंग असाइनमेंट दिया और इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, उन्हें स्वामी दादा में कास्ट कर लिया गया। हालांकि यह सुभाष घई निर्देशित हीरो थी जिसमें जैकी श्रॉफ ने प्रशंसा हासिल की और 1980 के दशक में वह एक बड़े स्टार बन गए। उन्होंने 'तेरी मेहरबानियां', 'त्रिदेव', 'परिंदा', 'कर्मा' और अन्य फिल्मों में अभिनय किया।

बिग बी और रजनीकांत संग काम करना सौभाग्य की बात

तमिल एक्शन ड्रामा वेट्टैयान में अमिताभ बच्चन और रजनीकांत के साथ सिल्वर स्क्रीन शेयर करने को तैयार हैं स्टार राणा दग्गुबाती। उन्होंने कहा कि उत्सुकता तो है लेकिन घबराहट भी महसूस कर रहा हूं। आइफा के दौरान बातचीत में राणा ने कहा, बच्चन और रजनीकांत सर जैसे दिग्गजों के साथ काम करना किसी बेहतरीन अवसर से कम नहीं है, जो मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मगर इन सबसे बढ़कर यह मेरे लिए बेहद रोमांचक पल है। यह मेरे लिए सीखने और समझने का मौका है कि कला के उच्च स्तर तक पहुंचने के लिए क्या करना पड़ता है। इस फिल्म में इतने बेहतरीन कलाकार हैं, जिसमें से फहाद फासिल भी एक हैं, क्या वह इस बात से सहमत हैं कि यह ब्लॉकबस्टर होगी? मैं बेहद उत्साहित हूं और हां, उत्सुकता साफतौर पर देखी जा सकती है। फिल्म में बेहद प्रतिभाशाली लोगों का समूह है और यह अपने आप में बेहद खास होगी। लेकिन यहां सबसे ज्यादा मायने दर्शकों का फैसला रखता है। मुझे उम्मीद है कि दर्शक इसे उसी जोश के साथ अपनाएंगे, जिसके साथ हमने इसे अपनाया है। पिछले कुछ सालों में केजीएफ, बाहुबली और पुष्पा जैसी पैन इंडिया फिल्मों ने न केवल रिकॉर्ड तोड़े हैं, बल्कि बॉक्स-ऑफिस को भी नया आकार दिया है, जिससे हिंदी फिल्मों को कड़ी टक्कर मिली है। भारतीय दर्शकों को लुभाने के साथ-साथ, पैन इंडिया फिल्मों ने साबित कर दिया है कि क्षेत्रीय कहानी कहने की कला बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुंच सकती है। पैन इंडिया फिल्मों को इतना लोकप्रिय बनाने के बारे में बात करते हुए, 39 वर्षीय स्टार ने कहा, सिनेमा यूनिवर्सल है, हम सिर्फ भाषाओं के आधार पर ही अलग हैं, लेकिन दर्शकों के लिए यह एक भावना, एक उत्साह और एक ही कहानी है। जब आप दिलों को छू लेनी वाली कहानी सुनाते हैं तो भाषा और क्षेत्र मायने नहीं रखते। उन्होंने कहा, यह सिर्फ पुरस्कार देने के बारे में नहीं है, यह कहानियों को शेयर करने के बारे में है, उस जुनून की खोज के बारे में है जो सिनेमा को वास्तव में एक अविश्वसनीय माध्यम बनाता है और जिसे हम सभी प्यार करते हैं। इसके साथ ही ये इसे साकार करने वालों की प्रतिभा का जश्न है। मैं चाहता हूं कि दर्शक महसूस करें कि वे भी इस उत्सव का हिस्सा हैं। वह मेजबानी को एक एडवेंचर की तरह देखते हैं। कहते हैं, यह दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही अपनी हाजिर जवाबी से उनका ध्यान आकर्षित करने की चुनौती है। यह मुझे हमेशा तैयार रखता है। मुझे दर्शकों के साथ बातचीत, तुरंत कनेक्शन पसंद है इससे पूरा आयोजन खास बन जाता है।

अलाना पांडे की डेब्यू सीरीज द ट्राइब का ट्रेलर रिलीज

एक और स्टारकिड इंडस्ट्री में कदम रखने को तैयार है। दांव लगाया है अक्सर ही नेपोटिज्म के आरोपों से घिरे रहने वाले करण जौहर ने। बात हो रही है अनन्या पांडे की चचेरी बहन अलाना पांडे की। वे द ट्राइब सीरीज से डेब्यू करने जा रही हैं। इस सीरीज का आज ट्रेलर जारी किया गया है। मालूम हो कि अनन्या पांडे को भी स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2 से करण जौहर ने ही लॉन्च किया था। अब अलाना भी उन्हीं की ऑरिजनल सीरीज से इंडस्ट्री में आ रही हैं। अलाना पांडे सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं। द ट्राइब सीरीज के जरिए वे एक्टिंग की दुनिया में आगाज कर रही हैं। इस वेब सीरीज का निर्देशन ओमकार पोतदार ने किया है। करण जौहर इसके निर्माता हैं। यह सीरीज 4 अक्तूबर को रिलीज होगी।

प्रजनन क्षमता पर रोगों का प्रभाव: भारत में बढ़ती चिंता

भोपाल । भारत में, पुरानी बीमारियों और प्रजनन संबंधी समस्याओं के बीच संबंध कई जोड़ों के लिए चिंताजनक होता जा रहा है। भोपाल में बिरला फ़र्टिलिटी और आईवीएफ में आईवीएफ विशेषज्ञ डॉ. सोनल चौकसे बताती हैं जैसे-जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप और ऑटोइम्यून विकार जैसी स्थितियाँ व्यापक होती जा रही हैं, प्रजनन स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव अधिक ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। मधुमेह एक महत्वपूर्ण कारक है जो पुरुषों और महिलाओं दोनों में प्रजनन क्षमता को ख़राब कर सकता है। महिलाओं में, मधुमेह का ठीक से प्रबंधन न किए जाने से अक्सर अनियमित मासिक धर्म चक्र, ओवुलेशन संबंधी कठिनाइयाँ और गर्भपात का जोखिम बढ़ जाता है। पुरुषों के लिए, मधुमेह शुक्राणु की गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और स्तंभन दोष का कारण बन सकता है। भोपाल में बिरला फ़र्टिलिटी और आईवीएफ में आईवीएफ विशेषज्ञ डॉ. सोनल चौकसे मधुमेह प्रबंधन के महत्व पर ज़ोर देती हैं- मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी पुरानी बीमारियों का प्रबंधन प्रजनन क्षमता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इन स्थितियों का प्रभावी उपचार प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली जटिलताओं को रोक सकता है। उच्च रक्तचाप या उच्च रक्तचाप भी प्रजनन स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करता है। महिलाओं में, यह गर्भावस्था के दौरान जटिलताओं का कारण बन सकता है, जैसे कि प्रीक्लेम्पसिया, और ओवुलेशन को बाधित कर सकता है। क्रोनिक हाइपरटेंशन वाले पुरुषों में शुक्राणुओं की संख्या और गतिशीलता में कमी आ सकती है, जिससे इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए जीवनशैली में बदलाव और दवाएँ आवश्यक हो जाती हैं। ल्यूपस और रुमेटीइड गठिया सहित ऑटोइम्यून विकार प्रजनन परिदृश्य को और भी जटिल बना देते हैं। ये स्थितियाँ हार्मोनल असंतुलन का कारण बन सकती हैं और प्रजनन अंगों को प्रभावित कर सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप गर्भधारण करने की कोशिश कर रहे जोड़ों के लिए चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं। महिलाओं को अनियमित मासिक धर्म और गर्भपात का अनुभव हो सकता है, जबकि पुरुषों में शुक्राणु उत्पादन में गिरावट देखी जा सकती है।

रोल्स रॉयस ने कलिनन सीरीज 2 को भारत में लॉन्च किया

मुंबई, एजेंसी।। 27 सितंबर 2024 से रोल्स-रॉयस मोटर कार्स कलिनन सीरीज 2 भारत में उपलब्ध होगी आइरीन निक्केन, रीजनल डायरेक्टर, एशिया-पैसेफिक, रोल्स-रॉयस मोटर कार्स ये महत्वपूर्ण ऐलान करते हुए कहा कि भारत में कलिनन सीरीज 2 की शुरुआत एशिया पैसेफिक रीजन में रोल्स-रॉयस के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 2018 में अपने पहले लॉन्च के बाद से, इस बेमिसाल मोटर कार ने युवा और काफी अधिक विविधता वाले कस्टमर ग्रुप को आकर्षित किया है, और आज कलिनन ब्रांड के पोर्टफोलियो में सबसे अधिक मांग वाली रोल्स-रॉयस है कलिनन सीरीज 2 नई टेक्नोलॉजीज, नए मैटीरियल्स, सावधानीपूर्वक डिज़ाइन अपडेट और बेस्पोक के माध्यम से सेल्फ-एक्सप्रेशन के लिए इनोवेटिव अवसरों को इंटीग्रेट करती है। 2018 में लॉन्च की गई ओरिजनल कलिनन दुनिया की पहली सुपर-लक्जरी एसयूवी थी, जो एक शानदार, यूनिक और हर मांग को पूरा करती थी। परफॉर्मेंस और इंजीनियरिंग के दृष्टिकोण से, इसमें धरती पर सबसे अधिक मांग वाले और पूरी तरह से विपरीत माहौल के बराबर वास्तविक ऑफ-रोड क्षमताएं होनी चाहिए थीं।

लोहे ने सोने को कर दिया फेल ! पांच साल में 2000 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न

नई दिल्ली, एजेंसी। जब भी कीमती धातु की बात सामने आती है, लोग सोना यानी गोल्ड को तवज्जो देना ज्यादा पसंद करते हैं। इसका कारण है इसे निवेश के रूप में सबसे बेहतर एसेट के रूप में देखा जाता है। सोने की कीमत जिस तरह से बढ़ रही है, उससे लोगों में इसमें और विश्वास बढ़ा है। सोने की कीमत अभी प्रति 10 ग्राम 75 हजार रुपये पार है। पिछले एक महीने में सोने में करीब 4 हजार रुपये की तेजी आई है। वहीं लोहे के प्रोडक्ट बनाने वाली एक कंपनी के शेयर भी बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले 5 साल में इसने सोने से ज्यादा रिटर्न दिया है।

सोने की कीमत 75349 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। हालांकि इसमें उतार-चढ़ाव जारी था। जुलाई में बजट में सोने से कस्टम ड्यूटी कम करने की घोषणा के बाद इसकी कीमत में जबरदस्त गिरावट आई थी। उस समय सोने की कीमत 74 हजार रुपये के पार थी। इस घोषणा के बाद इसमें एक ही दिन में 5 हजार रुपये तक की गिरावट आई थी। 5 साल पहले यानी साल 2019 में सोने की कीमत प्रति 10 ग्राम 39 हजार रुपये से कुछ ज्यादा थी। अब सोने की कीमत 75 हजार रुपये से कुछ ज्यादा है। ऐसे में सोने की कीमत में 5 साल में करीब 36 हजार रुपये की तेजी आई है। यानी इन 5 साल में सोने ने निवेशकों को करीब 90 फीसदी रिटर्न दिया है। अगर आपने 5 साल पहले सोने में एक लाख रुपये का निवेश किया होता तो आज यह निवेश 1.90 लाख रुपये होता। यानी आपको 5 साल में एक लाख के निवेश पर 90 हजार रुपये का फायदा होता।

5 साल में इस कंपनी ने दिया जबरदस्त रिटर्न

पिछले 5 साल में जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड कंपनी ने निवेशकों को जबरदस्त रिटर्न दिया है। यह कंपनी लोहे से जुड़े कई प्रोडक्ट बनाती है। इनमें स्लैब, ब्लूम्स, रोल्ड कॉइल्स, प्लेट्स और रेजर ब्लेड आदि शामिल हैं। इस कंपनी के शेयर ने पिछले 5 साल में 2000 फीसदी से ज्यादा रिटर्न दिया है। 5 साल पहले इस कंपनी के शेयर की कीमत 36.70 रुपये थी। अभी इसकी कीमत 778 रुपये है। ऐसे में इसने इन 5 सालों में निवेशकों को करीब 2020 फीसदी का रिटर्न दिया है। अगर आपने 5 साल पहले इस कंपनी के एक लाख रुपये के शेयर खरीदे होते तो आज इनकी वैल्यू 20 लाख रुपये होती। यानी आपको 19 लाख रुपये का फायदा हो चुका होता। यह रिटर्न सोने के 5 साल के रिटर्न से कहीं ज्यादा है।

राइट्स लिमिटेड को मिला 100 करोड़ का ऑर्डर, अडानी ग्रुप के लिए करेगी काम

नई दिल्ली, एजेंसी। रेलवे से जुड़ी कंपनी राइट्स लिमिटेड को अडानी समूह की ओर से एक बड़ा ऑर्डर मिला है। सरकारी कंपनी राइट्स लिमिटेड ने बताया कि उसे अडानी पोर्ट्स एंड एसईजेड लिमिटेड (एपीएसईजेड) से 100 करोड़ रुपये का काम मिला है। इसके तहत धामरा पोर्ट पर रेलवे ऑपरेशन और मेंटेनेंस सर्विसेज प्रोवाइड करने के लिए लेटर ऑफ अवार्ड (एलओए) मिला है। जीएसटी को छोड़कर लगभग 100 करोड़ मूल्य के इस ऑर्डर को 5 साल में पूरा करना है।

दिल्ली मेट्रो के लिए करेगी काम

इससे पहले राइट्स लिमिटेड के नेतृत्व वाला कंसोर्टियम दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्प लिमिटेड के टेंडर में सबसे कम बोली लगाने वाले के रूप में उभरा। इसके लिए बोली 87.58 करोड़ लगाई गई। स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा गया है- डीएमआरसी की आरएस-1 ट्रेनों में रेट्रोफिट वर्क के लिए दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा जारी टेंडर में राइट्स कंसोर्टियम सबसे कम बोली लगाने वाले (एल-1) के रूप में उभरा है। कुल निविदा मूल्य में राइट्स की हिस्सेदारी 49 प्रतिशत या 42.91 करोड़ है, जिसमें जीएसटी शामिल है। राइट्स ने बताया कि कंसोर्टियम को तीन साल के भीतर पूरा करना होगा। हाल ही में राइट्स लिमिटेड पात्र शेयरधारकों के लिए 1:1 बोनस शेयर अलॉटमेंट और 5 प्रति शेयर के अंतिम डिविडेंड की घोषणा की। इस साल पीएसयू के शेयर की कीमत में 45 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। बीएसई पर राइट्स लिमिटेड के शेयर 7.70 या 2.11 प्रतिशत की गिरावट के साथ 357.70 पर बंद हुए।

कंपनी का प्लान

राइट्स लिमिटेड ने आईटी और एआई पर केंद्रित कई उपायों के साथ भविष्य के लिए तैयार कंपनी बनने पर ध्यान केंद्रित किया है। बीते दिनों रेल मंत्रालय के तहत एक इंफ्रा स्ट्रक्चर, कंसल्टेंसी और इंजीनियरिंग कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक राहुल मिथल ने एक बयान में यह बात कही। पिछले पांच दशकों में राइट्स ने मामूली शुरुआत से बढ़कर चालू वित्त वर्ष में प्रतिष्ठित नवरत्न का दर्जा हासिल किया है।

सुजलॉन एनर्जी को लेकर बुलिश हैं मॉर्गन स्टेनली, दिया 88 रुपये का टारगेट प्राइस

नई दिल्ली, एजेंसी। ग्रीन स्टॉक सुजलॉन एनर्जी लिमिटेड को लेकर बड़ी खबर आई है। ब्रोकरेज फर्म मॉर्गन स्टेनली ने सुजलॉन एनर्जी की रेटिंग को कम कर दिया है। ब्रोकरेज हाउस ने 'इक्वलवेट' रेटिंग दी है। पहले सुजलॉन को 'ओवरवेट' रेटिंग दी गई थी। बता दें, शुक्रवार को सुजलॉन एनर्जी के शेयर बीएसई में करीब 1 प्रतिशत की गिरावट के साथ 81.08 रुपये के स्तर पर बंद हुए हैं। हालांकि, कंपनी के टारगेट प्राइस में इजाफा किया गया है। निवेशकों के लिए अच्छी बात यह है कि ब्रोकरेज हाउस ने टारगेट प्राइस में इजाफा किया है। मॉर्गन स्टेनली ने सुजलॉन एनर्जी का टारगेट प्राइस 73 रुपये से बढ़ाकर 88 रुपये प्रति शेयर कर दिया है। जोकि गुरुवार की क्लोजिंग की तुलना में 8 प्रतिशत अधिक है। मनी कंट्रोल की रिपोर्ट के अनुसार ब्रोकरेज हाउस ने अपने नोट्स में कहा है कि सुजलॉन एनर्जी के शेयरों की कीमतों में पिछले कुछ समय से लगातार तेजी देखने को मिल रही है। ब्रोकरेज हाउस का कहना है कि बीते 6 महीने में कंपनी के पोजीशनल निवेशकों का पैसा दोगुना हो गया है। जबकि इस दौरान निफ्टी50 इंडेक्स में 78 प्रतिशत की तेजी आई है।

ब्रोकरेज हाउस क्यों है बुलिश

सुजलॉन एनर्जी के शेयरों की कीमतों में तेजी के पीछे की वजह लगातार मिलने वाला ऑर्डर है। साथ ही कंपनी के बैलेंसशीट और कैश फ्लो बेहतर हुआ है। मौजूदा समय में सुजलॉन एनर्जी का ऑर्डर बुक 5 गीगावाट के आल टाइम हाई पर है। बता दें, ब्रोकरेज हाउस का मानना है कि बढ़ते प्रतिद्वंदिता के बाद भी विंड एनर्जी सेक्टर में सुजलॉन एनर्जी को सबसे अधिक फायदा मिलेगा।

भारतीय कंपनी टाटा विदेश में डिफेंस मैन्यूफैक्चिरंग लाइन बनाएगी

नई दिल्ली, एजेंसी। डिफेंस सेक्टर बड़ा ही स्पेशलाइज्ड सेक्टर है। इसमें अधिकतर विदेशी कंपनियों का दबदबा रहा है। लेकिन ऐसा पहली बार हो रहा है कि कोई भारतीय कंपनी विदेश में डिफेंस मैन्यूफैक्चिरंग लाइन बनाएगी। जी हां, यह खबर टाटा ग्रुप की तरफ से आई है। ग्रुप की एक कंपनी विदेश में एक मेजर डिफेंस मैन्यूफैक्चरिंग लाइन स्थापित करने की राह पर है।

टाटा ग्रुप की एक कंपनी है टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड। टीएएसल की तैयारी कैसाब्लांका में यह प्लांट बनाने की है। यह प्लांट शुरू में रॉयल मोरक्कन सशस्त्र बलों के लिए बख्तरबंद वाहन बनाएगा। यह कंपनी लंबे समय में अफ्रीकी बाजार के बड़े हिस्से को सर्व करने की योजना बना रही है। टाटा ग्रुप की इस यूनिट में व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफॉर्म का उत्पादन होगा। यह प्लेटफार्म एक उभयचर पैदल सेना लड़ाकू वाहन होता है। यह सभी प्रकार के इलाकों में नेविगेट करने में सक्षम होता है। योजना है कि उस कारखाने में हर साल 100 कैम्बेट व्हीकल्स का उत्पादन करने में सक्षम होगा। प्लांट एक साल के भीतर काम करना शुरू कर देगा। टाटा एडवांस सिस्टम्स लिमिटेड इस तरह के कैम्बेट व्हीकल की सप्लाई भारतीय सेना को भी करती है। ये वाहन सीमित संख्या में भारतीय सेना के साथ सेवा में हैं। इन वाहनों को लद्दाख सीमा पर तैनात किए गए हैं।

काफी बड़ा है कांट्रेक्ट

टीएएसएल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक सुकरन सिंह ने बताया, यह कांट्रेक्ट काफी बड़ा है और टीएएसएल के लिए रणनीतिक महत्व का है। इससे न केवल टीएएसएल को मोरक्को के डिफेंस इकोसिस्टम को को आरंभ करने में मदद मिलेगी, बल्कि यह टीएएसएल के लिए अफ्रीका के बाकी हिस्सों में चुनिंदा रक्षा प्रणालियों के लिए लॉन्च पॉइंट के रूप में भी काम करेगा। उन्होंने ऐतिहासिक उत्पादन और आपूर्ति समझौते पर मोरक्को के समर्थन को स्वीकार किया। व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफॉर्म को टीएएसएल और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। मोरक्को द्वारा चुने जाने से पहले अफ्रीका के रेगिस्तानों में इसके कई गहन परीक्षण किए गए हैं। यह विदेश में किसी भारतीय कंपनी द्वारा स्थापित किया जा रहा पहला प्रमुख ग्रीनफील्ड डिफेंस यूनिट है। यूं तो भारत ने अतीत में प्रमुख रक्षा प्लेटफार्मों का निर्यात किया है और घरेलू स्तर पर वैश्विक खिलाड़ियों के साथ उत्पादों का निर्माण कर रहा है। लेकिन, किसी भारतीय कंपनी ने अब तक विदेशों में ऐसा नहीं किया है। यह मोरक्को में एक पूर्ण प्रमुख प्लेटफॉर्म का निर्माण करने में सक्षम पहला रक्षा संयंत्र भी होगा। इस संयंत्र में लगभग 350 लोग कार्यरत होंगे और काम का एक बड़ा हिस्सा भारत में भी किया जाएगा।

मलाबार ग्रुप ने 21,000 छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति की घोषणा की

महिला सशक्तिकरण के लिए अपनी दृष्टि को और सुदृढ़ किया

मुंबई। मलाबार गोल्ड एंड डायमंड्स की पैरेंट कंपनी और देश के अग्रणी कारोबारी समूह मलाबार ग्रुप ने बीकेसी, मुंबई के भारत डायमंड बोर्स में आयोजित एक कार्यक्रम में साल 2024 के नेशनल स्कॉलरशिप प्रोग्राम की घोषणा की. यह घोषणा समूह की प्रमुख सीएसआर पहल मलाबार नेशनल स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए अहम मील का पत्थर है, जो लड़कियों की शिक्षा को सपोर्ट करने को लेकर समूह की प्रतिबद्धता को दिखाता है. केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया. इस कार्यक्रम में मलाबार ग्रुप के चेयरमैन एमपी अहमद, मलाबार ग्रुप के एमडी (इंडिया ऑपरेशन्स) अशेर ओ, मलाबार ग्रुप के वाइस चेयरमैन अब्दुल सलाम के पी भी उपस्थित थे. इस छात्रवृत्ति कार्यक्रम (स्कॉलरशिप प्रोग्राम) के तहत इस साल भारत की 21,000 छात्राओं की शिक्षा को सपोर्ट करने के लिए 16 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं. इस पहल को लेकर मलाबार ग्रुप के चेयरमैन एमपी अहमद ने कहा,शिक्षा दुनिया को बदलने का सबसे ताकतवर साधन है. हमारा छात्रवृत्ति कार्यक्रम मलाबार ग्रुप की उस गहरी मान्यता को सीधे तौर पर दिखाती है कि शिक्षा अवसरों के द्वार खोल देती है और लोगों के जीवन को बदल देती है. हम युवतियों के लिए बाधाओं को खत्म करने को लेकर प्रतिबद्ध हैं ताकि वे अपनी शैक्षणिक आकांक्षाओं को पूरा कर पाएं और समाज के लिए सार्थक योगदान कर पाएं. अपनी शुरुआत के समय से ही मलाबार ग्रुप ने सामाजिक कल्याण से जुड़ी अपनी गतिविधियों के जरिए समावेशी वृद्धि (ग्रोथ) को लेकर अपनी गहरी प्रतिबद्धता को दिखाया है. साल 1999 में इन प्रयासों की रूपरेखा तैयार करने और इसके विस्तार के लिए मलाबार चैरिटेबल ट्रस्ट (एमसीटी) का गठन किया गया था.

हेलो गोदरेज - फसल सुरक्षा के लिए गोदरेज एग्रोवेट द्वारा शुरू की गई कृषि परामर्श हेल्पलाइन

मुंबई, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े तथा विविधीकृत खाद्य एवं कृषि-व्यवसाय समूहों में से एक, गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड (जीएवीएल) ने हाल ही में एक बहुभाषी कृषि परामर्श हेल्पलाइन, 'हेलो गोदरेज' शुरू करने की घोषणा की। यह हेल्पलाइन पर फोन करने से फसल सुरक्षा के लिए फौरन विशेषज्ञता पूर्ण समाधान मुहैया कराया जाएगा। कंपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रयास कर रही है और ऐसे में देश भर के किसानों के लिए आठ क्षेत्रीय भाषाओं - हिंदी, मराठी, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, बंगाली, पंजाबी और अंग्रेजी में उपलब्ध यह नई पहल किसानों को ज़रूरत पड़ने पर उनके खेत पर या फोन पर मदद करेगी। गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, बलराम सिंह यादव ने इस पहल पर अपनी टिप्पणी में कहा, गोदरेज एग्रोवेट में हम जो कुछ भी करते हैं उसके केंद्र में किसान और इनका परिवार ही होता है। बेहतर पैदावार के लिए सही समय पर सही समाधान की उपलब्धता और उपयोग अनिवार्य है, हैलो गोदरेज हमें वास्तविक समय में व्यक्तिगत समाधान प्रदान करके किसानों और कृषि विशेषज्ञों को जोड़ने में मदद करेगा। जलवायु में हो रहे बदलाव और कीटों के बढ़ते हमलों ने किसानों की चिंताएं बढ़ा दी हैं। खेती में ऐसी लगातार बदलती परिस्थितियों के बीच, किसानों को नए फसल सुरक्षा समाधानों और उनकी पसंदीदा भाषा में व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना समय की मांग है।

बुक माय शो के सीईओ आशीष हेमराजानी को पुलिस ने समन जारी किया है

उन पर कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के टिकट की कालाबाजारी करने का आरोप लगा है

नई दिल्ली, एजेंसी। बुक माय शो के सीईओ और को-फाउंडर आशीष हेमराजानी को मुंबई पुलिस ने समन जारी किया है। बुक माय शो ऑनलाइन टिकट बेचने का प्लेटफॉर्म है। आशीष को यह समन टिकटों की कालाबाजारी करने के आरोप में जारी हुआ है। आशीष पर आरोप है कि उन्होंने अगले साल होने वाला कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के टिकट महंगे दाम पर बेचे हैं। आशीष अरबों रुपये के मालिक हैं।

अगले साल जनवरी में कोल्डप्ले बैंड मुंबई में परफॉर्म करेगा। इसके लिए बुक माय शो पर टिकट की बिक्री की गई थी। वकील अमित व्यास ने इस कॉन्सर्ट के लिए बुक माय शो पर कालाबाजारी का आरोप लगाया है। इस मामले में अमित ने गुरुवार को आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) में शिकायत दर्ज कराई थी। टिकटों को 30 से 50 फीसदी ज्यादा कीमत पर बेचा गया है। इन पर यह भी आरोप है कि 2500 रुपये का टिकट एक लाख रुपये तक बेचा गया है।

पेड़ के नीचे आया आइडिया

आशीष को बुक माय शो का आइडिया एक पेड़ के नीचे आया था। दरअसल, दो साल तक जॉब करने के बाद वह छुट्टियां मनाने दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहां वह खाली समय में पेड़ के नीचे बैठ रेडियो पर एक प्रोग्राम सुन रहे थे। उस प्रोग्राम में उन्होंने रग्बी गेम की टिकट के बारे में विज्ञापन सुना। यहां उन्हें आइडिया आया कि क्यों न ऐसा ही कुछ फिल्मों की टिकट के लिए भी किया जाए। भारत लौटने से पहले तक उनका पूरा प्लान तैयार था।

आशीष ने दो दोस्तों के साथ साल 1999 में बिग ट्री एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड नाम से कंपनी शुरू की। उस समय देश में इंटरनेट का विस्तार बहुत ज्यादा नहीं था। स्मार्टफोन तो भूल जाइए। ऑनलाइन पेमेंट के लिए भी कोई एप्लीकेशन नहीं थी। ऐसे में आशीष के सामने कई चुनौतियां थीं। कुछ समय बाद कंपनी का नाम बदलकर गो फॉर टिकिटिंग हो गया। उस समय डॉट कॉम इंडस्ट्री की काफी डिमांड थी। ऐसे में जेपी मोर्गन चेस ने गो फॉर टिकिटिंग के अपने सारे शेयर्स न्यूज कॉर्पोरेशन को बेच दिए। अब कंपनी का ब्रांड नेम इंडिया टिकिटिंग हो गया था। साल 2002 में एक ऐसा दौर भी आया जब डॉट कॉम इंडस्ट्री का पूरा मार्केट क्रेश हो गया था। इसका असर आशीष की कंपनी पर भी पड़ा। 150 से ज्यादा कर्मचारियों वाली इस कंपनी में महज 6 लोग बचे। हालात कंपनी को बंद करने के भी आ गए थे। कई शहरों में शुरू किए गए कॉल सेंटर्स को बंद करना पड़ा।

हीरो मोटोकॉर्प और थम्स अप के खास एडिशन मैवरिक 440 थंडरव्हील्स के साथ तूफानी रफ्तार का अनुभव करें

नई दिल्ली, एजेंसी। मोटरसाइकिल्स और स्कूटरों की दुनिया की सबसे बड़ी निर्माता हीरो मोटोकॉर्प और कोका-कोला कंपनी के अंतर्गत भारत के सबसे बड़े घरेलू बेवरेज ब्रांड थम्स अप ने एक महत्वपूर्ण साझेदारी की है। इसके तहत, दोनों कंपनियां मिलकर हीरो मोटोकॉर्प की प्रमुख मोटरसाइकिल मैवरिक 440 का लिमिटेड-एडिशन वर्ज़न, मैवरिक 440 थंडरव्हील्स, पेश कर रही हैं।

हीरो मोटोकॉर्प और थम्स अप ने मिलकर एक खास सीरीज की मोटरसाइकिलें बनाई हैं, जो रोमांच और एडवेंचर की भावना को दर्शाती हैं। इस मोटरसाइकिल को मैवरिक 440 थंडरव्हील्स का नाम दिया गया है और इसे खासतौर पर साहसी और निडर लोगों के लिए बनाया गया है। इसे बनाने के लिये हीरो की तकनीकी महारत और इंजीनियरिंग को थम्स अप के एडवेंचर से जोड़ा गया है ताकि युवा ग्राहकों को एक बेहतरीन तूफानी अनुभव मिल सके। यह मोटरसाइकिल सीमित समय के लिए उपलब्ध होगी, और इसे सिर्फ वही लोग खरीद सकते हैं, जो थम्स अप के स्पेशल एडिशन पैक खरीदकर स्कैन करेंगे। यह ऑफर 15 नवंबर 2024 तक वैध रहेगा। इस कैम्पेन की शुरुआत जबर्दस्त विज्ञापनों से हो रही है, जिनमें थम्स अप के ब्रांड एंबेसडर जसप्रीत बुमराह और ऋषभ पंत नजर आयेंगे। ये दोनों भारत के सबसे निडर क्रिकेट आइकन्स हैं। इन विज्ञापनों में ब्रांड की ऊर्जा को दिखाया गया है और हर मोड़ पर मैवरिक 440 थंडरव्हील्स मोटरसाइकिल की ताकत और सही पकड़ को शानदार ढंग से बताया गया है।

श्रीलंका-न्यूजीलैंड

कीवी टीम की लग गई लंका, 88 रन पर ऑलआऊट

गॉल (श्रीलंका) (एजेंसी)। श्रीलंका के खिलाफ शनिवार को यहां दूसरे टेस्ट में फॉलोआन के लिए मजबूर न्यूजीलैंड पर टेस्ट क्रिकेट में अपनी सबसे बड़ी हार का खतरा मंडरा रहा है। न्यूजीलैंड ने दिन की शुरुआत 2 विकेट पर 22 रन से की और सुबह के सत्र में पहली पारी के बाकी बचे आठों विकेट गंवा दिए जिससे टीम 88 रन पर सिमट गई। मेहमान टीम पहली पारी के आधार पर 514 रन से पिछड़ी। न्यूजीलैंड ने दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज टॉम लैथम (00) का विकेट गंवाकर लंच तक एक विकेट पर तीन रन बनाए। न्यूजीलैंड को स्पिन की अनुकूल गॉल की पिच पर पारी की हार से बचने के लिए 511 रन और बनाने हैं। इससे पहले न्यूजीलैंड को सबसे बड़ी हार का सामना 2002 में पाकिस्तान के खिलाफ करना पड़ा था जब टीम पारी और 324 रन से हार गई थी।

श्रीलंका के लिए पहली पारी में प्रबाथ जयसूर्या ने 42 रन देकर 6 विकेट लिए जबकि पदार्पण कर रहे ऑफ स्पिनर निशान पेइरिस ने 33 रन पर तीन विकेट चटकाने के बाद दूसरी पारी में लैथम को भी पवेलियन भेजा। जयसूर्या को सबसे तेज 100 टेस्ट विकेट की उपलब्धि अपने नाम करने के लिए छह विकेट की दरकार है। यह रिकॉर्ड 1896 से इंग्लैंड के जॉर्ज लोहमैन के नाम है।

बहरहाल, न्यूजीलैंड ने दूसरी पारी में 41 ओवर में 5 विकेट खोकर 199 रन बना लिए हैं। डेवोन कॉनवे ने 61 तो केन विलियमसन ने 46 रनों का योगदान दिया। क्रीज पर फिलहाल टॉम ब्लंडेल 47 तो ग्लेन फिलिप्स 32 रन बनाकर नाबाद हैं। तीसरे दिन खराब रौशनी के कारण मुकाबला प्रभावित रहा।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

न्यूजीलैंड - टॉम लैथम, डेवोन कॉनवे, केन विलियमसन, रचिन रवींद्र, डेरिल मिशेल, टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, मिशेल सेंटनर, टिम साउदी (कप्तान), अजाज पटेल, विलियम ओ-रूर्के

श्रीलंका - पथुम निसांका, दिमुथ करुणारत्ने, दिनेश चंडीमल, एंजेलो मैथ्यूज, कामिंदु मेंडिस, धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), मिलन प्रियनाथ रथनायके, प्रभात जयसूर्या, निशान पेइरिस, असिथा फर्नांडो

रोड एक्सीडेंट में क्रिकेटर मुशीर खान जख्मी, एमसीए ने दिया मेडिकल अपडेट

लखनऊ (एजेंसी)। भारतीय बल्लेबाज सरफराज खान के छोटे भाई मुंबई के ऑलराउंडर मुशीर खान की लखनऊ के बाहरी इलाके में हुई सड़क दुर्घटना के बाद हालत अब स्थिर है

लेकिन वह आगामी ईरानी कप से शुरू होने वाले क्रिकेट सत्र से लेकर लंबे समय तक क्रिकेट नहीं खेल पाएंगे। मुशीर (19 साल) के गर्दन में चोट लगी है जिसके कारण उनके कम से कम 3 महीने तक क्रिकेट से बाहर रहने की संभावना है। इससे वह 11 अक्टूबर से शुरू होने वाले रणजी ट्रॉफी 2024-25 सत्र की शुरुआत में मुंबई के मैचों से बाहर हो गए हैं।

पता चला है कि मुशीर एक अक्टूबर से शुरू होने वाले ईरानी कप के लिए अपने गृहनगर आजमगढ़ से लखनऊ जा रहे थे लेकिन उनकी कार डिवाइडर से टकराकर पलट गई। मुशीर के साथ उनके पिता नौशाद खान भी थे जिन्हें भी पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर हुई इस दुर्घटना में मामूली खरोंच आई हैं। लखनऊ के मेदांता अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर भोला सिंह ने एक बयान में कहा कि मुशीर खतरे से बाहर हैं।

उन्होंने बयान में कहा कि पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर हुई सड़क दुर्घटना में घायल हुए क्रिकेटर मुशीर खान को गर्दन में दर्द के कारण मेदांता अस्पताल के आपातकालीन विभाग में लाया गया। उनका उपचार ऑर्थोपेडिक्स विभाग के निदेशक डॉक्टर धर्मेंद्र सिंह की देखरेख में चल रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी हालत अब स्थिर है और वह खतरे से बाहर हैं।

भारत-बांग्लादेश टेस्ट

बारिश के कारण कानपुर टेस्ट के दूसरे दिन का खेल धुला

कानपुर (एजेंसी)। भारत और बांग्लादेश के बीच दूसरे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन का खेल लगातार बारिश के कारण एक भी गेंद फेंके बगैर रद्द कर दिया गया। सुबह हल्की बूंदाबांदी के बाद तेज बारिश शुरू हो गई जिससे ग्रीन पार्क स्टेडियम पर दूसरे दिन कोई खेल नहीं हो सका। मैदानकर्मियों ने 11.15 के आसपास बारिश रूकने पर तीन सुपर सोपर्स लगाए। रोशनी भी साफ नहीं थी लिहाजा सवा 2 बजे आधिकारिक तौर पर खेल रद्द करना पड़ा।

मौसम विभाग के अनुसार रविवार को भी बारिश की संभावना है लेकिन सोमवार और मंगलवार को आसमान साफ रहने की उम्मीद है। ऐसे में मैच ड्रॉ की ओर बढता दिख रहा है। पहले दिन बांग्लादेश ने तीन विकेट पर 107 रन बनाए थे जब बारिश के कारण 35 ओवर ही फेंके जा सके थे। भारतीय तेज गेंदबाज आकाश दीप ने बांग्लादेश के सलामी बल्लेबाज जाकिर हसन और शादमान इस्लाम को आउट किया था जबकि रविचंद्रन अश्विन ने कप्तान नजमुल हुसैन शंटो के विकेट लिए थे। भारत दो मैचों की श्रृंखला में पहला टेस्ट 280 रन से जीतकर 1.0 से आगे है।

इससे पहले कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम पर बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में भारत ने शुक्रवार को टॉस जीत कर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया है। वर्षा और खराब मौसम के कारण मैच निर्धारित समय से करीब एक घंटा देरी से शुरु हुआ। ग्रीनपार्क मैदान पर बीती रात बारिश से गीली आउटफील्ड को सुखाने में ग्राउंड स्टाफ ने कड़ी मशक्कत की। मैदानी अंपायर साढ़े 9 बजे मैदान का निरीक्षण किया और 10 बजे टॉस के ऐलान की घोषणा की। मैच साढ़े 10 बजे शुरु हुआ। दो टेस्ट मैचों की सीरीज में पहला टेस्ट जीत कर अपराजेय बढ़त हासिल कर चुके भारत ने दूसरे टेस्ट मैच के लिए कोई परिवर्तन नहीं किया है और वह पिच में व्याप्त नमी का लाभ उठाने के लिए चेन्नई टेस्ट की तरह 3 तेज गेंदबाजों के साथ मैदान पर उतरा है।

1964 के बाद पहली बार हुआ ऐसा

बांग्लादेश ने नाहिद राणा और तस्कीन अहमद के स्थान पर तैजुल इस्लाम और खालिद को जगह दी है। टॉस के बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि पिछले मैच में हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही थी मगर बाद में टीम ने वापसी कर ली थी। यहां दिलचस्प है कि 1964 के बाद यह पहला मौका है जब किसी भी टीम ने टॉस जीत कर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया है क्योंकि ग्रीनपाक की पिच पर चौथी पारी में खेलना अति दुष्कर हो जाता है।

इस मैदान का रिकॉर्ड

यहां अब तक 23 टेस्ट मैच खेले जा चुके है जिसमें भारत के पक्ष में सात मैच आये हैं जबकि तीन में उसे हार का मुंह देखना पड़ा है। 13 मैचों में हार जीत का फैसला नहीं हो सका है। भारत ने यहां पिछला मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 2021 में खेला था जिसमें हार जीत का फैसला नहीं हो सका था।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

भारत- रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जाडेजा, आर अश्विन, आकाश दीप , जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज।

बांग्लादेश - नजमुल हसन शांतो (कप्तान), शादमन इस्लाम, जाकिर हसन, मोमिनुल हक, मुशफिकिर रहीम, शाकिब अल हसन, मेहदी हसन मिराज़, लिटन दास (विकेटकीपर), हसन महमूद, खालिद अहमद और तैजुल इस्लाम।

फुटबॉल:

भारत को लगा तगड़ा झटका, अंडर-20 एएफसी क्वालिफायर में हारा, ईरान ने 1-0 से दी मात

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत एक मैच जीत चुका है और 4-2 के गोल अंतर के साथ ग्रुप में दूसरे स्थान पर है। उसे अब मेजबान लाओस से खेलना है, जिसे ईरान के हाथों 0-8 से हार मिल चुकी है। भारत को अंडर-20 एएफसी क्वालिफायर फुटबाल टूर्नामेंट में चार बार के विजेता ईरान से कड़े संघर्ष में 1-0 से हार मिली। ग्रुप सी में भारत ने खेल के 88वें मिनट तक ईरान को बराबरी पर रोके रखा, लेकिन युसुफ माजरेह ने गोलकीपर प्रियांश दुबे को छकाते हुए गोल कर ईरान को जीत दिला दी। भारत एक मैच जीत चुका है और 4-2 के गोल अंतर के साथ ग्रुप में दूसरे स्थान पर है। उसे अब मेजबान लाओस से खेलना है, जिसे ईरान के हाथों 0-8 से हार मिल चुकी है।

विराट कोहली से मिलने साइकिल पर पहुंचा 15 साल का लड़का, 58 किमी. की नापी दूरी

कानपुर (एजेंसी)। टीम इंडिया के धुरंधर बल्लेबाज विराट कोहली देश के सबसे लोकप्रिय खेल सितारों में से एक हैं। भारत के पूर्व कप्तान की दीवानगी के कारण एक 15 वर्षीय लड़का उन्हें देखने के लिए बांग्लादेश के खिलाफ चल रहे कानपुर टेस्ट के लिए अपने घर से 58 किलोमीटर दूर साइकिल पर आ गया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें कार्तिकेय नाम के एक लड़के ने खुलासा किया कि उसने 27 सितंबर, शुक्रवार को सुबह 4 बजे उन्नाव से अपनी साइकिल यात्रा शुरू की। वह सुबह 11 बजे ग्रीन पार्क स्टेडियम पहुंचा। 10वीं के छात्र ने कोहली को खेलते देखने के लिए साइकिल से इतनी लंबी दूरी तय की। देखें वीडियो-

कानपुर में मैच के दौरान दर्शकों में गजब उत्साह भी देखने को मिला। टॉस से पहले ग्राउंड स्टाफ के एक सदस्य ने तो कोहली के पैर भी छू लिए। विराट कोहली चेन्नई में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के पहले मैच में बल्ले से चमकने में नाकाम रहे थे। वह 6 और 17 ही बना

पाए थे। कोहली के इस प्रदर्शन पर बाद में पूर्व कीपर पार्थिव पटेल ने भी बात की थी। उन्होंने कहा था कि मुझे नहीं लगता कि वह (विराट कोहली) उस तरह का दबाव महसूस कर रहे हैं। और जैसा कि आपने सही कहा, मुझे नहीं लगता कि स्मिथ या जो रूट या विलियमसन सोच भी सकते हैं कि वह किस प्रकार का दबाव महसूस कर रहे होंगे। दबाव उम्मीद की बात है, यह बहुत बड़ा है। उसने अपना मानक इतना ऊंचा बना लिया है कि अगर वह 60 या 70 रन भी बनाता है, तो वह विफलता के रूप में सामने आता है क्योंकि हर बार जब वह आता है, तो हम उससे 100 रन बनाने की उम्मीद करते हैं। हम उससे खेलने की उम्मीद करते हैं उस तरह की तीव्रता, जो वह हमेशा से खेलता रहा है।

ऐसे चल रहा मुकाबला - मैच बीत बात करें तो भारत और बांग्लादेश के बीच दूसरे टेस्ट मैच के शुरुआती दिन का खेल भारी बारिश के कारण शुक्रवार को यहां जल्दी समाप्त कर दिया गया। खेल रोके जाने तक बांग्लादेश ने तीन विकेट पर 107 रन बना लिए थे। बांग्लादेश ने इस दौरान लंच के बाद के सत्र में नौ ओवर के खेल में 33 रन जोड़कर कप्तान नजमुल हसन शंटो (31) का विकेट गंवा दिया। मुशफिकुर रहीम (छह) और मोमिनुल हक (40) क्रीज पर मौजूद थे।

बल्लेबाजी की तरह ऋषभ पंत की कप्तानी की भी अलग शैली है : मनोज तिवारी

सूरत (गुजरात) (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी ने ऋषभ पंत की कप्तानी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनकी कप्तानी करने की एक अलग शैली है। पंत ने टी20 विश्व कप 2024 के दौरान भारतीय क्रिकेट टीम में वापसी की है। उन्होंने 8 मैच में 127.61 की स्ट्राइक रेट से 171 रन बनाए। इसके बाद बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट की दूसरी पारी में 128 गेंदों पर 85.16 के स्ट्राइक रेट से 109 रन की पारी खेलकर फैंस का दिल जीत लिया। पंत के बल्ले से इस दौरान 13 चौके और 4 छक्के भी निकले थे। वह अपनी फार्म में हैं। ऐसे में मनोज ने कहा कि पंत की कप्तानी की शैली अलग है लेकिन फिर भी गिल के राष्ट्रीय टीम के अगले कप्तान बनने की अधिक संभावना है।

तिवारी ने कहा कि जो व्यक्ति एक नेता के रूप में सामने आ रहा है, उसे ही टीम का नेतृत्व करना चाहिए। हाल ही में, हमने देखा कि शुबमन गिल को कई श्रृंखलाओं में कप्तानी दी गई थी। इससे पता चलता है कि बीसीसीआई उनका समर्थन कर रहा है, लेकिन भारत के पास ऋषभ पंत भी हैं। पंत के पास है कप्तानी की एक अलग शैली। इसलिए ये लोग अगली टीम का नेतृत्व करने के लिए दावेदार हैं, जिसमें से गिल के पास पंत से अधिक मौके हैं।

चोट से वापसी के बाद विकेटकीपर-बल्लेबाज का पहला क्रिकेट टूर्नामेंट इंडियन प्रीमियर लीग 2024 पंत था, जहां वह मुख्य आकर्षणों में से एक थे। दिसंबर 2022 में अपनी भयानक कार दुर्घटना के बाद 14 महीने की रिकवरी के बाद उन्होंने क्रिकेट में वापसी की थी। आईपीएल 2024 में पंत ने 13 मैचों में 446 रन बनाए थे। बहरहाल, पंत अभी बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर के मैदान पर दूसरा टेस्ट खेलने में बिजी है। पंत के लिए यह टेस्ट सीरीज महत्वपूर्ण है जिसमें वह लय में आते दिख रहे हैं। इसके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की सीरीज और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज होनी है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पंत भारत के लिए तरुप का इक्का हो सकते हैं क्योंकि पिछले दो दौरों में भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज जीत रही है। इस दौरान पंत का प्रदर्शन शानदार रहा है।

10वां वूगार गशिमोव मेमोरियल शतरंज

नेपोमनिशी नें जीता रैपिड का खिताब

सुशा, अजरबैजान (एजेंसी)। अजरबैजान के दिग्गज ग्रांड मास्टर रहे वूगार गसिमोव की याद में आयोजित हो रहे इंटरनेशनल ग्रांड मास्टर टूर्नामेंट के रैपिड वर्ग का खिताब रूस के याना नेपोमनिशी नें अपने नामा कर लिया है । नेपोमनिशी नें सात राउंड में 5 अंक बनाते हुए पहला स्थान हासिल किया , पहले दिन की सयुंक्त बढ़त से खेल की शुरुआत करते हुए उन्होने दूसरे दिन हंगरी के रिचर्ड रपोर्ट को हराकर दिन का आरंभ किया पर अगले ही राउंड में उन्हे मेजबान अजरबैजान के ममेदोव रौफ से अप्रत्याशित हार का सामना करना पड़ा , खास बात यह रही की ममेदोव की यह टूर्नामेंट में एकमात्र जीत रही और वह कुल दो और ड्रॉ के साथ 2 अंक बनाकर अंतिम स्थान पर रहे , हालांकि इसके बाद नेपोमनिशी नें भारत के अरविंद चितांबरम को मात देते हुए और फिर अंतिम राउंड में मेजबान देश के अदिन सुलेमानली से ड्रॉ खेलकर खिताब अपने नाम कर लिया । पहले दिन 1 अंक बनाने वाले भारत के अरविंद चितांबरम नें दूसरे दिन अजरबैजान के शाकिरयार ममेद्यरोव से ड्रॉ खेला और अदिन सुलेमानली को हराकर 2.5 अंक बनाकर अच्छी शुरुआत की थी पर उसकी बाद पहले यान नेपोमनिशी से और फिर रूस के आर्टेमिव ब्लादिस्लाव से हारकर वह 2.5 अंक बनाकर सातवे स्थान पर रहे , अन्य खिलाड़ियों में ममेद्यारोव 4.5 अंक बनाकर दूसरे तो 4 अंक बनाकर उज़्बेक्सितान के अब्दुसत्तोरोव नोदिरबेक और रूस के आर्टेमिव ब्लादिस्लाव सयुंक्त तीसरे स्थान पर रहे ।

विराट कोहली विचार और कार्य दोनों में ऑस्ट्रेलियाई हैं : स्टीव स्मिथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिशेल स्टार्क और स्टीवन स्मिथ का मानना ??है कि विराट कोहली जिस तरह से सोचते हैं, काम करते हैं और बड़े मैचों में प्रदर्शन करने की इच्छा रखते हैं, वह ऑस्ट्रेलियाई हैं। विराट को मैदान पर अपनी आक्रामकता, एनिमेटेड चैट और मैच के दौरान जश्न मनाने के लिए जाना जाता है। विराट ने जब ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में भारत का नेतृत्व किया तो उनकी तीव्रता अपने चरम पर थी।

फिलहाल बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी को कुछ ही दिन बाकी रह गए हैं। ऐसे में ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज मिशेल स्टार्क ने विराट और ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के बीच समानताएं बताई हैं। स्टार्क ने कहा कि मेरा मानना ??है कि बड़े मैचों में प्रदर्शन करने की इच्छा के मामले में विराट कोहली शायद सबसे ऑस्ट्रेलियाई जैसे हैं। जिस तरह से वह खेल को अपनाते हैं, जिस तरह से वह खेल के बारे में सोचते हैं। उन्हें प्रतियोगिता में भाग लेना पसंद है, जो मुझे लगता है बहुत सारे ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ऐसा करते हैं।

स्मिथ अपने हमवतन के विचारों से सहमत हैं और उन्हें लगता है कि उनके समकालीन पूरी भारतीय टीम में सबसे अधिक ऑस्ट्रेलियाई हैं।उन्होंने कहा कि मेरा मानना ????है कि विराट कोहली विचार और कार्य दोनों में ऑस्ट्रेलियाई हैं। स्मिथ ने कहा कि जिस तरह से वह लड़ाई में उतरते हैं, जिस तरह से वह चुनौती को स्वीकार करते हैं और प्रतिद्वंद्वी पर हावी होने की कोशिश करते हैं। वह शायद भारतीय खिलाड़ियों में सबसे अधिक ऑस्ट्रेलियाई हैं।

यूपी भारोत्तोलन चैंपियनशिप में घटी अनोखी घटना

- **डोप टेस्ट के डर से आधे लिफ्टर टूर्नामेंट छोड़कर भागे**

नईदिल्ली, एजेंसी। डोप टेस्ट के डर से टूर्नामेंट छोड़कर भागने की घटनाएं पहले भी हुई हैं, लेकिन यूपी वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में जैसा हुआ वैसा उदाहरण अब तक सामने नहीं आया है। चैंपियनशिप में नाडा की टीम के पहुंचने की सूचना मिलते ही आधे से भी ज्यादा वेटलिफ्टर टूर्नामेंट छोड़कर भाग गए। नतीजा यह निकला कि चैंपियनशिप में कई भार वर्गों में कोई लिफ्टर नहीं होने के चलते मुकाबला ही नहीं हुआ, कई भार वर्गों में सिर्फ एक या दो लिफ्टर ही उतरे। कुछ दिन पूर्व मोदीनगर में अश्मिता खेलो इंडिया जोनल लीग और यूपी वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। इन खेलों के लिए 519 वेटलिफ्टरों की एंट्री आई। खेलो इंडिया जोनल लीग में भारतीय भारोत्तोलन संघ की ओर से डोप टेस्ट के लिए नाडा को बुलाया गया। इस दौरान लीग से भी कुछ लड़कियां भागीं। भारोत्तोलन संघ ने जब यह देखा कि लिफ्टर प्रतियोगिता छोड़कर भाग रहे हैं तो उन्होंने नाडा से गुजारिश की कि लीग के खत्म होते ही यूपी वेटलिफ्टिंग होनी है।

ऑस्ट्रेलिया की शर्मनाक हार, 126 पर सिमटी, सीरीज 2-2 की बराबरी पर

लॉर्ड्स (एजेंसी)। लॉर्ड्स के मैदान पर टॉस जीतना इन दिनों फायदा का सौदा होता जा रहा है। रिकॉर्डबुक खंगाले तो यहां खेले गए पिछले 9 वनडे मुकाबलों में जो भी टीम पहले बल्लेबाजी करती है वह जीतने में सफल रहती है। शुक्रवार शाम इंग्लैंड टीम को भी इसी तरह ऑस्ट्रेलिया पर बड़ी जीत हासिल हुई। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच वनडे मैचों की सीरीज के चौथे मैच में इंग्लैंड को 186 रनों की जीत मिली है। इंग्लैंड ने बारिश बाधित मैच में पहले खेलते हुए हैरी ब्रूक के 87 और लिविंगस्टोन के 62 रनों की बदौलत 312 रन बनाए थे जवाब में ऑस्ट्रेलियाई टीम 126 रन पर ही ऑलआऊट हो गई।

इंग्लैंड : 312-5 (39 ओवर)

इंग्लैंड ने ओपनर फिलिप सॉल्ट (22) का विकेट 10वें ओवर में गंवाया। जबकि विल जैक 10 ही रन बना पाए। लेकिन इसके बाद बेन डंकेट और कप्तान हैरी ब्रूक ने स्कोर 150 पार लगाया। डंकेट ने 62 गेंदों पर 6 चौके और 1 छक्के की मदद से 63 रन बनाए। जबकि ब्रूक 58 गेंदों पर 11 चौके और एक छक्के की मदद से 87 रन बनाने में सफल रहे। जेमी स्मिथ ने 28 गेंदों पर 39 रन बनाए। इसके बाद मध्यक्रम में लियाम लिविंगस्टोन और बीथल स्कोर को 5 विकेट के नुकसान पर 312 तक ले गए। लियाम ने 27 गेंदों पर तीन चौके और 7 छक्कों की मदद से 62 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए जंपा ने 66 रन देकर 2 विकेट लीं।

ऑस्ट्रेलिया : 126-10 (24.4 ओवर)

ऑस्ट्रेलिया ने लक्ष्य का पीछा करते हुए अच्छी शुरूआत की थी। कप्तान मिशेल मार्श और ट्रेविस हेड ने पहले विकेट के लिए 68 रन जोड़े थे। ट्रेविस 23 गेंदों पर 4 चौके और 2 छक्कों की मदद से 34 रन बनाने में सफल रहे। लेकिन इसके बाद स्टीव स्मिथ महज 5 तो जोश इंग्लिस 8, मार्नेस लबुछेन 4 रन बनाकर आऊट हो गए। कप्तान मार्श ने 34 गेंदों पर 28 रन का ही योगदान दिया। ऑस्ट्रेलिया का मध्यक्रम बुरी तरह चरमरा गया। एलेक्स कैरी 13, ग्लेन मैक्सवेल 2, सन एबॉट 10, मिचेल स्टार्क 3, एडम जंपा 0 तो हेजलवुड 0 कुछ खास नहीं कर पाए और टीम 126 रन ही बना पाई। इंग्लैंड की ओर से मैथ्यू पॉट्स 38 रन देकर 4, जोफ्रा आर्चर 33 रन देकर 2 तो ब्रायडन 36 रन देकर 3 विकेट लेने में सफल रहे।

दोनों टीमों की प्लेइंग

ऑस्ट्रेलिया -ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श (कप्तान), स्टीवन स्मिथ, जोश इंग्लिस (विकेटकीपर), मार्नस लाबुशेन, एलेक्स कैरी, ग्लेन मैक्सवेल, सीन एबॉट, मिशेल स्टार्क, एडम जम्पा, जोश हेजलवुड

इंग्लैंड - फिलिप साल्ट, बेन डकेट, विल जैक्स, हैरी ब्रूक (कप्तान), जेमी स्मिथ (विकेटकीपर), लियाम लिविंगस्टोन, जैकब बेथेल, ब्रायडन कार्स, जोफ्रा आर्चर, मैथ्यू पॉट्स, आदिल राशिद

संक्षिप्त समाचार

300 करोड़ का गबन कर वृंदावन में बाबा बन गया नटवरलाल, पुलिस ने यूं दबोचा

मुंबई/मथुरा , एजेंसी। महाराष्ट्र पुलिस की एक टीम ने मथुरा जिले के कृष्ण बलराम मंदिर के समीप वृंदावन पुलिस की मदद से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है जिसपर वहां (महाराष्ट्र में) करीब 300 करोड़ रुपये के गबन का आरोप है। स्थानीय पुलिस ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि इस व्यक्ति की पहचान महाराष्ट्र के बीड जिले के निवासी बबन विश्वनाथ शिंद के रूप में हुई है। कृष्ण बलराम मंदिर को अंग्रेजों के मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। पुलिस अधीक्षक (नगर) डॉ. अरविंद कुमार ने बताया कि महाराष्ट्र के बीड जिले के उपनिरीक्षक एसएस मोरकुटे एवं सहायक उपनिरीक्षक तुलसीराम बबन शिंदे (63) की गिरफ्तारी के लिए यहां आये थे और काफी खोजबीन के बाद वह अंग्रेजों के मंदिर के निकट साधु वेश में घूमता मिला। कुमार ने बताया कि छानबीन में जानकारी मिली कि शिंदे यहां करीब एक साल से साधु वेशभूषा में रह रहा था, जबकि महाराष्ट्र पुलिस की टीम उसे यहां मंदिरों, आश्रमों, होटल, गेस्ट हाउस आदि में तलाश रही थी। पुलिस अधीक्षक के अनुसार शिंदे भेष बदल कर रह रहा था। उन्होंने बताया कि उन्होंने मथुरा पुलिस की अपराध शाखा एवं वृन्दावन पुलिस का सहयोग लिया तो वह जल्द ही मिल गया। पुलिस अधीक्षक के अनुसार महाराष्ट्र पुलिस ने नियमानुसार उसे बृहस्पतिवार को अदालत में पेश कर उसका 'ट्रांजिट रिमांड' हासिल किया और फिर उसे वापस महाराष्ट्र ले गई। पुलिस अधिकारी ने बताया कि शिंदे पर आरोप है कि उसने महाराष्ट्र के बीड जिले की 'जिजाऊ मां साहेब मल्टी स्टेट बैंक' में जमाकर्ताओं के तीन सौ करोड़ रुपये का गबन किया और वहां से फरार हो गया। उसके बाद वह साल भर से वृन्दावन आकर साधु के वेश में रह रहा था।

पंजाब सरकार ने पांच पूर्व मंत्रियों को जारी किया नोटिस, सरकारी कोठी खाली करने के दिए आदेश

चंडीगढ़ , एजेंसी। पंजाब सरकार ने पांच पूर्व मंत्रियों को सरकारी कोठी खाली करने के लिए नोटिस जारी किया है। इसमें बलकार सिंह, अनमोल गगन मान और जिम्पा सहित उन मंत्रियों के नाम शामिल हैं, जिन्होंने हाल ही में अपने पद से इस्तीफा दिया था। इन मंत्रियों को निर्देश किया गया है कि वह 15 दिनों के भीतर अपनी सरकारी कोठी खाली कर दें। सरकार की ओर से जारी नोटिस में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इन कोठियों को तत्काल प्रभाव से खाली किया जाए, ताकि नए मंत्रियों को आवास प्रदान किया जा सके। पूर्व मंत्री गुरमीत सिंह मीत हेयर, चेतन सिंह जौड़ामाजरा, बलकार सिंह, ब्रह्म शंकर जिम्पा और अनमोल गगन मान को सरकारी कोठी खाली करने के लिए कहा गया है। नियमों का हवाला दे लिखा गया है- नियमों के मुताबिक, किसी भी कैबिनेट मंत्री द्वारा पद से हटने के बाद सरकारी रिहायश में अधिक से अधिक 15 दिनों तक रिटेन किया जा सकता है इसलिए आप आवास खाली कर लोक निर्माण विभाग को सौंप दें, ताकि नवनियुक्त मंत्रियों को आवास आवंटित किए जा सकें। बता दें कि पंजाब सरकार के मंत्रिमंडल में 5 नए चेहरों को शामिल किया गया है। पंजाब सरकार में तरुण प्रीत सिंह, बरिंदर गोयल, हरदीप मुंडिया, डॉ. रवजोत सिंह और मोहिंदर भगत मंत्री बने हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने मंगलवार को सभी नए मंत्रियों से मुलाकात की थी। इस दौरान उनसे उनके विभागों की कार्यशैली पर भी चर्चा की गई थी। सरकार की ओर से लोकसभा चुनाव में खराब प्रदर्शन को देखते हुए कैबिनेट में बदलाव किया गया था। बता दें कि लोकसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी पंजाब की 13 में से सिर्फ 3 सीट पर जीत दर्ज कर पाई थी। अफवाह है कि इस कारण से ही मान सरकार के कैबिनेट में यह बदलाव किया गया।

संजौली मस्जिद विवाद के बीच अमन की अपील, शिमला में शांति मार्च; एकता बनाए रखने की शपथ

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के उपनगर संजौली स्थित मस्जिद में अवैध निर्माण को लेकर हो रहे विरोध प्रदर्शनों के बीच शुक्रवार को शिमला की सड़कों पर शांति मार्च निकाला गया। साम्प्रदायिक सौहार्द्र बनाए रखने के लिए शिमला फॉर पीस एंड हारमनी के बैनर तले सद्भावना मार्च निकाला गया। सद्भावना मार्च में सेवानिवृत्त आईएएस व प्रोफेसर, मुस्लिम समुदाय, कॉलेज व विश्वविद्यालय के छात्रों ने भी हिस्सा लिया। अलग-अलग संगठनों से जुड़े लोग सुबह 11 बजे उपायुक्त दफ्तर के बाहर जुटे और शेरे पंजाब से लोअर बाजार व नाज होते हुए मार्च निकला। इस दौरान शांति व अमन चैन का संदेश दिया गया। मार्च में जुटे लोगों ने अपने हाथों में कई बैनर लिए हुए थे। अलग-अलग तरह के बैनरों में लिखा था अनेकता में एकता, स्नेह और ज्ञान समरसता का प्रतीक,

सभी समुदायों को स्वतंत्रता से जीने का अधिकार, सम्प्रदायिकता मानवता की दुश्मन, प्रदेश व शिमला में शांति व आपसी सौहार्द कायम रखें। सद्भावना रैली में शामिल लोग रिज मैदान पर स्थापित महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास पहुंचे और यहां सांप्रदायिक सौहार्द, अमन-शांति व भाईचारे, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने की शपथ ली गई। सद्भावना मार्च में सीटू के प्रदेशाध्यक्ष विजेंद्र मेहरा, पूर्व महापौर संजय चौहान, माकपा के पूर्व में विधायक रहे राकेश सिंघा, आप नेता राकेश अजटा, सेवानिवृत्त आईएएस दीपक शानन, अजय शर्मा समेत सैकड़ों लोग मौजूद रहे। शिमला नगर निगम के पूर्व महापौर संजय चौहान ने सद्भावना मार्च के दौरान मीडिया से बातचीत में कहा कि शिमला में लंबे समय से सभी धर्मों के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। अब विवाद को लेकर माहौल खराब करने की कोशिश की जा रही है। शिमला में ऐसे हालात पैदा करने की कोशिश की गई, जिसे यहां का आम शहरी कभी समर्थन नहीं करता है। उन्होंने कहा कि 175 साल पुराने शिमला नगर निगम में कभी भी साम्प्रदायिक, जातीय तौर पर ऐसा उपद्रव नहीं हुआ है। शिमला में ये भाईचारा कायम रखने के लिए आज सद्भावना मार्च निकाला गया है। इसमें हर वर्ग ने अपनी भागीदारी दी है। उन्होंने इस मार्च के माध्यम से जनता से अपील की है कि आपसी सौहार्द व भाईचारे को बनाए रखें। शिमला एक ऐतिहासिक और शांत शहर है। विश्व में पर्यटन की दृष्टि से इसका महत्व है। यहां हर साल लाखों की तादाद में पर्यटक आते हैं और वो हमारे कारोबार का एक हिस्सा भी है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग इस शहर का माहौल खराब करने की कोशिश कर रहे हैं। कुतुब मस्जिद के अध्यक्ष मोहम्मद पीरू ने कहा कि वह पिछले 25 वर्षों से यहां शिमला में रह रहे हैं। यहां पर आज तक कभी इस तरह का माहौल पैदा नहीं हुआ। सरकार और प्रशासन बाहर से आने वाले सभी लोगों की वेरिफिकेशन करे ताकि यहां पर माहौल खराब ना हो। देवभूमि संघर्ष समिति ने शिमला में निकाले गए शांति व सद्भावना मार्च पर सवाल उठाए हैं। संघर्ष समिति ने एक पोस्ट जारी कर कहा है कि जब ऊना में नाबालिग प्रार्ची राणा का गला रेतकर उसकी हत्या की गई थी, तब ये सद्भावना कहां थी? इसी तरह मनोहर हत्याकांड, राजस्थान के उदयपुर में कन्हैया लाल हत्याकांड व दलित स्कूली छात्र की चाकू मार कर हत्या कर देने वाले मामलों के समय सद्भावना रैली क्यों नहीं की गई?

गैर मर्द से अवैध संबंध के शक में बुजुर्ग ने की पत्नी की हत्या

ग्रेटर नोएडा एजेंसी। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के खेड़ा चौगानपुर गांव में किराये के मकान में रहने वाले बुजुर्ग ने शुक्रवार शाम अवैध संबंध के शक में लोहे की रॉड से हमला कर अपनी पत्नी की हत्या कर दी। उसने महिला के सिर पर वार किया था। घटना के बाद आरोपी पति फरार हो गया। पुलिस का कहना है कि आरोपी को गिरफ्तार कर हत्याकांड का खुलासा किया जाएगा।

सेक्टर ईकोटेक-3 पुलिस के मुताबिक, मूलरूप से लखीमपुर खीरी के मैगलगंज का रहने वाला पुतान सिंह खेड़ा चौगानपुर गांव में एक मकान में किराये पर परिवार के साथ रह रहा था। पुतान सिंह का शुक्रवार की शाम अपनी पत्नी रजनी से झगड़ा हुआ। रखी लोहे की रॉड से पत्नी के सिर पर हमला कर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद आरोपी फरार हो गया। मकान मालिक ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में ले लिया। पुलिस ने इस मामले में आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

ओडिशा का सीएम बनने से कुछ दिन पहले इंस्पेक्टर ने मुझे थाने से बाहर निकाल दिया था: मोहन माझी

भुवनेश्वर, एजेंसी। विधानसभा चुनाव में बहुमत हासिल करने के बाद जब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने ओडिशा के मुख्यमंत्री के लिए मोहन चरण माझी के नाम का ऐलान किया तो लोग चौंक गए। सीएम बनने से महज कुछ दिन पहले माझी को एक पुलिस स्टेशन से बाहर जाने के लिए कह दिया गया था। सीएम ने खुद इसका खुलासा करते हुए कहा है कि वे अपने निर्वाचन क्षेत्र की कुछ समस्याओं पर चर्चा करने के लिए पुलिस स्टेशन गए थे।

भुवनेश्वर में लोक सेवा भवन के कन्वेंशन सेंटर में जिला कलेक्टरों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए माझी ने अधिकारियों से जनप्रतिनिधियों को उचित सम्मान देने के लिए कहा। उन्होंने 2024 के विधानसभा चुनावों से ठीक पहले अपने निर्वाचन क्षेत्र क्योंझर में एनएच20 पर आयोजित कुछ विरोध प्रदर्शनों और सड़क अवरोधों की कुछ घटनाओं का उदाहरण दिया।

क्योंझर से चार बार विधायक रह चुके माझी ने कहा, जब मैं समस्या को सुलझाने और सड़क अवरोध हटाने के लिए पुलिस स्टेशन पहुंचा तो इंस्पेक्टर मुझ पर भड़क गया और मुझे बाहर जाने के लिए कहा। किसने अधिकारियों पर एक मौजूदा विधायक को बाहर जाने के लिए कहने का दबाव बनाया। उन्होंने दावा किया कि अपमान के कारण उन्होंने पुलिस स्टेशन के बाहर धरना दिया। सीएम ने कहा, भगवान जगन्नाथ के आशीर्वाद से मैं एक महीने बाद सीएम बन गया। आप इंस्पेक्टर की स्थिति की कल्पना कर सकते हैं। लेकिन मैंने उसे माफ कर दिया, क्योंकि मुझे लगा कि उसने दबाव में काम किया है। उन्होंने कहा कि जब भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ओडिशा की बीजू जनता दल-भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) गठबंधन सरकार में मंत्री थीं तब एक केंद्रीय कैबिनेट मंत्री के साथ क्योंझर आई थीं। ओडिशा के मयूरभंज जिले के उपरबेड़ा गांव की आदिवासी नेता मुर्मू 2000 से 2004 तक नवीन पटनायक के नेतृत्व वाली बीजद-भाजपा सरकार में मंत्री रही थीं। उन्होंने सबसे पहले 6 मार्च 2000 से 6 अगस्त 2002 तक वाणिज्य और परिवहन के लिए स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया और 6 अगस्त 2002 से 16 मई 2004 तक मत्स्य पालन और पशु संसाधन विकास मंत्री रहीं। माझी ने कहा, जब तत्कालीन जिला कलेक्टर वहां पहुंचे तो उन्होंने केवल केंद्रीय मंत्रिमंडल का अभिवादन किया।

मंदिरों के लिए कानून लाएंगे चंद्रबाबू नायडू; जगन मोहन रेड्डी के धर्म पर उठाए सवाल

अमरावती, एजेंसी। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने वाईएसआर कांग्रेस के अध्यक्ष जगन मोहन रेड्डी पर पलटवार करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने तिरुमाला की उनकी यात्रा में बाधा नहीं डाली। नायडू ने कहा, वे झूठ फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि जगन को मंदिर की यात्रा रोकने के लिए कोई नोटिस नहीं दिया गया। उन्होंने कहा, क्या किसी ने आपको जाने से रोका? अगर आपके पास कोई नोटिस है तो उसे मीडिया को दिखाएं। आप झूठ क्यों फैला रहे हैं। इसके अलावा, नायडू ने जगन से उनके धर्म को लेकर भी सवाल पूछा। साथ ही उन्होंने कहा कि जिस तरह से मस्जिदों के प्रमुख उसी धर्म के होते हैं वैसे ही हिंदू मंदिरों के प्रमुख भी हिंदू धर्म से होंगे और इसको लेकर कानून लाने की तैयारी है।

दरअसल आंध्र प्रदेश के विपक्षी दल युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के प्रमुख वाई एस जगन मोहन रेड्डी ने तिरुपति भगवान वेंकेटेश्वर मंदिर का अपना निर्धारित दौरा रद्द कर दिया है। चर्चा का विषय बन चुके उनके इस दौरे की घोषणा उनकी पार्टी द्वारा आहूत राज्यव्यापी मंदिर प्रार्थना अनुष्ठान के तहत की गयी थी ताकि तिरुपति लड्डुओं के संबंध में आरोप लगाकर मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू

नायडू ने कथित रूप से जो ''पाप'' किया, उसका प्रायश्चित किया जा सके।

इस विवाद की जड़ में वह आरोप है जिसमें कहा गया है कि प्रसादम के तौर पर दिए जाने वाले लड्डुओं की तैयारी में कथित रूप से पशु चर्बी का इस्तेमाल किया गया है। शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, रेड्डी ने मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू पर आरोप लगाया कि वह और उनकी तेलुगू देशम पार्टी हिंदू धर्म का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि भाजपा नायडू का समर्थन कर रही है, बजाय इसके कि उसे गंदी राजनीति करने से रोके।

दूसरी ओर, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने जगन मोहन रेड्डी पर हमला बोलते हुए उन पर अपने धर्म का खुलासा न करने का आरोप लगाया। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री नायडू ने कहा कि जो भी व्यक्ति मंदिर जाना चाहता है, उसे वहां की परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वाईएसआरसीपी प्रमुख जगन मोहन रेड्डी तिरुमला जाने से क्यों बच रहे हैं, मैं इसकी वजह नहीं जानता।

अमरावती में नायडू ने कहा, वह (जगन मोहन रेड्डी) तिरुमला जाकर भगवान बालाजी की पूजा करने से बचते हैं क्योंकि वह अपने धर्म-संबंधी घोषणा पत्र देने में रुचि नहीं रखते। मैंने कहा है कि हम एक ऐसा कानून लाएंगे जिसमें मंदिरों के प्रमुख उसी धर्म के होने चाहिए, जैसे चर्च और मस्जिदों के होते हैं। हमने कभी किसी दलित को मंदिरों में प्रवेश करने से नहीं रोका और न ही ऐसे बयान दिए। मुझे बहुत दुख है कि प्रसादम की तैयारी में 4 टैंकर मिलावटी घी का इस्तेमाल हुआ। टीटीडी में पहले कभी मिलावट परीक्षण नहीं हुए थे, लेकिन हमने विश्वस्तरीय परीक्षण उपकरण प्रयोगशालाओं की शुरुआत की है और देशभर के विशेषज्ञों से सलाह करेंगे। टीटीडी की पवित्रता हमारी प्राथमिकता है। मैं किसी को भी बख्शूंगा नहीं जो मंदिरों की परंपराओं और भावनाओं को ठेस पहुंचाएगा।

जगन मोहन रेड्डी का यह दौरा आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के घटक दलों की इस मांग के बीच रद्द किया गया है।

बांग्लादेश में हिंदू नहीं मना पाएंगे दुर्गा पूजा? कट्टरपंथियों से मिल रही धमकी

ढाका , एजेंसी। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय को कट्टरपंथी समूहों द्वारा बार-बार बाधा डालने के कारण कुछ स्थानों पर दुर्गा पूजा उत्सव का आयोजन स्थल बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा है। पुलिस ने कहा कि बांग्लादेश के 32,666 मंडपों में उत्सव मनाया जाएगा।

हालांकि, अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय द्वारा दुर्गा पूजा उत्सव मनाने को लेकर कोई समस्या नहीं है। लेकिन, राजधानी ढाका का उत्तरा उपनगर उन कुछ स्थानों में से एक है, जहां बाधा डालने की खबरें आई हैं। एक सप्ताह पहले कट्टरपंथी इस्लामी समूहों ने यह कहते हुए उत्तरा के सेक्टर 11, 13 सहित कुछ स्थानों पर मानव श्रृंखलाएं बनाईं कि स्थानीय लोग दुर्गा पूजा के खिलाफ हैं। जब इलाके में तनाव बढ़ा तो सेना और पुलिस ने हिंदू

और मुस्लिम समुदायों के स्थानीय नेताओं के साथ बैठक की।पिछले साल हिंदू समुदाय ने उत्तरा के सेक्टर 11 के एक मैदान में दुर्गा पूजा की थी। लेकिन इस बार पास की मस्जिद जाने वाले लोगों और मदरसों के छात्रों ने पूजा रोकने के लिए वहां मानव श्रृंखला बनाई। बाद में जब हिंदू समुदाय ने सेक्टर 13 में दुर्गा पूजा का आयोजन करना चाहा तो वहां भी बाधा उत्पन्न की गई।

डोनाल्ड ट्रंप से मिले यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की, रूस के साथ युद्ध रोकने पर हुई चर्चा

वाशिंगटन , एजेंसी। इन दिनों अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव चल रहा है और उम्मीदवार अपनी जीत के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। इस दौरान यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति और रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात की। जेलेंस्की ने ट्रंप के साथ अपनी मुलाकात को काफी सार्थक बताया और बोले कि दोनों नेताओं ने रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध को रोकने को लेकर चर्चा हुई।

जेलेंस्की ने एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए लिखा कि डोनाल्ड ट्रंप के साथ मेरी बहुत ही सार्थक बैठक हुई। मैंने उन्हें हमारी विजय योजनाओं के बारे में बताया और हमने यूक्रेन की स्थिति और हमारे लोगों के लिए युद्ध के परिणामों की गहन समीक्षा की। उन्होंने कहा कि मैं इस मुलाकात के लिए आभारी हूं। एक न्यायसंगत शांति की जरूरत है। आगे जेलेंस्की ने कहा कि हमारा साझा विचार है कि यूक्रेन में युद्ध रोका जाना चाहिए। पुतिन जीत नहीं सकते। यूक्रेनियों को जीतना ही होगा। गौरतलब है कि यूक्रेन पर ट्रंप का

रुख कुछ हद तक विवादास्पद रहा है, उन्होंने पहले यूक्रेन को अमेरिकी सहायता की आलोचना की थी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की प्रशंसा की थी। इसके विपरीत, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने यूक्रेन को युद्ध जीतने में मदद करने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने का वादा करते हुए यूक्रेन के लिए अमेरिकी समर्थन की पुष्टि की है। हाल ही में, अमेरिका ने यूक्रेन के लिए हथियारों के एक नए पैकेज और लगभग आठ बिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता की घोषणा की।

यूएन में नेतन्याहू बोले- ईरान-इराक मिडिल ईस्ट के लिए श्राप:2 नक्शे दिखाए

जैसे ही बोलना शुरू किया असेंबली छोड़कर चले गए नेता

न्यूयॉर्क, एजेंसी। इजराइल और लेबनान में जारी टकराव के बीच इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शुक्रवार को यूएन की महासभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि वे इस बार यूएनजीए में भाषण नहीं देना चाहते थे, लेकिन इजराइल को लेकर फैलाए जा रहे झूठ ने उन्हें अपने देश का पक्ष रखने पर मजबूर कर दिया।

नेतन्याहू का भाषण शुरू होते ही कई देशों के प्रतिनिधि यूएन असेंबली से उठकर चले गए। नेतन्याहू ने कहा, मैंने पिछले बार एक मैप दिखाया था, जिसमें इजराइल और उसके साथी अरब देश एशिया को यूरोप से जोड़ रहे थे, हिंद महासागर को भूमध्य सागर से जोड़ रहे थे।

नेतन्याहू ने कहा, आज एक और नक्शा दिखा रहा हूं, यह आतंक का नक्शा है। इजराइली प्रधानमंत्री ने इस नक्शे में ईरान, इराक, सीरिया और यमन को दिखाया। इन देशों को काले रंगों में रंग कर श्राप बताया गया था। नेतन्याहू ने दोनों नक्शों का हाथ में उठाकर कहा, एक तरफ भविष्य की उम्मीद है तो दूसरी तरफ भविष्य का अंधकार।

लादेन के बाद हिजबुल्लाह ने मारे सबसे ज्यादा अमेरिकी नागरिक इजराइली पीएम ने कहा, इजराइल शांति चाहता है। हम शांति लाए हैं और आगे भी लाते रहेंगे। मैंने पिछले साल जब इस असेंबली को संबोधित किया था तब हम सउदी अरब के साथ ऐतिहासिक डील करने वाले थे, लेकिन हमास ने हमला कर इस डील को रुकवा दिया।

नेतन्याहू ने कहा, मैं इजराइल का क्रूरहोने के नाते यह समझौता करके रहूंगा। दोनों देशों के बीच पीस डील पूरे मिडिल ईस्ट की काया पलट देगी। ईरान ऐसा होने से रोक रहा है। लादेन के हमले के बाद हिजबुल्लाह ने अमेरिका और फ्रांस के सबसे ज्यादा

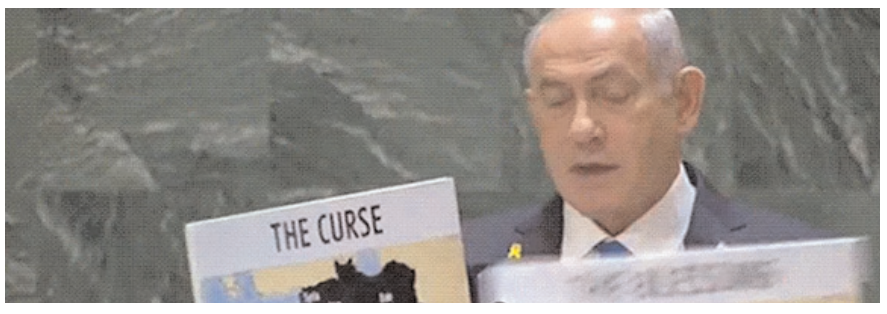

नागरिकों को मारा है। मैं तेहरान के तानाशाहों से कहूंगा- अगर तुमने हम पर हमले किए तो हम पलटवार जरूरी करेंगे। जंग के बाद हम गाजा को हमास के हवाले नहीं करेंगे। नहीं तो यह ऐसा होगा कि सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद नाजियों को राज करने दिया होता। हम एक और 7 अक्टूबर नहीं होने दे सकते। हमने हमास की 24 बटालियन में से 23 बटालियन को मिटा दिया है। हमास के लोगों ने बच्चों को जिंदा जलाया, महिलाओं से रेप किया। लोगों का सिर काट दिया, परिवारों को मार डाला। हमास 250 लोगों को बंधक बना ले गया। हिजबुल्लाह स्कूल, अस्पतालों, रसोई घरों से हम पर रॉकेट दागता है। हमने हिजबुल्लाह के रॉकेट्स को तबाह किया है जो उसने ईरान की मदद से बनाए थे।

नेपाल में भारी बारिश से उफान पर नदियां

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में लगातार बारिश हो रही है। इससे आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है। वहीं नदियां भी उफान पर हैं। यहां के बाढ़ पूर्वानुमान विभाग ने देश के विभिन्न भागों के लिए बाढ़ की चेतावनी जारी की है। भारी बारिश के बाद विभिन्न नदियों का जलस्तर बढ़ता रहेगा तथा लोगों से सावधानी बरतने को कहा है।

बाढ़ पूर्वानुमान विभाग का कहना है कि मुख्य प्रभावित क्षेत्रों में अरुण बेसिन (संखुवासभा जिला) से बाणगंगा (कपिलवस्तु जिला) तक नदियां उभान पर रहेंगी। इनके अलावा, दूधकोशी, सनकोशी, बागमती, नारायणी, टीनाऊ और उनकी सहायक नदियां का जलस्तर भी बढ़ता रहेगा। मूसलाधार बारिश के कारण नेपाल में सड़कें और घर बुरी तरह जलमग्न हो गए। अरुण बेसिन से लेकर बाणगंगा बेसिन तक की नदियों के लिए अगले 24 घंटों के लिए बाढ़ की महत्वपूर्ण चेतावनी जारी की गई है। क्षेत्र में निगरानी की जाने वाली लगभग सभी नदियां चेतावनी के स्तर को पार कर गई हैं, जिनमें से कई गंभीर खतरे के स्तर के करीब पहुंच गई हैं। विभाग ने बताया कि सनकोशी और बागमती नदियां पहले से ही खतरे के निशान से ऊपर हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129